अरबी काव्य-दर्शन ।

अरबी साहित्यका संक्षिप्त इतिहास, परिचय और अरबी कवियोंकी उत्कृष्ट रचनाओंका अनोखा संग्रह ।

लेखक—

श्रीयुत बाबू महेशप्रसाद साधु,
मौलवी आलिम और फ़ाज़िल ।
(काशी हिन्दू-विश्वविद्यालयके अध्यापक ।)

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

आषाढ़, १९७८ वि० ।
जुलाई, १९२१ ई० ।

प्रथमावृत्ति] [मूल्य १।)

जिल्दसहितका १॥)

विषय-सूची।

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

पृष्ठसंख्या

कालिदास और भवभूति।

अनु०—पं० रूपनारायण पाण्डेय।

इस ग्रन्थके मूल लेखक स्व० द्विजेन्द्रलाल राय हैं। इसको पढ़कर पाठक समझेंगे कि वे केवल कवि और नाटककार ही नहीं थे किन्तु एक मार्मिक और तलस्पर्शी समालोचक भी थे। महाकवि कालिदासके अभिज्ञान-शाकुन्तल और महाकवि भवभूतिके उत्तर-रामचरितकी ऐसी गुणदोषविवेचिनी, मर्मस्पर्शिनी और तुलनात्मक समालोचना अब तक शायद ही किसी भारतीय विद्वानके द्वारा लिखी गई होगी। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि द्विजेन्द्रबाबू इन नाटकोंकी समालोचना लिखनेके बहुत बड़े अधिकारी थे। क्यों कि वे सर्वश्रेष्ठ कवि और नाटककार थे। इसमें संस्कृतके उक्त दोनों नाटकोंके कथाभागकी, उनके प्रत्येक पात्रकी, उनके नाटकत्व, कवित्व, भाषा-रचना आदिकी खूब ही विस्तृत समालोचना की गई है और उसमें इस विषय-सम्बन्धी इतना ज्ञान भर दिया है कि वह प्रत्येक कवि और नाटक-लेखकके लिए अतीव उपयोगी है। संस्कृतके विद्यार्थियोंके लिए तो यह बड़े ही कामकी चीज है। इसे पढ़ कर वे नाटक-साहित्यके मार्मिक विद्वान हो सकते हैं। संस्कृतकी उच्च परीक्षाओंमें यदि यह भरती किया जाय, तो बड़ा लाभ हो। इससे संस्कृतके विद्वानोंमें गुणदोष-विवेचिनी शक्तिका जागरण होगा।

आयुर्वेदाचार्य और सुकवि पं० चतुरसेन शास्त्रीने इस ग्रन्थकी विस्तृत भूमिका लिखी है जिसे पढ़नेसे इस ग्रन्थका महत्त्व और भी स्पष्ट हो जाता है। मूल्य १॥), सजिल्दका २)

साहित्य-मीमांसा।

अनु०—पं० रामदहिन मिश्र, काव्यतीर्थ।

श्रीयुत पूर्णचन्द्र वसुके अपूर्व बंगला ग्रन्थका अनुवाद। यह भी एक समालोचनात्मक ग्रन्थ है। इसमें पूर्वीय और पश्चिमी साहित्यकी, अर्थात् वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति और होमर, शेक्सपीयर, वर्डस्वर्थ, शीलर आदिके काव्य-नाटकोंकी तुलनात्मक आलोचना करके आर्य साहित्यकी महत्ता, मार्मि-

कता और अनुकरणीयता प्रतिपादन की गई है। इसमें १ साहित्यका आदर्श, २ साहित्यमें रक्तपात (ट्रेजेडी), ३ साहित्यमें प्रेम, ४-५ साहित्यमें पशुत्व और मनुष्यत्व, ६ साहित्यमें वीरत्व और ७ साहित्यमें देवत्व ये सात अध्याय हैं। इन अध्यायोंमें आर्य सभ्यता, आर्य सतीत्व, आर्य शृंगार, आर्य वीरता आर्य परिवार, आत्मोत्सर्ग, स्वार्थत्याग आदि विषयोंकी उच्छ्वसित कण्ठसे महिमा गाई गई है। पढ़ते पढ़ते हृदय स्फीत होने लगता है। प्रत्येक आर्यत्वाभिमानी साहित्यप्रेमीको यह ग्रन्थ पढ़ना चाहिए और आर्यसाहित्यके महत्त्वको हृदयंगम करना चाहिए। मूल्य १।) जिल्दसहितका १॥।)

अन्तस्तल।

लेखक—आयुर्वेदाचार्य पं० चतुरसेनशास्त्री। इसमें सुख, दुःख, स्मृति, भय, क्रोध, लोभ, निराशा, आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, अतृप्ति, आदि अनेक मानसिक भाव बड़े ही अनोखे ढंगसे चित्रित किये गये है। लेखकने मानों मनुष्यके भीतरके–अन्तस्तलके–भावोंको बाहर निकाल कर रख दिया है। भाषा बड़ी ही चुटीली और जानदार है। पढ़ते समय गद्य काव्यका आनन्द आता है। हिन्दीमें इस ढंगकी यह सबसे पहली पुस्तक है। मूल्य लगभग ॥≈)

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज।

हिन्दीकी यह सबसे पहली और सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थमाला है। प्रायः सभी साहित्यसेवियोंने इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की गई है। इसमें प्रतिवर्ष ५-६ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ निकलते है। अब तक इस तरहके ४८ ग्रन्थ निकल चुके है और बराबर निकलते जा रहे हैं। छपाई सुन्दर होती है और कागज बढ़िया लगाया जाता है। कोई भी पुस्तकालय इस ग्रन्थमालासे खाली न रहना चाहिए। इसके स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते है। स्थायी ग्राहकोंके नियम और ग्रन्थोंका सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

मैनेजर, **हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,**
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

विषय-प्रवेश ।

—⊱✧⊰—

प्राय: नौ वर्ष हुए, मुझे पहले पहल अरबी कविताके पढ़नेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके बाद फिर मेरी प्रवृत्ति दैव-योगसे अरबी कविताके स्वाध्यायकी ओर बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि पिछले पाँच वर्षोंमें मुझे अरबीके उच्च कोटिके ग्रन्थोंके अवलोकन करनेका सुअवसर मिला। मैंने अरबी काव्यका अधिक स्वादिष्ट रस चखा और देखा कि लैटिन, जर्मन, फ्रेंच और अँग्रेजी आदि भाषाओंने अरबी कविताओंके अनेक अनुवादोंसे अपना अपना भाण्डार भरा है। फिर तो मैंने दृढ़ सङ्कल्प कर लिया कि एक न एक दिन हिन्दीके प्रेमियों-को भी अरबी काव्यका कुछ न कुछ स्वाद अवश्यमेव चखा-ऊँगा। सो उसीका यह फल है कि मैं आज हिन्दी-प्रेमियोंके सम्मुख यह छोटीसी पुस्तक रख रहा हूँ।

पहले मेरा विचार था कि "सबा मुअल्लक़ा" अर्थात् अर-बीकी उन सात कविताओंका अनुवाद करूँ, जो कि सर्वोत्तम समझी जानेके कारण मक्केमें काबे (मन्दिर) की दीवारपर सुवर्णाक्षरोंमें लिखकर लटकाई गई थीं। परन्तु उनके भावोंको दर्शानेके लिये अधिक व्याख्याकी आवश्यकता थी। केवल

अनुवादसे उनका मर्म भली भाँति समझना अति कठिन था। इसी लिये भिन्न भिन्न ग्रन्थोंसे अनेक विषयोंकी कविताओंका अनुवाद देना ही मैंने अधिक उचित समझा जिसमें पाठकोंको हर प्रकारकी कविताका थोड़ा थोड़ा परिचय हो सके। इस कारण, यद्यपि इस ग्रन्थकी तैय्यारीमें मुझे अरबीके अनेक काव्य-ग्रन्थोंको देखना पड़ा है और अनेक ग्रन्थोंसे भिन्न भिन्न प्रकारकी सामग्री एकत्र करना आवश्यक प्रतीत हुआ है, तथापि मैंने अधिक सामग्री ऐसे ही काव्य-ग्रन्थोंसे ली है, जिनका मान आज केवल भारतवर्षमें ही नहीं है, बल्कि अरब, मिस्र, ईरान, तुर्किस्तान और शाम आदि मुसल्मानी देशोंमें भी जिनका सबसे अधिक मान है और जिनकी प्रतिष्ठा पश्चिमके धुरन्धर प्राच्य विद्वानोंके हृदयोंमें भी घर किये हुए है।

इसके अतिरिक्त यह बात भी बतला देने योग्य है कि मैंने विशेषतः रुचिकर तथा छोटी कविताओंका ही अनुवाद दिया है, जिसमें सब लोग सुगमतासे पढ़ें और किसीका जी न उकताय। जो कविता बहुत बड़ी थी, अथवा जिसमें अधिक व्याख्याकी आवश्यकता थी, उसमेंसे केवल उतना ही भाग ले लिया है जितना कि अधिक उपयोगी और सरल समझा है। साथ ही कुछ बड़ी कविताओंका भी अनुवाद दे दिया है जिसमें लोग यह जान सकें कि अरबीमें उपमान, उपमेय आदि किस ढंगके होते हैं, तुलनाएँ इत्यादि कैसे की जाती हैं, इत्यादि, इत्यादि।

अरबी कवियोंने तुलनाओं तथा उपमाओंमें प्रायः ऊँट और खजूरसे काम लिया है। और वास्तवमें उस देशकी

अवस्थाके अनुसार ऐसा होना भी चाहिए था। परन्तु उनकी तुलनाएँ तथा उपमाएँ ऐसी सटीक और चुभती हुई होती हैं कि उनको पढ़कर विचारशील पुरुष मुक्त-कण्ठसे उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। साथ ही यह भी अच्छी तरह प्रकट है कि ऊँट अरबके मरुस्थलका जहाज है। घोड़ा भी अरब ऐसे युद्धवीरोंके लिये कुछ कम उपयोगी पशु नहीं। मेघ-के छा जाने तथा वर्षाके हो जानेसे भी अरबोंके सुखमें अपूर्व वृद्धि होती थी।

अस्तु; ऊपर कहे हुए विषयों पर अरबी कवियोंने जो विचार प्रकट किये हैं, उनकी चाशनी भी पाठकोंके चखनेके लिये थोड़ी सी रख दी गई है।

अरब लड़ाईके पुतले थे। उनका समस्त जीवन संग्राममय होता था। बड़ी वीरताके साथ मरना-मारना उनके बायें हाथ-का खेल था। इसी लिये उनकी संग्राम-सम्बन्धी कविताएँ बड़ी विलक्षण हैं। मैंने उस विषयकी भी अनेक कविताओंका अनु-वाद दिया है। परन्तु यह भी स्मरण रहे कि अरबी कवितामें केवल पुरुषोंने ही यश नहीं प्राप्त किया, बल्कि स्त्रियोंने भी पर्याप्त तथा आदरणीय कार्य्य किया है। इसलिये मैंने कई स्त्रियोंकी कविताओंका भी अनुवाद दिया है। परन्तु हिन्दी जाननेवालोंके लिये यह कठिन बात है कि वे भली भाँति जान सकें कि अमुक नाम किसी स्त्रीका है और अमुक पुरुषका। इसी लिये प्रत्येक कवित्रीके नामके बाद कोष्ठमें 'स्त्री' शब्द लिख दिया गया है। अब पाठकगण जिस कविताके अन्तमें नामके

साथ उपर्युक्त शब्द देखें, उसके विषयमें समझ लें कि यह नाम एक स्त्रीका है।

अरबी एक ऐसी अपूर्व भाषा है कि उसके अनेक शब्दों-का भाव अँग्रेजी, उर्दू तथा हिन्दी ऐसी भाषाओंमें निस्सन्देह एक बड़े वाक्यके बिना दर्शाया ही नहीं जा सकता। इसलिये अनुवादमें जितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है, उनको मैं ही जानता हूँ। इसके अतिरिक्त उच्च कोटिके ग्रन्थोंसे सीधे अनुवाद करना भी कुछ सुगम कार्य न था। जिन लोगोंने कभी ऐसा कार्य किया है, उनको इसका अच्छी तरह अनुभव होगा। इसलिये अधिक न लिखकर अनुवादके सम्बन्धमें मैं केवल यह बतला देना चाहता हूँ कि मेरा तात्पर्य इस अनुवादसे यह नहीं है कि लोग इसके द्वारा अरबीकी मूल कविताका स्वाध्याय करें। बल्कि मैंने इस बात पर लक्ष्य रखकर अनुवाद किया है कि लोग इससे अरबी कविताका कुछ रस चख सकें। इसलिये अनुवादमें दो बातों पर विशेष रूपसे दृष्टि रक्खी है। एक यह कि अरबीका मर्म न जाय। दूसरे यह कि हिन्दी-प्रेमियोंको स्वाद अच्छा मिल सके।

अनुवादकी शुद्धताका कितना ध्यान रक्खा है, इस सम्बन्धमें मैं यह बतला देना उचित समझता हूँ कि जिन ग्रन्थों तथा कविताओंकी टीकाएँ मिल सकी हैं, उनकी अनेक टीका-टिप्पणियोंको भी ध्यान देकर देख लिया है। परन्तु फिर भी यदि कहीं तनिक भी शंका हुई है तो उसकी निवृत्ति अपने माननीय मौलाना हजरत सैय्यद मुहम्मद तलहा साहब और मौलाना हजरत नज्मउद्दीन साहब सरीखे अरबीके धुरन्धर

मौलानाओंसे कर ली है, जो कि मेरे आदरणीय उस्ताद हैं और जिनकी योग्यताके विषयमें केवल इतना ही कह देना पर्याप्त है कि दोनों माननीय मौलाना साहबान पंजाब विश्वविद्यालयके ओरिएण्टल कालिज, लाहौरमें मौलवी आलिम और मौलवी फ़ाज़िल अर्थात् अरबीकी उच्च श्रेणियोंके अध्यापक हैं।

यद्यपि मैंने अनुवादको यथाशक्ति सुगम ही रक्खा है, तथापि कहीं कहीं आवश्यकतानुसार टीका-टिप्पणी भी कर दी है जिसमें उन लोगों की जो अरबी और अरबोंसे बिलकुल अनभिज्ञ हैं, समझनेमें लेशमात्र भी कठिनता न हो। फिर भी यदि पाठक निम्नलिखित बातें ध्यानमें रक्खेंगे तो निस्सन्देह अनुवादके समझनेमें बड़ी सुगमता हो जायगी:—

(१) अरब कंजूसीको बहुत ही बुरा समझते थे।

(२) अरब एक बहुत गरम देश है। दिनके समय वहाँ यात्रा करना कठिन होता था। इसलिये लोग प्रायः रात्रिमें यात्रा करते थे। किन्तु रेतमें राह भूलना साधारणसी बात थी। ऐसे यात्रियोंकी सुगमताके लिये गृहस्थोंके यहाँ अग्नि जलाई जाती थी। परन्तु ऐसी अग्नि उसीके यहाँ जलती थी जो अतिथि-सेवी होता था। आगंतुकोंकी अच्छी तरह सेवा करना और उनको उत्तम खानपानसे सुख देना बड़ा पवित्र, महत्त्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय कार्य समझा जाता था। जो गृहस्थ ऐसे अपरिचित आगन्तुकोंकी सेवामें किसी प्रकारकी कसर करता था वह अच्छा नहीं समझा जाता था। जिसके द्वारसे आगंतुक रुष्ट होकर जाते थे वह अति निन्दनीय होता था। साथ ही इसके यह भी जान लेना चाहिए कि प्राचीन अरबमें

अकालके दिनोंमें भी जो कोई आगन्तुकोंको सुख पहुँचाता था, वह विशेष रूपसे प्रशंसाका भागी होता था ।

(३) प्राचीन अरब जब कभी अपने सहायकोंको युद्ध ठाननेकी सूचना देना चाहते थे और उनके एकत्र होनेके लिये घोषणा करना चाहते थे, तब उस अवसर पर भी किसी ऊँची जगह पर अग्नि प्रज्वलित किया करते थे । इसके अतिरिक्त कई अन्य बातोंके चिह्नस्वरूप भी अग्नि प्रज्वलित की जाती थी ।

(४) अरब लड़ाईमें मर जाना अच्छा समझते थे ।

(५) तलवारके कुन्द हो जाने अथवा उसमें दन्दाने आदि पड़ जानेका अभिप्राय यह है कि अति घोर युद्ध हुआ ।

(६) बदला लेनेमें बड़ा गौरव समझा जाता था ।

(७) अरब लूटमार करके धन प्राप्त करना अच्छा समझते थे । उनके खयालमें यह जीवनका एक अंग था । लूटमार प्रायः अन्धेरी रात अथवा प्रातःकालके समय होती थी ।

(८) दोपहरके समय यात्रा करनेवाला बड़ा साहसी समझा जाता था ।

(९) किसीसे माँगनेके बदले दुःख भोगना, यहाँ तक कि मर जाना भी वे अच्छा समझते थे ।

(१०) अरबके कवि अपनी अथवा अपने पूर्वजों आदिकी प्रशंसा करना बुरा नहीं समझते थे ।

(११) अरबीके 'उम्म' शब्द का अर्थ है 'माता' । 'इब्न'

अथवा 'बिन' का अर्थ 'पुत्र', 'बिन्त, का पुत्री' और 'बनी' अथवा 'बनू' का अभिप्राय 'समुदाय' या 'कुटुम्बी' होता है।

(१२) अरबीकी किसी मूल कविता पर उसका शीर्षक नहीं दिया था। प्रत्येक शीर्षक मेरी ओरसे लगाया हुआ है। जिसकी कविताका अनुवाद किया है उसका नाम नीचे दे दिया है।

(१३) जिस कवि अथवा कवित्रीका नाम नहीं मालूम हो सका, उसके नामके बदले "एक कवि" अथवा "एक स्त्री" आदि ऐसे शब्द रख दिये गये हैं।

(१४) कई कवियोंने अपनी पत्नीको संबोधन करके कविताएँ की हैं; और कई कवियोंने अपने आपको सम्बोधन करते हुए शिक्षाप्रद कविताएँ की हैं। और कई कवियोंने तो मध्यम पुरुषको संबोधन किया है। किन्तु उनका अभिप्राय एक प्रकारसे सार्वभौमिक ही है। परन्तु कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं जो कि विशेष घटनाओंकी सूचक हैं तथा अरबोंके आचार-विचार तथा व्यवहार आदिको भी प्रकट करती हैं।

(१५) अनेक कवियोंकी कविताओंमें यह बात भी पाई जाती है कि उन्होंने अपनी कविताओंके प्रारंभमें अपनी प्रिया अथवा किसी कपोल-कल्पित प्रियाका ध्यान रखकर श्रृङ्गार रसके कुछ पद्य अवश्य कहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इन सब बातोंपर ध्यान रखनेसे पाठकोंको ग्रन्थके अवलोकनमें तनिक भी कठिनाई न पड़ेगी। और यदि कोई कठिनाई उपस्थित भी होगी तो तनिक विचार-

से ही दूर हो जायगी । परन्तु इन बातोंके अतिरिक्त यह बतला देना भी अति आवश्यक प्रतीत होता है कि मैंने इस ग्रन्थमें एक ओर जहाँ हज़रत मुहम्मद साहबसे पहलेके अरबी पद्योंके अनुवाद दिये हैं, वहाँ दूसरी ओर नवीनसे नवीन पद्योंके भी अनुवाद देनेका भरसक प्रयत्न किया है। मैंने केवल ईस्वी बीसवीं शताब्दीके ही अरबी पद्योंके अनुवाद देनेका प्रयत्न नहीं किया, बल्कि कुछ ऐसे अरबी पद्योंके देनेमें भी कसर नहीं की जो कि सन १९२० ईस्वीमें रचे गये हैं। अर्थात् प्राचीन, अर्वाचीन और मध्य-कालीन तथा प्रत्येक समयके पद्योंका अनुवाद इस ग्रन्थमें दिया है जिसमें पाठकों-को वास्तविक रूपसे अरबी कविताका यथायोग्य परिचय हो सके ।

मैंने इस ग्रन्थको नीति, युद्ध, शृङ्गार, वैराग्य और प्रकीर्ण इन पाँच भागोंमें विभक्त किया है। अरब लड़ाईके पुतले थे और आज भी उनमें युद्ध तथा शौर्य्यका अंश है । इसी कारण मैंने युद्ध-खण्डको भी देना अधिक उचित समझा। पर सबसे पहले मैंने 'अरबी कविता' पर ऐतिहासिक रूपसे कुछ प्रकाश डाला है । उसे देखनेसे पाठकोंको 'अरबी कविता'के विषयमें कुछ ऐसी बातें मालूम हो जायँगी जो बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हैं ।

प्राचीन अरब भोग-विलासके अति प्रेमी थे—वैराग्य उनसे कोसों दूर था। तत्पश्चात् मुसल्मानी धर्म्मने भी वैराग्यकी लहर नहीं चलाई । इस प्रकार वैराग्य-सम्बन्धी पद्योंका अरबी

साहित्यमें बहुत कुछ अभाव है। तथापि जिन पद्योंमें वैराग्यकी सुगन्ध आती है उनको उस भागमें रख दिया है। इस दृष्टिसे आशा की जाती है कि पाठक इस त्रुटिपर ध्यान न देंगे। वैराग्यके सिवा अन्य विषयोंकी सामग्री अरबी-काव्य-सागरमें पर्याप्त है। उसीमेंसे अनेक विषयोंकी कुछ बातें पाठकोंकी भेंट की जा रही हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि मेरी इतनी ही सामग्रीसे पाठकोंको अरबी कविताका थोड़ासा आवश्यक परिचय भली भाँति मिल जायगा। निदान मेरी इतनी सामग्री हिन्दी संसारके निमित्त कितनी उपयोगी तथा पर्याप्त होगी, मैं इस विषयमें कुछ नहीं कह सकता। पर मैं यह जरूर कहूँगा कि जो कुछ मैं हिन्दी पाठकोंके सन्मुख रख रहा हूँ वह अरबी कविता-भाण्डारका देखते हुए यथेष्ट नहीं है; क्योंकि अरबी-कविता-भाण्डारसे लेकर अभी और भी बहुतसी बातें हिन्दीमें दी जा सकती हैं और भिन्न भिन्न बातोंको सन्मुख रखकर बहुत कुछ हिन्दी पाठकोंकी भेंट किया जा सकता है। पर यह सब कुछ उसी समय हो सकता है जब कि विशेष रूपसे कठिन परिश्रमके साथ निरंतर कुछ उद्योग किया जाय।

अब अपने वक्तव्यको समाप्त करनेसे पहले मैं, यदि श्रीयुक्त ब्रजलालजी शास्त्री, एम. ए. एम. ओ. एल. को विशेष रूपसे धन्यवाद न दूँ तो एक प्रकारसे कृतघ्नताका भागी होऊँगा; क्योंकि आपकी ही उत्तेजनासे मैं अरबी कविताओंका अनुवाद बड़े साहसके साथ कर सका हूँ। और वास्तवमें आपकी ही शुभ सम्मतिसे ग्रन्थको उपयोगी बनानेमें बहुत कुछ सहायता मिली है। साथही साथ पंडित श्रीरामचन्द्रजी शास्त्री 'कुशल',

श्री महाशय दयालजी भीमभाई देसाई एम० ए० तथा श्रीमान् सन्तराम जी बी० ए०का भी मैं कृतज्ञ हूँ । इनके अतिरिक्त मैं श्रीस्वामी वेदानन्द तीर्थजी मीमांसक चक्रवर्तीको विशेष रूपसे धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता क्योंकि आपने कृपापूर्वक ग्रन्थका केवल अवलोकन ही नहीं किया, बल्कि यथास्थान संस्कृतके श्लोक आदि देनेमें भी बड़ी सहायता की है ।

अनुवादक तथा सम्पादक ।

अरबी कविता।

यदि कोई मुझसे पूछे कि प्राचीन अरब क्या था, तो मैं यही कहूँगा कि लड़ाईका केन्द्र था। क्योंकि तुच्छसे तुच्छ बातों पर भी अरबोंका लड़ाईके लिये कटिबद्ध हो जाना एक साधारणसा कार्य्य था। सहस्रों मनुष्योंका तलवारके घाट उतर जाना एक छोटीसी बात थी। वर्षों लड़ते रहना मानों उनमें एक प्राकृतिक गुण था; यहाँतक कि अपने सम्बन्धियोंको भी तलवारों और भालोंसे साफ कर देना उनके स्वभावका एक अंग था। अपमानकी जो मर्य्यादा (Standard) उनकी दृष्टिमें थी, उसकी परिभाषा यदि असम्भव नहीं तो दुस्तर अवश्य है। उनकी प्रत्येक लड़ाई तथा उत्तेजित करनेवाली या लड़ मरनेवाली बातमें निस्सन्देह एक न एक विलक्षणता या चमत्कार है। परन्तु जिस वस्तुने मित्रों और शत्रुओंके एक साथ बैठनेका बीज बोया, आगे पीछे बैठनेका भेद-भाव मिटाया, किसीकी बातको कान देकर सुनने सुनानेके लिये बाध्य किया, वह अरबी कविता ही थी।

यह बात प्रायः सभी लोग निर्विवाद रूपसे जानते और मानते हैं कि प्रत्येक भाषामें कविता बड़ी ही मनोरञ्जक होती है। हर एक भाषामें कविताको उच्च पद प्राप्त है। संस्कृतमें कविताको जो महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त हो चुका है, वह अकथ-

नीय है। किन्तु अरबीमें भी कविताका जितना आदर किया गया है और कवितासे जितना काम लिया गया है वह भी कुछ कम प्रशंसनीय नहीं है। कविताकी ही बदौलत लोग अरबका इतिहास जाननेमें समर्थ हुए हैं। यदि प्राचीन अरबमें कविताका प्रचार न होता तो लोग अरबका बहुत कुछ इतिहास जान ही न सकते। इसके अतिरिक्त एक विद्वान्का यह भी मत है कि यूरोपियन भाषाओंके छन्दः शास्त्रकी रचना अरबी कविताके ही आधार पर हुई है।

कविताकी उत्पत्ति।

अरबी कविताकी उत्पत्ति कब और क्योंकर हुई थी, इस विषयमें अनेक लेखकोंके अनेक मत हैं जिनका सारांश इस प्रकार है:—केवल अरबी कविताकी ही नहीं, बल्कि समस्त संसारमें कविता मात्रकी उत्पत्ति बाबा (हजरत) आदम द्वारा हुई है जो कि सृष्टिके आदि मनुष्य थे। उन्होंने ही पहले अपने पुत्र हाबीलके शोकमें विलापमय पद्य कहे थे। उनका कथन सृष्टिकी एक प्राचीन भाषा सुर्यानीमें था। परन्तु एक लेखकका मत है कि बाबा आदमका कथन गद्यमें था। तत्पश्चात् जब उस सुर्यानी गद्यका अनुवाद अरबीमें साधारण रीति पर किया गया तो वह कविता रूपमें पाया गया; और उसी समयसे अरबी कविताकी नींव पड़ी। कविताकी उत्पत्ति चाहे जिसके द्वारा हुई हो, परन्तु पहले कविता वास्तवमें किसी नियमबद्ध शैली पर नहीं होती थी। उसमें और प्रचलित कविताके ढंगमें बड़ा अन्तर था। फिर बादको जिसने संशोधन करके कवितामें एक नया चमत्कार

उत्पन्न किया वह अरबके एक बड़े सरदार कुलैबका भाई था। उसका नाम अदी था। वह रबीआका पुत्र था। परन्तु उसने कवितामें चमत्कार उत्पन्न किया था, इसलिये वह प्रायः मुहलाहिलके नामसे विख्यात है। इस कविका जन्म हजरत मुहम्मद साहबके जन्मसे लगभग एक सौ वर्ष पहले हुआ था।

प्राचीन कालमें कविता।

वास्तविक अर्थात् प्रचलित अरबी कविताके जन्म-कालका जो पता चलता है वह हजरत मसीहसे ४८० वर्ष बाद अर्थात् हजरत मुहम्मदके जन्मसे लगभग १०० वर्ष पहले ठहरता है। अपने जन्म-कालसे लेकर हजरत मुहम्मदके समय तककी कविता अरबी साहित्य संसारमें सबसे उच्च कोटिकी कविता थी। आज भी उसी कालकी कविता प्रामाणिक रूपमें पेश की जाती है और उसका लोहा आज भी अरबीके बड़े बड़े विद्वान् मानते हैं। इसके सिवा यह भी एक महत्त्वपूर्ण बात है कि हजरत मुहम्मद साहबसे पहलेका समय 'अज्ञानताका समय' कहा जाता है। परन्तु उस कालके कई कवियोंने काव्यमें ज्ञानयुक्त बातोंको भी दर्शाया है। पर यह बात अवश्यमेव स्पष्ट है कि प्राचीन कविताओंमें किसी अद्भुत चीजका वर्णन नहीं है; किन्तु अरबके घोड़ों, ऊँटों और टीलों आदिके विषयमें भी जो कुछ कहा गया है, उसमें भी चित्ताकर्षणकी जबरदस्त शक्ति है। इसके अतिरिक्त प्राचीन कवियोंका बहुत कुछ महत्त्व इस बातसे भी जाना जा सकता है कि उस कालमें अनेक कवि ऐसे भी हुए

हैं जिन्होंने समय पड़ने पर तुरन्त बिना सोचे विचारे बड़ी अपूर्व कविताएँ की हैं। इन सब बातोंसे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन अरबमें कविताका प्रबल संस्कार स्वाभाविक ही था। इसी कारण कवि लोग अलँकृत कविताके द्वारा लोगोंको जिधर चाहते थे, उधर ही फेर देते थे। यहाँ तक कि यदि युद्धस्थलमें पूर्वजोंकी वीरता और गौरवका वर्णन करते तो सहस्रों दुर्बल आत्माओंमें भी अदम्य उत्साह भर देते थे। और यदि शोक प्रकट करनेके लिये कभी कुछ कहते तो आँखोंसे आँसुओंकी धारा बन्द न होने देते थे। कविताकी ही बदौलत लोग बड़ा सम्मान पाते थे। अरबमें प्रत्येक कुटुम्बके लोग पृथक् पृथक् रहा करते थे। इसलिये जिस क़बीले (समुदाय) के लोग कवि होते थे, वह भी बड़ा आदरणीय समझा जाता था। कविताका ही एक ऐसा द्वार था जिससे किसीकी भलाई या बुराई बिना किसी समाचारपत्र या नोटिसके समस्त अरबमें फैल जाती थी।

अरबोंकी स्मरण-शक्ति।

अरबोंकी स्मरण-शक्ति बड़ी अपूर्व थी। वे उसके बलसे केवल अपनी तथा अपने समुदायकी ही वंशावली कण्ठस्थ नहीं रखते थे बल्कि अपने घोड़ोंतककी वंशावली भी अपनी जबान पर रखते थे! अवश्य ही बहुतसे लोगोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि अरबी साहित्यमें पहलेसे ही किसी किसी वस्तुके सहस्रों नाम हैं। जैसे तलवारके ४०००, ऊँट और मदिरा, प्रत्येकके १०००, सिंहके ५०० और अजगरके

२०० नाम अरबीमें हैं। अरब इन सब नामोंको कण्ठस्थ रखते थे; और अपनी स्मरण-शक्तिकी ही बदौलत प्रायः लिखनेको बुरा समझते थे। वे कहते थे कि यदि लेखमें सब बातें आ जायँगी तो स्मृतिका विश्वास जाता रहेगा। साथ ही लेखकी अशुद्धि भी प्रामाणिक समझी जा सकेगी। इस प्रकार समस्त बातोंको वे स्मरण रखना ही सर्वोत्तम समझकर अनेक कविताएँ याद कर लेते थे। इसके अतिरिक्त बहुतसे लोगोंमें यह गुण भी था कि वे केवल एक बार सुनकर ही कविताएँ याद कर लेते थे। इसी लिये यदि एक बार किसीकी भलाई अथवा बुराई अरबमें फैल जाती, तो वह अमिट हो जाती थी। क्योंकि एक पीढ़ीके बाद दूसरी पीढ़ीवाले क्रमानुसार सब कुछ स्मरण कर लेते थे और इसी प्रणालीके कारण हम अरबकी कविताओंको जान सके हैं और उनके प्राचीन आचार-विचार बहुत कुछ मालूम कर सके हैं। जिस प्रकार संस्कृत-वालोंने धर्म्मशास्त्र तथा इतिहास तकको कविताका रूप दे दिया है, उसी प्रकार अरबोंने भी अपने सम्बन्धकी प्रायः सभी बातोंका कवितामें वर्णन किया है। और इसी लिये सब लोगोंने माना है कि कविता ही अरबका कोष है।

कविताका प्रभाव।

अरबी कविताके विषयमें यदि यह कहा जाय तो अनुचित न होगा कि कविताने अरब-निवासियोंपर जादूकासा काम कर दिखाया है। अरब-निवासियोंका पहले यह हाल था कि वे एक दूसरेसे पृथक् पृथक् रहा करते थे। जरा जरा

सी बात पर वे हजारोंकी संख्यामें मर-कट जाते थे। उन्हीं अरब-निवासियोंका बादको यह हाल हुआ कि कविता सुननेके लिये वे एक स्थान पर इकट्ठे होनेके आदी हो गये। अरब-निवासियोंने वर्षमें कुछ समय ऐसा नियत कर रक्खा था, जिसमें वे लड़ाई-भिड़ाई बिल्कुल बन्द रखते थे। उस नियत समयमें कोई मनुष्य अपने किसी शत्रुसे वैर-विरोधका बदला नहीं ले सकता था। उस शान्तिके समयमें हर साल "ओकाज" नगरमें एक बड़ा बाजार लगता था। उस बाजारमें हजारों कोसके व्यापारी आदि बिना किसी खटकेके आते थे। बाजारमें लाखोंका लेन देन होता था। अरबमें जब कविताका प्रचार हुआ, तब वहाँपर कवियोंने भी अपनी कविताएँ सुनाना आरम्भ कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद ऐसा होने लगा कि सब लोग एक बड़े मैदानमें बैठ जाते थे। फिर कोई मनुष्य एकाएक खड़ा हो जाता था और बिना अपना परिचय दिये ही अपनी कविता सुनाना आरम्भ कर देता था। कविता प्रायः शूरवीरता, पूर्वजोंके गौरव, प्रेम, विलाप और तलवार आदिके विषयमें होती थी। जिसकी कविता सबसे उत्तम होती थी उसकी धूम क्षण भरमें सारे बाजारमें मच जाती थी। बादको बाजारवालोंकी बदौलत ही वह समस्त अरबमें विख्यात हो जाता था और उसकी कविता भी अरब-निवासियोंकी अपूर्व स्मरण-शक्तिकी बदौलत अरबके कोने कोनेमें फैल जाती थी।

सात सर्वोत्तम कविताएँ।

बहुतसे ऐतिहासिकोंका यह मत है कि कविताओं-

मेंसे जो कविता सबसे उत्तम होती थी वह नाना प्रकारके चित्रित रेशमी कपड़े या झिल्लीपर सुनहली रोशनाईसे लिखी जाती थी और मक्केमें काबेकी दीवार पर लटका दी जाती थी। इस प्रकारसे लटकाई जानेवाली कविताको अरबीमें "मुअल्लक़ा" कहते हैं। कविता सुनहली रोशनाईसे लिखी होती थी, इसी लिये अरबीमें ऐसी कविताको 'मुज़हहबा" भी कहा गया है। ऐसी कविताओंकी संख्या मुसलमानी धर्मके जन्मकाल तक केवल सात हो चुकी थी। हज़रत मुहम्मद साहबने इन सातो कविताओंको काबेका दीवारपरसे उतरवा दिया था। ये कविताएँ संख्यामें सात थीं; इसलिये इनको अरबीमें "अससबउल मुअल्लक़ात" कहते हैं। इसके अतिरिक्त इनको "अलमुज़हहबात" या "अस्सुमूत" भी कहा जाता है।

युरोपमें आदर।

उपर्युक्त सातों सर्वोत्तम कविताओं तथा अन्य उत्तमोत्तम प्राचीन कविताओंका अरबी संसारमें जितना आदर हुआ है, उसके लिये तो कुछ कहनेकी आवश्यकता ही नहीं है। परन्तु यूरोपियन भाषाओंमें भी उनका जितना आदर हुआ है, उसका अन्दाज बहुत कुछ इसी बातसे लग सकता है कि अनेक कविताओंके अनुवाद लैटिन, फ्रेंच, जर्मन और अँग्रेजी आदि भाषाओंमें हो चुके हैं; और अनेक अरबी-कविताओंके अनुवादकी आवृत्तियाँ गद्य और पद्य दोनोंमें निकल चुकी हैं। प्रसङ्गवश इस अवसरपर यह बतला देना भी उचित प्रतीत होता है कि अरबी कविताओंमें अद्भुत चीजोंका वर्णन नहीं

है; और न एक मात्र ऐसी ही बातोंका उल्लेख है जिनसे दार्शनिक अथवा नास्तिक लोग ही किसी दशामें इन्कार कर सकते हों। बल्कि अधिकांश वर्णन शूरता, वीरता, विलाप, प्रेम, तलवार आदिका ही है। तथापि यूरोपियन विद्या-प्रेमियोंने अरबी कविताका बहुत अधिक आदर किया है।

कवितामें स्त्रियोंका भाग।

इस अवसर पर यह बतला देना भी उचित प्रतीत होता है कि अरबी कवितामें स्त्रियोंने जो काम किया है, वह भी उच्च कोटिमें परिगणित होता और आदर-दृष्टिसे देखा जाता है। जिस प्रकार आजकल अरबमें स्त्री-शिक्षाका कुछ भी प्रबन्ध नहीं है, उसी प्रकार प्राचीन कालमें भी कोई प्रबन्ध नहीं था। फिर भी कविता तथा साहित्यकी जो सेवा स्त्रियों द्वारा हुई है, वह आज भी प्रशंसनीय और आदरणीय समझी जाती है। स्त्रियोंके रचे पद्य प्रायः शोक और विलापसे भरे हुए हैं। परन्तु किसी किसी स्त्रीने शौर्य्य और वीर-रससे भरे हुए ओजस्वी पद्य भी कहे हैं। और जिस प्रकार अरबी काव्यमें अनेक पुरुषोंने अमिट यश पाया है, उसी प्रकार अनेक स्त्रियोंने भी अरबी संसारमें अक्षय्य कीर्ति प्राप्त की है। ऐतिहासिकोंका मत है कि एक बार ओकाजके बाजारमें ही कवि-सम्राट् इमरउलक़ैस और एक अन्य कविके बीचमें काव्य-विषयक कुछ झगड़ा पड़ गया था। उसको निपटानेमें एक स्त्रीने जिस योग्यताका परिचय दिया था, उसका लोहा आजकलके अरबीके बड़े बड़े विद्वान् और बुद्धिमान् भी निःसंकोच भावसे मानते हैं।

मुसलमानी कालमें कविता।

हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि कविताकी हालत हजरत मुहम्मद साहबके बाद वैसी नहीं रही जैसी कि उनके समयमें अथवा उनसे पहले थी। किन्तु हजरत मुहम्मद साहबके बाद कई सौ वर्ष तक कविताकी जो हालत रही, उसे कोई मनुष्य खराब नहीं कह सकता। इस कालमें कविताका रंग ढंग कई कारणोंसे अवश्य ही बहुत कुछ बदल गया। परन्तु तौभी लोगोंने कविताकी ओरसे बिल्कुल मुख नहीं मोड़ लिया था, बल्कि बहुतसे लोग कविता करने और सुननेमें काफी दिलचस्पी रखते थे।

हजरत मुहम्मद साहबके पश्चात् मुसलमानोंकी जो बड़ी सल्तनतें कायम हुई थीं, उनके दरबारोंमें भी कवियोंकी बड़ी क़द्र थी। कवियोंको माकूल वज़ीफा या इनाम मिला करता था। उस समयमें भी कुछ कवि ऐसे हो गये हैं, जो प्राचीन कवियोंकी भाँति यथासमय तत्काल नई कविता करनेकी अपूर्व शक्ति रखते थे; अथवा ऐसी अलंकृत कविता कर सकते थे जैसी अलंकृत कविता प्राचीन अरबवालोंकी होती थी। एक कविके बारेमें ऐतिहासिकोंका मत है कि वह प्राचीन अरबकी कविताके पद्योंमें अपने कहे हुए पद्य इस प्रकार मिला देता था कि बड़े बड़े लोगोंके लिये भी यह अति कठिन हो जाता था कि वे कविताके प्राचीन और अर्वाचीन पद्योंको भली भाँति परख सकें! हजरत मुहम्मद साहबके पश्चात् बहुत दिनों तक अरबी कविताका यथेष्ट मान बना रहा; और आज भी उस कालकी

कविताका यथायोग्य मान साहित्य-संसारमें है । किन्तु वास्तव-में कविताका मान अधिक दिनोंतक बहुत अच्छी तरह न रह सका । धीरे धीरे उसका रंग फीका पड़ता गया । इसका मूल कारण यह मालूम होता है कि इस कालमें भिन्न भिन्न विषयोंकी जो पुस्तकें भिन्न भिन्न भाषाओंसे अरबीमें अनुवादित होने लगीं अथवा हुई थीं, उनका गद्यमें अनुवाद होना आवश्यक था । दूसरे यह कि लोगोंकी रुचि कुछ स्वाभाविक रूपसे भी गद्यकी ओर हो गई थी । आज बीसवीं शताब्दीमें अरबी कविताकी जो हालत है और प्राचीन समयमें जो हालत थी, उन दोनों हालतोंमें यद्यपि जमीन और आस्मानका फर्क है, तथापि यह बड़े ही सौभाग्यकी बात है कि अब भी अरबी संसारमें ऐसे ऐसे योग्य कवि मौजूद हैं जिनकी बदौलत अरबी कवितामें जान पड़ी हुई है और जिनको अरबी कविता से सच्चा और हार्दिक स्नेह है ।

नीति ।

विपत्तिके समय यदि मनुष्य नीतिसे काम नहीं लेता तो वह अपनी जान निरर्थक खोता है और दुर्दशामें फँसकर कष्टका भागी होता है।

लेकिन चतुर पुरुष वह है जो किसी संकटमें पड़ते ही झट नीतिपर दृष्टि डालता है।

ऐसा मनुष्य संसारमें आयु पर्य्यन्त एक अच्छा सरदार बना रहता है; और जब उसका एक मार्ग बन्द हो जाता है तब दूसरा खुल जाता है।

—ताम्रउबत शर्न।

अरबी काव्य-दर्शन ।

१—नीति ।

सुनहरी शिक्षा ।

जिस स्थानमें भद्र पुरुषकी दुर्गति होती है उस स्थानपर तनिक भी ठहरनेसे संकटमें पड़ना पड़ता है ।

जातियोंमें कोई कोई दूषित स्वभाव वैसा ही असाध्य हुआ करता है जैसा कि जलोदरका रोग असाध्य होता है ।

किसी किसी बातसे कभी तो कुछ तत्त्व ही नहीं निकल सकता; जैसे, पानी बिलोनेसे मक्खन नहीं निकला करता ।

मनुष्य तो चाहता है कि मेरी इच्छाएँ पूर्ण हों; किन्तु ईश्वर उसके अनुसार नहीं करता; बल्कि स्वयं जो कुछ चाहता है वही देता है ।

जब किसी जातिपर कोई सख्ती आती है तब उस सख्तीके बाद शीघ्र ही नरमी आ जाती है ।

लोभी पुरुष अपने लोभके कारण धनी नहीं हो जाया करता। बल्कि उदार पुरुष दान करने पर भी कभी कभी धनवान् हो जाया करता है।

उदार हृदयवाला पुरुष जबतक जीता रहता है तबतक आनन्दसे ही रहता है। और संकीर्ण हृदयवाला आयु पर्य्यन्त दुःखी ही रहता है।

कंजूसको धनसे कुछ लाभ नहीं होता; और न दानीको अपने दानके कारण किसी प्रकारका दोष ही लगा करता है।

किसी किसी अति कठिन रोगकी भी दवा है। लेकिन जड़ताकी तो कोई ओषधि ही नहीं है।*

—कैस-बिन-इल खताम।

कुछ बिखरे मोती।

मान-मर्यादा प्राप्त कर, चाहे वह नरकमें ही क्यों न मिले। और अपमानको त्याग, चाहे वह चिरस्थायी स्वर्गमें ही क्यों न हो।

एक तुच्छ मनुष्य नपुंसकको मार डालता है, चाहे वह तुच्छ बालकके सिरका कपड़ा भी न काट सके।

---

* सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

भर्तृहरि नीतिशतक।

अर्थात्, शास्त्रकी विधिसे सबका औषध है, परन्तु मूर्खका कोई औषध नहीं है।

ईश्वरकी सृष्टिमें सबसे अधिक दुःखी पुरुष वह है जिसका साहस तो बढ़ा चढ़ा हो, परन्तु जिसकी शक्ति उसके लक्ष्य-से न्यून हो।

प्रतिष्ठाकी प्राप्तिमें तू सारा धन व्यय न कर दे। नहीं तो प्रभुताकी गाँठ, जो धनके कारण बँधी हुई है, खुल जायगी।

संसारमें उसका कुछ भी मान नहीं जिसके पास धन नहीं। और जिसका कुछ मान नहीं, मानों उसके पास धन भी नहीं है।

भेड़ चरानेवाला गड़रिया अपनी अज्ञानताकी अवस्थामें भी वैसे ही मरेगा जैसे कि जालीनूस ऐसा भारी चिकित्सक ज्ञानी होकर मरा था।

अनेक बार ऐसा देखा गया है कि अज्ञानीकी आयु अधिक होती है और उसकी जान भी अधिक सुरक्षित रहती है।

क्या श्रेष्ठ नीच कहा जा सकता है? अथवा स्वच्छको अस्वच्छ बताया जा सकता है?

यदि तू किसी कुलीनका सत्कार करेगा तो उसका स्वामी बन जायगा। और यदि किसी दुष्टका सत्कार करेगा तो वह तुझे दुःख देगा।

तलवार चलानेके अवसरपर प्रभुताके लिये उदारता उसी प्रकार हानिकारक है, जिस प्रकार कि उदारताके अवसर पर तलवारसे काम लेना हानिकारक है।

किसी स्थानमें मेरा कोई मित्र (सहायक) ही नहीं मिल सकता। क्योंकि जब किसी मनुष्यका लक्ष्य महान् हो जाता है तब उसके सहायक भी कम हो जाया करते हैं।

बुद्धिमत्तापूर्वक थोड़ासा प्रेम निस्सन्देह अच्छा है। और निर्बुद्धिताके साथ अधिक प्रेम भी बुरा है।

जब किसी मामलेमें दिल ही हाथको न उठावे तब बाहु ही हाथको क्योंकर उठावेगा ?

कालने अपने संप्रदायमें यह फैसला कर रक्खा है कि एक जातिकी विपत्तियाँ, दूसरी जातिके लिये कल्याणकारी हों।*

—मुतनब्बी।

धन और निर्धनता।

जो मनुष्य अपनी जातिमें निर्धन हो जाता है वह, धनकी ही प्रशंसा करता है; चाहे वह अपनी जातिमें उच्चकुल-उत्पन्न, भद्र पुरुष ही क्यों न हो।

निर्धनतासे मनुष्यकी बुद्धि दूषित हो जाती है, चाहे वह एक बहुत बड़ा नीतिज्ञ और सरदार ही क्यों न हो।

---

* जीवो जीवस्य भोजनम्।
एक प्राणी दूसरेकी खूराक है (एककी जान जानेसे दूसरेको सुख मिलता है)।

मनुष्य जब वस्त्र धारण कर लेता है तब ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वह कभी नग्न ही नहीं था। और जब अमीर हो जाता है तब ऐसा मालूम होता है कि मानों वह कभी ग़रीब ही नहीं था।

जब तू किसी जगह तंग हो जाय, तो किसी दूसरी जगह चला जा; क्योंकि तुझे बहुतसे विश्वसनीय स्थान मिल जायँगे*

—जाबिर-बिन-सालब उत-ताई।

जैसेको तैसा।

उम्म-सआद (सआदकी माता) मेरा कडुवा स्वभाव तथा तीखी प्रकृति देखती है, इसलिये वह मुझको सठियाया हुआ बतलाती है। लेकिन सच तो यह है कि वह मेरी हालत नहीं जानती।

मैंने उससे कहा कि भद्र पुरुष चाहे कितना ही सुशील क्यों न हो, तथापि किसी अवसरपर वह मुसब्बर (एलुवा) से भी अधिक कडुवा पाया जाता है।

---

* यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमः कश्चित् त देशं परिवर्जयेत्॥

जिस देशमें न तो आदर, न गुजारा, न बन्धुवर्ग और न कुछ विद्या-प्राप्ति ही हो, उस देशको त्याग देना चाहिए।

नम्रता निर्बलता है; कठोरतासे रोब-दाब रहता है ; और जिस मनुष्यका कुछ रोब-दाब नहीं हुआ करता उसकी बड़ी दुर्दशा होती है ।

जो मनुष्य मुझसे नम्रताके साथ मिलता है, मैं भी उसके साथ धृष्टता नहीं करता । लेकिन दुष्टताके उत्तरमें मैं अति कटु हूँ । मैं टेढ़ेका टेढ़ापन दूर कर देता हूँ और उसको सीधा करके पूर्ववत् कर देता हूँ । यहाँ तक कि उसकी नाकमें एक नकेल डाल देता हूँ जिसमें वह अपनी सीमाका उल्लंघन न कर सके ।

ऐ उम्म-सआद ! यदि तू मुझको बुरा-भला कहती है, तो निस्सन्देह तू एक ऐसे पुरुषको बुरा-भला कहती है जिसकी निर्धनताकी कथा प्रशंसनीय है, और जिसकी अमीरीमें सबका हिस्सा है ।

जब वह अखण्ड व्रत धारण करता है, तब अपनी दोनों आँखोंके सन्मुख अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और बाढ़िया सुरैजी तलवारकी भाँति कर्मक्षेत्रमें प्रविष्ट हो जाता है ।

—सआद-बिन-नाशिब ।

यदि तुझे किसीका अनुसन्धान करनेकी स्वतन्त्रता दी जाय, तो किसी विवेकी और कुलीन को अपना मित्र बना ।

—एक कवि

अच्छी मित्रता ।

मैं दुर्बल तथा नीच नहीं हूँ; और न ऐसा ही हूँ कि मेरा मित्र यदि मुझसे मुँह मोड़े तो आतुर हो जाऊँ अथवा लड़ने लगूँ ।

परन्तु यदि मित्र प्रीति रक्खे तो मैं भी निस्सन्देह प्रीति रखता हूँ । और यदि उसका मार्ग मुझसे दूर हो जाता है तो मेरा मार्ग भी उससे दूर हो जाता है ।

ध्यान रहे कि अच्छी मित्रता वह है जिसे आत्मा पसन्द करे; और वह नहीं, जो कि दुःखदायी बनकर आवे ।

—असद वंशका एक कवि ।

जब मेरा कोई मित्र मुझसे नाता तोड़े और मुझसे मित्रता रखना उचित न समझे, तब मैं ऐसा नहीं हूँ कि उस पर कोई दोष आरोपण करूँ या उसको कोसूँ । मैं उसको बिल्कुल छोड़ देता हूँ । फिर हम दोनों पृथक् पृथक् जीवन व्यतीत करते हैं । परन्तु मैं उस समय भी कोई अनुचित शब्द मुँहसे नहीं निकाला करता ।

पेट पापीकी मित्रतासे पृथक् रह; क्योंकि जब उसके साथ मित्रताकी रस्सी टूट जाती है तब वह झूठी बातें बनाया करता है ।

—मुतवक्किल-उल-लैसी ।

भद्र पुरुष ।

मैं उस पुरुषको अच्छा समझता हूँ जिसके कान बुरी बातोंको नहीं सुनते—मानों प्रत्येक बुरी बातकी ओरसे बहरे हैं ।

ऐसे पुरुषके विचार शुद्ध होते हैं । वह न बुरी बातोंका प्रचारक होता है, न अच्छे कामोंमें बाधक, और न वाचाल ही होता है ।

जब तू चाहे कि तू एक आदरणीय पुण्यात्मा कहलावे और योग्य सद्व्यवहारी तथा प्रशंसनीय कुलीन समझा जाय, तो, जबकि तेरे किसी मित्रसे कोई अनुचित कार्य्य हो जाय, उस समय तूही उसके लिये कोई कारण ढूँढ़ ले ।

हृदयका विशाल होना इस बातमें है कि आवश्यकताकी पूर्ति पर तू सन्तोष करे । और यदि तू आवश्यकतासे अधिक चाहे तो हृदयकी विशालता दरिद्रताका स्थान ले लेगी ।

—सालिम-बिन-वासबत-उल-असदी

अपनी आत्माको मनुष्य जिस प्रकारका चाहे, बना सकता है; सो यदि मनुष्य अपनी आत्माको लालचमें फँसाना चाहे तो वह उसमें फँस जायगी । और यदि उसको सन्तोषका पाठ पढ़ावे तो वह सन्तोषी बन जायगी ।

—अबुल-हसन-मावर्दी

पुत्रको उपदेश।

हे पुत्र ! बुद्धिमान पुरुष नीतिका उपदेश समझदार-को ही देता है।

तू अपने मित्रसे सदैव मित्रता रख। वह मित्रता जो सदैव नहीं रहती, अच्छी नहीं है।

अपने पड़ोसीके स्वत्त्वको पहचान, और जान ले कि अच्छे मनुष्य ही पड़ोसीके स्वत्त्वको पहचाना करते हैं।

समझ रख कि अतिथि कुछ समय बाद किसी न किसी दिन आतिथ्यकर्ताकी या तो प्रशंसा करेगा, और या बुराई।

लोग दो प्रकारके कार्य्य किया करते हैं—प्रशंसनीय कार्य्य या निन्दनीय कार्य्य।

हे मेरे पुत्र यह भी याद रख कि विद्वान् पुरुषको विद्या-से ही लाभ होता है।

निस्सन्देह कुछ छोटी छोटी बातें ऐसी भी होती हैं कि जिनसे बड़े बड़े बखेड़े उठ खड़े होते हैं।

बदला उस क़र्जके समान है जो कि बारम्बार तुझसे माँगा जाता है। और यह क़र्ज (बदला) कभी कभी ऋणदाता (बदला लेनेवाले) को देरसे मिलता है।

दुष्टता दुष्टको पछाड़ डालती है; और अत्याचारकी चरागाह (चरी) का चारा अत्याचारीके अनुकूल नहीं होता।

कभी मुसाफ़िर तेरा भाई बन जाता है और सगा नातेदार नाता तोड़ बैठता है ।

कभी धनके कारण मनुष्यका आदर किया जाता है और निर्धनतासे निर्धनका अनादर होता है ।

कभी बड़ा नीतिज्ञ या धर्म्मात्मा पुरुष निर्धन हो जाता है और पापी निर्बुद्धि धनवान् हो जाता है ।

कभी पापीको छोड़ दिया जाता है और धर्म्मात्माकी परीक्षा की जाती है । सो उन दोनोंमें कौनसा बुरा है ?

मनुष्य उचित कार्य्योंमें भी कंजूसी करके धन इकट्ठा करता है । परन्तु वे ऊँट जिनको कि वह चराता है, कभी कभी ऐसे वारिसोंकी जायदाद बनते हैं जो कि उसके वंशके नहीं होते ।

उस मनुष्यकी कंजूसी कितनी बुरी है जो कि काल और उसके चक्रका ठीक निशाना है और देखता है; कि जातियाँ उसीके सामने ऐसी पिस गई हैं, जैसे कि सूखी घास चूर चूर हो जाती है ।

सृष्टि नष्ट हो जायगी । सो न कोई सर्वदा दुःखी रहेगा और न सुखी ।

जल्दी ही अपने पतिके मरनेसे स्त्री राँड हो जायगी, या पत्नीकी मृत्युके कारण पुरुष रडुँआ हो जायगा ।

किसीका पिता क्या कह सकता है कि मैं अपने पुत्रसे पहले मरूँगा अथवा मेरा पुत्र मुझसे पहले मर जायगा।

रणशूर वह है जो युद्ध-स्थलकी कठिनाइयोंके समय भी दृढ़ हृदयवाला हो, आपदाओंसे दुःखी न हो और सत्याग्रहमें मैदान न छोड़े।

स्मरण रहे कि भीरु तथा छिछोरे मनुष्यमें लड़ाईका भार उठानेकी शक्ति नहीं होती।

अच्छे घोड़ोंमेंसे सर्वश्रेष्ठ घोड़ा वह है जो बहुत दौड़ता और खूब लगाम चबाता है। —यज़ीद-बिन-हुक्म-उल सक़फ़ी।

मनुष्य और उसका साहस।

जिस मनुष्यमें जितना साहस होता है उसीके अनुसार उसके संकल्प भी होते हैं। और जिस मनुष्यका जैसा दान होता है उसीके अनुसार उसके प्रशंसनीय कार्य्य भी हुआ करते हैं।

जो मनुष्य भीरु है वह छोटे छोटे कार्य्योंको भी बहुत बड़े बड़े कार्य्य समझता है। और जो साहसी होता है वह बहुत बड़े बड़े कार्य्योंको भी छोटे ही छोटे कार्य्य समझता है।

मैं अपनी जातिके कारण श्रेष्ठ नहीं हुआ, बल्कि मेरे कारण मेरी जाति श्रेष्ठ हुई है। और मुझे अपने आप पर गर्व है, न कि अपने बाप-दादोंके कारण।

वीर पुरुष उस समय भी सुरक्षित होता है जब कि बड़े बड़े सरदारोंकी छातीके रक्तमें भाला घुसा होता है।

—मुतनब्बी।

अपरिचितका विश्वास नहीं ।

जब कि कोई मनुष्य क्रुद्ध हो और न तो उसके लिये मृत्युमें भी भयभीत न होनेवाले सवार क्रुद्ध हों, न अति दुस्तर कार्य्य करनेवाले महाप्रतापी ही उसकी सहायता करें ।

ऐसे मनुष्यको एक तुच्छ शत्रु भी तोड़ डालता है और सदैव उस पर आफ़त आती रहती है ; चाहे वह कितना ही क्रूर और शक्तिशाली क्यों न हो ।

मैत्री-कालमें, तू जिससे चाहे, भ्रातृ-भाव रख ले । किन्तु यह जान ले कि निस्सन्देह तेरे चचेरे भाईके सिवा, संसारमें प्रत्येक व्यक्ति अपरिचित है ।

तेरा सच्चा भाई (तेरे चचेरे भाइयोंमेंसे) वह है जिसको तू अपने सहायतार्थ बुलावे और वह प्रसन्नतापूर्वक तेरी सहायताके लिये आवे—चाहे रणक्षेत्रमें रक्तकी धारें ही क्यों न बहती हों ।

तू अपने चचेरे भाईसे विमुख मत हो, चाहे वह कुटिल ही क्यों न हो; क्योंकि उसीकी बदौलत कार्य्य सँवरते और बिगड़ते हैं ।

—कुराद-बिन-ओबाद ।

यदि तू किसी मित्रका उत्सुक हो, तो प्रत्येकको जो कि मित्रताका दम भरता है, अपना मित्र न समझ ।

—एक कवि।

चेतावनी।

जब कि तू धनी हो और अपनी आवश्यकतासे बच रहनेवाले धनको पुण्यार्थ न दे तो तेरी प्रशंसा करनेवाला कोई न होगा।

यदि तू उस मनुष्यकी रोक थाम नहीं करेगा जो तेरे निकट रहकर तुझे दुःख देता है, तो दूरवाले तुझपर तीर चलावेंगे।

जब कि तेरी शान्ति तेरी अज्ञानतापर प्रबल न रहेगी, तो तुझपर बहुतसी बिजलियों और कड़ककी भरमार रहेगी।

यदि तेरे संकल्पकी दृढ़ता तेरे संशयको दूर न कर देगी तो तू अन्य लोगोंके अधीन रहेगा; जैसे ऊँटनी अपनी नकेलवाले अधिकारीकी अधीनतामें रहती है।

जब गाड़नेवाले तुझको क़बरमें गाड़ देंगे और तेरा माल और लोगोंकी जायदाद बन जायगा, तब तुझको अपने जमा किये हुए धनसे कुछ भी लाभ न होगा।

यदि तू अतिथिको अच्छा भोजन न देगा और उसको उत्तम आसन पर न बैठावेगा, तो तू ऐसे अपयशका वस्त्र धारण करेगा जिसको लोगोंकी गालियाँ, तथा उनके पद्य और गद्य सदैव प्रकट करते रहेंगे। * —मुहम्मद-बिन-अमीरहाज।

---

* अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्त्तते।
स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति॥

जिसके घरसे अतिथि निराश होकर लौटता है, वह अपने पाप उसे देकर और उसके पुण्य लेकर जाता है (क्योंकि वह स्थान स्थान जाकर उसका अपयश करेगा; और अपयश पापका फल है। अपयशके विस्तारसे सुकीर्तिका लोप हो ही जाता है।)

महत्व किसमें है ।

यद्यपि मैं बड़े डील-डौलवाला नहीं हूँ तथापि उत्तम कार्य्यों-की बदौलत महान् हो सकता हूँ ।

शरीरकी सुन्दरता तथा शोभासे कोई मनुष्य प्रशंसाका भागी नहीं हो सकता, जबतक कि शरीरकी कान्तिके अनुसारही उसमें ज्ञान न हो । *

जब मैं भद्र पुरुषोंकी सङ्गतिमें रहता हूँ, उस समय मैं दान करनेमें उनसे बढ़ जाता हूँ । यहाँ तक कि मुझे ही सर्व-श्रेष्ठ कहा जाता है ।

प्राय: हमने यह देखा है कि वे शाखाएँ सूख जाती हैं जिनको उनकी जड़ोंने जीवित नहीं रक्खा है । *

मैंने पुण्यके समान कोई ऐसी वस्तु नहीं देखी जिसका स्वाद मीठा हो और आकृति भी चारु हो ।

—फ़ज़ारीनका एक कवि

कमीनोंके पास बैठना कमीनगीका चिह्न है । और जो मनुष्य किसी पंडितके पास बैठा करता है, चतुर कहलाता है ।

—एक कवि ।

---

* रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसंभवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

सुन्दरता तथा जवानीसे युक्त, उत्तम कुलोत्पन्न, किन्तु ज्ञानरहित मनुष्य गन्धरहित ढाककी भाँति शोभाशून्य रहते हैं ।

* कविका अभिप्राय यह है कि जिस कुटुम्बके लोग अच्छे कार्य्य नहीं किया करते, वह कुटुम्ब नष्ट हो जाता है ।

अनुवादक ।

नीति-उद्यान।

जिस मनुष्यने अपने मामलोंमें कालके चक्रोंसे कोई शिक्षा नहीं प्राप्त की, उसको बे-चरवाहेके ऊँटोंके साथ चरना चाहिए।

जो मनुष्य सावधानीको खो बैठता है, वह अपने कार्य्यमें सफल नहीं होता। और जो मनुष्य घमण्डके बाण चलाता है वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता।

जो जड़ोंकी संगतमें बैठेगा, वह अपने लिये लज्जाके फल चुनेगा और किसी बड़ी आपत्तिका शिकार बनेगा।

जो मनुष्य दान करता है वह सरदार बन जाता है और लोग उसके विना दामके गुलाम बन जाते हैं। पर कंजूसोंकी हालत एक सी ही बनी रहती है।

जो मनुष्य अपनी मान-मर्यादाकी रक्षा नहीं करता उसके स्वभावमें असाध्य त्रुटियाँ जड़ पकड़ लेती हैं।

जो मनुष्य अनुचित रीतिसे एकत्र किये हुए धनकी बदौलत उच्च पद प्राप्त करना चाहता है, वस्तुतः अपनी मूढ़ताके कारण उसकी बड़ी दुर्दशा होती है और वह बड़े संकटमें पड़ता है।

जो मनुष्य हिलमिलकर रहता है, वह अच्छी तरहसे जीवन व्यतीत करता है; और सर्वश्रेष्ठ जीवन उसका है जिसमें भलमनसाहत है। पर जो कायर तथा कंजूस है, उसका जीवन अति निकृष्ट है। —सलाह-उद्दीन-सफ़दी।

आदर्श नीति ।

सदाचारी विद्वान ! तू प्रसन्न हो, क्योंकि तू बिना जलके ही खूब हरा भरा है ।

हे अल्पज्ञ ! यद्यपि तू लहर मारनेवाले जलमें है, तथापि तू प्यासा ही रहेगा ।

जिन शुभ बातोंका तू अभिलाषी है, उनके हेतु आलस्यको त्याग दे । क्योंकि आलसी शुभ वस्तुओंकी प्राप्तिमें सफलीभूत नहीं हो सकता । *

अपनी मर्य्यादा तू बनाये रख और उसका वस्त्र न फाड़, क्योंकि केवल भद्र पुरुषही अपनी मर्य्यादामें बट्टा नहीं लगने देता ।

समस्त लोगोंको एक जैसे स्वभावका मत समझ लो; क्योंकि उनकी प्रकृतियाँ इतने प्रकारकी हैं जिनकी तुम गणना नहीं कर सकते ।

लोग उस मनुष्यके भाई हैं जो अपने धनके बलसे सम्मान पाये हुए हैं । परन्तु जब वह धन जाता रहता है, तब वे उसके विरोधी बन जाते हैं ।

---

* "उद्यमेनैव सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।"

उद्योगसे ही कार्य्य सिद्ध होते हैं न कि मनोरथोंसे । सोये हुए शेरके मुँहमें हिरन नहीं घुसते ।

"न लभन्ते विनोद्योगं संपदां पदं । सुराःक्षीरोद विक्षोभमनुभूयामृतं पपुः ॥"

उद्योगके बिना जीव संपत्तिकी पदवी नहीं पाते । देवताओंने भी क्षीरसागर मथनका अनुभव करके अमृत पिया था ।

उभरती हुई जवानीमें चटक मटककर चलनेवाले ! बता, क्या कभी कोई मतवाला भी नियत स्थानपर पहुँचा है ?

तू अपनी उभरती हुई जवानीके धोखेमें न आ; क्योंकि कई नवयुवक अपनी युवावस्थामें ही परलोक सिधार गये हैं।

यदि किसी मनुष्यके आचार-विचार शुद्ध हों तो परमात्मा उसके पापोंको क्षमा कर देगा।

जब तक बस चले, नेकी कर; क्योंकि मनुष्यमें सदैव नेकी करनेकी शक्ति नहीं रहा करती।

उद्यानकी सुगन्धि कलियोंसे हुआ करती है; और भद्र पुरुषकी प्रतिष्ठा न्याय और नेकीके कारण होती है।

—अबुल-फ़तहिल-बुस्ती।

आदर्श जीवन।

प्रत्येक पुण्यात्मा जो आगन्तुकोंके साथ सद्व्यवहार करता है, निन्दासे वंचित रहता है; और साथ ही सत्पुरुषोंके बीचमें ऐसा यश प्राप्त कर लेता है जो कि अमिट होता है।

हे प्रिये ! मैं तेरी सौगन्द खाकर कहता हूँ कि कोई स्थान स्वयं ही लोगोंकी रुचिके प्रतिकूल नहीं हुआ करता; बल्कि उस स्थानके निवासियोंके आचार-विचार लोगोंको असन्तुष्ट कर दिया करते हैं।

हे प्रिये ! तू मुझको धन खर्च करनेसे मत रोक; क्योंकि कंजूसी मनुष्यके सद्गुणोंको चुरानेवाली है।

हे प्राणेश्वरि ! तू मुझे इच्छानुसार खर्च करने दे, और

मेरी इच्छाके अनुकूल ही तू भी हो जा; क्योंकि मैं इस बातसे डरता हूँ कि कंजूसीके कारण कहीं मेरे सद्गुणोंको कुछ धक्का न पहुँचे ।

तू मुझे मत रोक, क्योंकि मैं उत्तम कार्य्य किया करता हूँ और सांसारिक आपत्तियों तथा लोगोंके दायित्वके निमित्त सदैव चिन्तित रहा करता हूँ ।

—अमर बिन अहतम् ।

देश-त्याग ।

जब कि तू किसी जगहसे तंग आ जाय तो उसे छोड़कर किसी अन्य स्थानकी राह ले ।

ईश्वरकी रची हुई भूमि लम्बी चौड़ी है । फिर तो यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि ऐसा होने पर भी कोई मनुष्य अपमान-जनक भूमिमें रहे ।

वह मनुष्य तो बिलकुल ही गिरा हुआ तथा निर्बुद्धि है जो यह नहीं जानता कि मुझपर कैसी चक्की चल रही है ।

यदि तुझे अत्याचारका भय हो तो उस अवसरपर अपनी आत्माकी भलाईका अभिलाषी हो । और घर बनाने वालेको घरके क्षयका समाचार सुनाकर त्याग दे ।

निस्सन्देह तुझको एक स्थानके बदले दूसरा स्थान मिल जायगा । किन्तु तुझको इस आत्माके बदले अन्य आत्मा न मिल सकेगी ।

—एक कवि ।

यात्रासे लाभ।

हे संसारके लोगो ! तुम यात्रार्थ घरसे निकलो। जो कुछ तुम छोड़कर जाओगे, उसका बदला मिल जायगा। तुम भ्रमण करो; क्योंकि जीवनका स्वाद निस्सन्देह कष्ट उठानेमें ही है।

विवेकी और पण्डितके लिये कोई स्थान दुःखदायी नहीं हुआ करता। अस्तु, गृह त्यागकर भ्रमणार्थ विदेशकी राह लो। *

निस्सन्देह मैं देखता हूँ कि एक ही स्थान पर ठहरे रहनेके कारण पानी गँदला हो जाता है; और यदि बहता रहता है तो स्वच्छ रहता है, नहीं तो स्वच्छ नहीं रहता। †

चन्द्रमा यदि एक स्थानको छोड़कर दूसरे स्थानपर न जाय, तो कभी यह नौबत नहीं आ सकती कि लोग उसके दर्शनकी प्रतीक्षा करें।

सिंह जब तक अपना वन नहीं छोड़ता तबतक शिकार नहीं कर सकता। और तीर जबतक धनुषको छोड़कर पृथक नहीं होता तबतक निशानेपर नहीं लगता।

सोना खदानोंमें मिट्टीके समान पड़ा रहता है और लकड़ी वृक्षमें रहते हुए भी लकड़ी ही रहती है।

यह सब जब अपने स्थानको त्याग देते हैं तभी उच्च आसन प्राप्त करते हैं; और यदि अपने स्थानमें ही रहें तो कभी आदरणीय पद प्राप्त नहीं कर सकते। —एक कवि।

---

* विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

† पानी वग्गदे रग्गदे खरे रहंदे। —वारस शाह।

विदेश-गमन ।

उचित यह है कि कुटुम्बियों और देशवासियोंका प्रेम, तुझे आनन्दमय जीवनके सुखसे न रोके । *

जिस स्थानमें तू सफ़र करते समय ठहरेगा, उसी स्थानमें तुझे कुटुम्बियोंके बदले कुटुम्बी और पड़ोसियोंके बदले पड़ोसी मिल जायँगे ।

—एक कवि ।

नीति-भाण्डार ।

विद्या नीचको उच्च शिखरपर चढ़ा देती है; और अविद्या मनुष्यको पछाड़ डालती है ।

ईश्वर आपदाओंकी हर तरहसे भलाई करे; क्योंकि इन्हींकी बदौलत हमने अपने शत्रुओं तथा मित्रोंको परख लिया है ।

जिसकी ओरसे अभिवादनकी आशा भी न थी, वह भी आज अभिवादन करता है । और यदि धन न होता, तो कोई मनुष्य अभिवादन न करता ।

बहुतसे लोग ऐसे हैं जो मर गये, किन्तु उनके गुण नहीं मरे । और बहुतसे लोग ऐसे हैं जो कि जीवित हैं, किन्तु सर्व साधारणकी दृष्टिमें मृतक हैं ।

प्रत्येक रोगके लिये औषध है, जिससे कि उसका इलाज हो जाता है । किन्तु अज्ञानता अपने दवा करनेवालेको परेशान कर देती है ।

---

* कविने विदेश-यात्राको आनन्दमय जीवनकी प्राप्तिका साधन बतलाया है । और एक कहावतका तात्पर्य है—'यात्रा सफलताका साधन है' । —अनु०

प्रत्येक सुन्दर वस्तुमें शोभा होती है। अतः विद्वान्‌की शोभा सद्व्यवहारके कारण हुआ करती है।

यदि कोई मनुष्य किसी ऐसे मनुष्यके साथ भलाई करता है, जो उसकी भलाईका अनुभव नहीं करता, तो वह भलाई करनेवाला ऐसे मनुष्यके समान है, जो अन्धोंके घरोंमें दीपक जलाता है।

जिस मनुष्यका पद सूर्यके स्थानसे भी ऊपर हो, उसको न तो कोई वस्तु घटाही सकती है और न बढ़ाही सकती है।

यदि तुमसे कोई खल मेरी निन्दा करे, तो वास्तवमें वह इस बातका साक्षी हो रहा है कि मैं श्रेष्ठ हूँ; क्योंकि खल तो सदैव भद्र पुरुषोंकी निन्दा किया ही करते हैं।

—भिन्न भिन्न कवि

ज्ञान-गेह ।

जब तुझपर कोई आपत्ति आवे तो धैर्य्य धर; क्योंकि मनुष्यके लिये सुख और दुःख दोनोंका होना आवश्यक है।

मैं किसी मनुष्यसे मैत्री करनेसे पहले उसके स्वभावसे मित्रता करता हूँ और उसके कार्य्यों और विचारोंको परख लेता हूँ।

जब कि तूने किसीपर अत्याचार किया हो, तो उसके द्रोहसे बचे। क्योंकि जो मनुष्य काँटे बोता है वह अँगूर नहीं काटा करता। *

अपनी सौगन्द, जबानी मित्रतासे कुछ लाभ नहीं है, जबतक कि मित्रताकी जड़ हृदयमें न हो।

* बोए पेड़ बबूलको आम कहाँसे खाय।

दोषरहित मित्रका पाया जाना अति कठिन है। अतः मित्रोंके दोषोंका वर्णन करना नीचता है।

जो मनुष्य आनन्दमय जीवनके कारण संसारकी प्रशंसा करता है, निस्सन्देह वह अति शीघ्र उसके अवगुणोंके कारण उसको धिक्कारेगा भी।

तू अपना गुप्त भेद किसीको मत बतला; क्योंकि जो भेद दोनों होंठोंसे बाहर निकल जाता है वह प्रकाशित हो जाता है।

अपनी विद्या, शान्ति, गुण और उदारताके कारण ही मनुष्य द्रोहका निशाना बन जाता है।

यदि किसी भवनकी नींव न होगी, तो जो कुछ बनाया जायगा उसका विध्वंस हो जायगा। —भिन्न भिन्न कवि

स्फुट नीति।

जो बातें मनुष्योंकी हार्दिक रुचिके अनुसार हुआ करती हैं, वही मनुष्योंपर प्रभाव डाला करती हैं।

सम्मति प्रदान करनेवाला व्यक्ति कभी बिना सोचे समझे ही शुभ सम्मति प्रदान कर दिया करता है। और कभी बहुतेरा सोचने पर भी चूक जाया करता है।

नम्रता यदि किसीमें स्वाभाविक न हो, तो चिर-आयु पाने पर भी वह नम्र नहीं हो सकता।

पुण्यात्माओंका दान हाथोंसे होता है; किन्तु झूठोंका दान

ज़बानी जमाख़र्च है। सो ईश्वर करे कि न वह रहें और न उनके झूठे दान।

चुगुलखोरोंकी बातोंका प्रभाव मित्रोंपर ऐसा नहीं पड़ा करता जैसा कि शत्रुओं पर पड़ा करता है। —मुतनब्बी।

चेतावनी।

तेरी श्रेष्ठता इसी बातमें है कि तू संसारमें एक भीषण गरज छोड़ जा, जिसकी ऐसी गूँज हो जैसी गूँज कानमें उँगली देनेसे पैदा होती है।

यदि तेरी श्रेष्ठता तुझे किसी अधमको धन्यवाद देनेसे न बचा सके, तो वास्तवमें श्रेष्ठता उसके निमित्त हो जायगी, जिसको कि तू धन्यवाद देता है।

जो मनुष्य दरिद्रतासे भयभीत होकर सदैव धनोपार्जनमें लगा रहता है, उसका यह काम स्वयमेव दरिद्रता है।

अत्याचारियोंको दूर करनेके निमित्त हमें उचित यह है कि हम बड़े बड़े घोड़ोंका प्रबन्ध करें जिनपर कि नवयुवक सवार हों। और उनमेंसे प्रत्येकका हृदय अत्याचारीके वैमनस्य से भरा हुआ हो।

फिर उनका हाल यह हो कि उनमेंसे प्रत्येक नवयुवक अपने बरछोंकी अनीसे अत्याचारियोंको उस क्षेत्रमें मृत्युका प्याला पिलाता हो, जिसमें मदिराकी इच्छा ही नहीं की जाती।

—मुतनब्बी।

उपदेश-विचार ।

मेरे विचारोंकी दृढ़ताने मुझे बकवाद करनेसे बचाया और प्राकृतिक आभूषणोंकी अनुपस्थितिमें श्रेष्ठताके गहनोंने मुझको सुशोभित कर दिया ।

जीवन-रक्षाका मोह, साहसीको उच्च पदोंकी प्राप्तिसे वञ्चित रखता है ।

यदि तू आलसी ही रहना चाहता है अथवा जीवनके मोह-में पड़ा है, तो पृथ्वीमें एक गुफा बना ले, या आकाश पर सीढ़ी लगाकर चढ़ जा, जिससे तू एकान्तवासी बन जाय ।

तू उच्च पदोंकी प्राप्तिकी कठिनाइयोंको उन लोगोंके लिये छोड़ दे जो कि उन कठिनाइयोंको सहन कर सकते हैं, और तू नाममात्र सुख पर सन्तोष कर ।

नाममात्र सुख पर प्रसन्न रहना मनुष्यका बोदापन है; क्योंकि भरपूर सुख तो भ्रमणकी अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ सहनेपर ही प्राप्त हो सकता है ।

निस्सन्देह उच्च पदोंने मुझसे कहा है कि सुख भ्रमणसे प्राप्त होता है; और वस्तुतः उनका यह कहना सर्वथा ठीक ही है ।

यदि किसी अच्छे ठिकाने पर ही पड़े रहनेसे किसीकी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो सकतीं, तो सूर्य्य सदैव एक अच्छे स्थानमें ही पड़ा रहता ।

मुझसे निकृष्ट लोग यदि आगे बढ़ गये, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं; क्योंकि मैं तो सूर्यका अनुयायी हूँ, जो चौथे आकाशमें रहता है; पर मनहूस शनैश्चर सातवेंमें रहता है ।

तेरी सचाई लोगोंके झूठके सामने दूषित हो गई । पर क्या कोई टेढ़ी वस्तु किसी सीधी वस्तुके समान हो सकती है ?

—अबू इस्माइल तुगराई ।

आदर्श उपदेश ।

भाग्य उद्योगमें है, और आलस्यमें दुर्भाग्य है । सो तू कटिबद्ध होकर उद्योग कर, जिसमें तू अपनी अन्तिम इच्छा पूरी कर ले ।

जिस प्रकार कवचधारी योद्धाके हाथमें तलवार धैर्य्य धरे रहती है, उसी प्रकार काल-चक्रकी आपदाओंमें तू भी धैर्य्य धारण किये रह ।

जो कुछ तुझे मिले उसपर फूला न समा; और जो नष्ट हो जाय उसके लिये दुःखी न हो ।

यदि तू लोभ और लालचसे दूर रहेगा, तो तेरी मनो-कामना शीघ्र ही पूर्ण होगी और गुप्त रीतिसे तुझे ईश्वरीय सहायता मिल जायगी ।

यदि तेरा पाला ऐसे मनुष्यसे पड़े जिसमें मनुष्यता नाम-को भी नहीं है, तो तू ऐसा बन जा मानो तूने उसकी कोई बात सुनी ही नहीं और न उसने कुछ कहा ही है ।

यदि कोई तुमसे मीठी मीठी बातें करे तो तुम फूल न जाओ; क्योंकि निस्सन्देह मधुमें कभी कभी ज़हर भी हुआ करता है ।

यदि तू सफलता और मनोकामनाकी पूर्तिका इच्छुक है, तो प्रत्येक अमीर और ग़रीबसे अपनी बातोंको छिपाये रख ।

संग्रामके समय तू ठोस या बाणके समान बन जा और संसारमें कहावतसे भी अधिक विख्यात हो जा।

जो मनुष्य तेरे साथ सच्ची प्रीति रखता हो, उसके साथ तू भी सच्ची ही प्रीति रख। और पेट पापीके साथ ऊँटसे भी अधिक पेट पापी बन।

यदि कोई मनुष्य अनेक प्रकारके वस्त्रोंसे ढका हुआ हो, पर परहेज़गारीके वस्त्रोंको धारण न किये हो, तो वास्तवमें वह नग्न ही है।

—सलाह-उद्दीन-सफदी

नीति-रत्नावली ।

जिस बातका तू अभिलाषी है उसके लिये अकुला मत; और सब पर दया दृष्टि रख, ताकि तुझे भी किसी दयालु-से ही काम पड़े। संसारमें कोई हाथ ऐसा नहीं है कि उसके ऊपर ईश्वरका हाथ न हो; और कोई अत्याचारी ऐसा नहीं है कि उसे भी किसी अत्याचारीसे पाला न पड़े।

—एक कवि।

यदि तूने किसी मामिलेमें कुछ विचारा है तो दूसरेका मत भी उस मामिलेमें जान और उससे सलाह ले। क्योंकि दो मनुष्योंके विचार करनेसे कोई रहस्य छिपा नहीं रह सकता।

एक मनुष्य तो केवल एक दर्पणके समान है, जिससे केवल मुख देखा जा सकता है; किन्तु दो दर्पणोंके एकत्र हो जानेसे पीठ भी दिखाई पड़ती है।

—एक कवि।

तुझे ऐश्वर्य्य मिले तो किसी पर अत्याचार न कर; क्योंकि अत्याचारी बदलेके तट पर ही होता है।

तू अत्याचार करता है और सोता है; पर अत्याचारसे पीड़ित जागता रहता है, तुझे शाप देता रहता है; और ईश्वर तो हर समय सब कुछ देखता रहता है।

—एक कवि।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो दूर बसनेवाले लोगों-

की बातोंको तो अपूर्व समझते हैं, पर अपने निकट रहनेवाले लोगोंकी बातोंमें अपूर्वता ही नहीं पाते ।*

—इब्न-जौजी ।

जिस समय तेरे मित्र तुझसे पृथक हों, उस समय यदि तेरे अश्रु सूखे हों, तो प्रेमका जो दम तू भरता है, बिलकुल मिथ्या है ।

—मुहज्जिब उद्दीन याकूत ।

नेकी तो निस्सन्देह एक सुगम वस्तु है । अर्थात् मीठा वचन और भोजन ।

—एक कवि ।

जिस वस्तुके लिये तू कष्ट सह रहा है, यदि तू उसको प्राप्त कर लेगा तो फिर तुझे ऐसा प्रतीत होगा कि मानो उसके लिये तुझे कुछ कष्ट ही नहीं पहुँचा था ।

—फकअम समुदायका एक कवि

जैसे मार्गोंमें मिट्टी और धूल मारी मारी फिरती है, उसी प्रकार सुरमा भी अपने स्थानमें पड़ा रहता है । परन्तु जब सुरमा अपने स्थानको छोड़ देता है तभी उसका आदर-सत्कार होता है । यहाँ तक कि लोग उसको पुतली और पलक के बीचमें रक्खे हुए फिरते हैं ।

—एक कवि ।

जब कि तू किसी मामिलेमें ऐसा अधीर हो जाय कि भलाई, बुराई न सूझ पड़े, तो ऐसे समयमें तू अपनी इच्छाका विरोध कर; क्योंकि इच्छा ही लोगोंको संकटमें डालती है ।

—एक कवि ।

* घरका जोगी जोगड़ा, आन गाँवका सिद्ध ।

जब कि तू किसी मित्रको भूल जाना चाहे तो बहुत दिनों तक उससे मत मिल।

जुदाईके सिवा कोई और चीज तुझसे तेरे मित्रको भुलवा नहीं सकती; और अधिक प्रयोगके सिवा किसी अन्य उपायसे तेरा कपड़ा पुराना नहीं हो सकता।

—एक कवि।

मैं अपने चचाके पुत्रको, जो कि गड्ढेके किनारे जाता है, धक्का नहीं देता, चाहे वह मुझे हृदयबेधक गालियाँ ही क्यों न दे।

—मुहम्मद-बिन-अब्दुल्ला।

मेरा हृदय विशाल है। इसलिये मैं ऐसा नहीं हूँ कि बदला लेनेके विचारसे गाली-गलौज करूँ।

—फकअम समुदायकका एक कवि।

तू कालके विग्रहमें ऐसा भयभीत न हो कि मानो तू उससे अपने रोगको छिपाता है।

—जरयत-बिन-इल-अशीम।

निस्सन्देह छोटीसी बात बड़े भारी विग्रहको खड़ा कर देती है। और यदि ईश्वर चाहता है, तो बलवान् पुरुष हीन हो जाता है।

—एक कवि.।

यद्यपि नवयुवकमें इतनी योग्यता होती है कि वह संकल्पको पूरा कर सके, तथापि निर्धनता कभी कभी नवयुवकको उसके संकल्पकी पूर्त्तिसे रोक देती है।

—एक कवि।

जब कभी तू जातिका नेता बनना चाहे, तो शान्ति धारण करके बन; जल्दबाजी और गाली-गलौजसे नहीं।

शान्ति उत्तम है और उसका फल अज्ञानतासे श्रेष्ठ है। परन्तु उस अवसर पर शान्ति अच्छी नहीं जबकि अत्याचारके ढंग पर, तू धूपमें बैठाया जाय।

—मुरार-बिन-सईद ।

जो लोग अपने घरोंमें ही बैठे रहते हैं, वे संसारकी बातोंसे अंधे होते हैं और अपनी कमाई खो बैठते हैं।

—एक कवि।

ईश्वरकी सृष्टि अति विशाल और विस्तृत है; और प्रत्येक स्थानमें वह पालनहार है। सो जिन लोगोंका किसी स्थानमें घोर अपमान किया जा रहा हो, उनसे कह दो कि जब वे किसी स्थानसे तङ्ग आ जायँ तो उसे छोड़कर किसी अन्य स्थानके निमित्त प्रस्थान करें।

—एक कवि ।

विधाताकी अटल बातोंसे डरकर जो मनुष्य दूर भागना चाहता है, वह वास्तवमें स्वयमेव भागकर उन्हीं आपत्तियोंमें जा पड़ता है जो उसके निमित्त नियत हैं।

—एक कवि ।

सच्चे मित्रकी ओरसे जब एक भूल हो जाती है, तब उसके गुण सहस्रों सिफारिशें लेकर आया करते हैं।

—एक कवि ।

मैं उस मनुष्यके निमित्त प्रेम रखता हूँ जिसका बाहर और भीतर दोनों अपने मित्रके लिये शुद्ध हो।

ऐसे मनुष्यकी मित्रता सदैव बनी रहती है। पर क्या प्रत्येककी मित्रता ऐसी ही रहा करती है ?

—अहमद अरजानी ।

तू बादशाहकी मुसकुराहटसे घमंडी न हो जा; क्योंकि बिजलीके चमनेके समय ही बादल गरजा करता है ।

—इब्न दहान ।

हँसी ठट्ठेकी आदत मत डाल; क्योंकि इससे हानि होती है। और हँसी-ठट्ठा न करनेसे लोगोंका मान बढ़ता है ।

—इब्न-दहान ।

क्या तुम यह अभिलाषा रखते हो कि बुढ़ापेमें वैसे ही हो जाओ, जैसे युवास्थामें थे ? सो जान लो कि ऐसा होना असंभव है; क्योंकि पुराना कपड़ा नयेके समान नहीं हो सकता ।

—जाहिज मोतजली ।

यदि कोई मनुष्य विद्वत्तामें बढ़ा चढ़ा हो तो उसके दुबले पतले होनेसे उसे कुछ हानि नहीं पहुँचती ।

—आसिम ।

युद्ध ।

युद्धको पैदा करनेवाली बात छोटीसी होती है; और वह मनुष्य, जो युद्धका मूल कारण होता है, संग्राममें नहीं फँसता, बल्कि साफ अलग हो जाता है; और आफत दूसरे लोगों पर आती है।

जो लोग युद्धको अच्छा नहीं समझते, किन्तु लड़नेवालोंके निकट होते हैं, वे भी उसमें भाग ले लेते हैं। जैसे अच्छा नीरोग ऊँट खारिशको तो बुरा मानता है, परन्तु जब वह खारिशवाले ऊँटके निकट होता है, तब अपनी इच्छा न रखते हुए भी खारिशमें भाग ले लेता है।

—एक कवि।

अरबी काव्य-दर्शन ।

२—युद्ध ।

योद्धाका कर्त्तव्य ।

तू अपनी तलवारोंको बुरा भला कहनेवालोंकी गरदनें मारनेका पूर्ण अधिकार दे दे । और यदि तू अपमानजनक भूमिमें अचानक कभी उतर पड़े तो उसे त्यागकर अन्य स्थानकी राह ले ।

संग्रामके दिन यदि कोई कायर तुझे इस भयसे रोके कि समरसेवियोंके घमसानमें कदाचित् तू पिस न जाय, तो उसकी बातको तू मत मान; और उसकी बातकी तनिक भी परवा न करते हुए घमसान युद्धके समयमें भी अगली ही पंक्तिकी ओर बढ़ ।

तू अपने लिये ऐसा स्थान पसन्द कर जिससे तू कोई उच्च पद प्राप्त कर सके; नहीं तो समरक्षेत्रकी धूलकी छायामें खेत हो जा ।

मैंने चमकदार नेजे और हिन्दी * तलवारसे ही उच्च पद प्राप्त किया है, अपने सम्बन्धी अथवा किसी बड़े समूहके द्वारा नहीं प्राप्त किया ।

रणभूमिमें जब कि तलवारोंकी धारोंमें अग्नि बरस रही थी, ऐसे समयमें झट मैंने अपने बछेड़को एड़ लगाई और वह रणक्षेत्रमें जा कूदा ।

खेतमें जानेसे पहले मेरा बछेड़ा पंचकल्यान था । पर जब वह खेतसे लौटा तब रक्त और धूलके कारण पंचकल्यान नहीं प्रतीत होता था ।

मुझे तू तिरस्कारमय अमृत न पिला, बल्कि मानयुक्त इन्द्रायनका प्याला पिला । तिरस्कारमय अमृत नरक है और मानयुक्त नरक सर्वश्रेष्ठ स्थान है † ।

—अन्तरा ।

---

* प्राचीन समयमें भारतवर्षकी तलवारें समस्त अरबमें अति उत्तम समझी जाती थी । प्राचीन अरबी साहित्यमें अनेक स्थानोंमें भारतवर्षकी तलवारों और कहीं कहीं नेजोंका महत्त्वपूर्ण वर्णन है । अब इससे पाठक बड़ी सुगमतासे नतीजा निकाल सकते हैं कि जिन तलवारों तथा नेजोंका अरब ऐसे युद्धके पुतले महान आदर करते थे, वे कितनी अच्छी बनती रही होंगी । —अनुवादक ।

† रहिमन मोंहि न सुहाय अमिय पिआवत मान बिन ।
बरु विष देइ पिआय, मान सहित मरिबो भलो ।

लड़ाईके लिये भड़काना ।

[खुज़ाआ और असद नामके घरानेवालोंमें विग्रह हुआ। खुज़ाआ समुदायवाले हार गये। फिर उन्होंने किनाना नामी समुदायसे सहायता माँगी; क्योंकि वे लोग उनके मित्र थे। परन्तु किनाना और असद समुदायवालोंमें घनिष्ट संबंध था; इसलिये वे खुज़ाआके सहायक बनकर असद समुदायवालोंसे नहीं लड़ सकते थे। इसी अवसर पर किनाना समुदायमेंसे शद्दाख नामक कविने खुज़ाआ समुदायवालोंको उत्तेजित किया था।

—अनुवादक ।]

खुज़ाआ समुदायके लोगों! तुम असद वंशवालोंसे लड़ो। तुममें उनकी लड़ाईसे कायरता न प्रविष्ट होने पावे।

वे लोग भी तुम्हारे ही समान हैं। उनके सिरों पर भी बाल ही हैं। और वे यदि मार डाले जायँ तो फिर जीवित नहीं हो जाते।

क्या हम खुज़ाआ समुदायवालोंकी माताके दास हैं? सो जब कि वे लोग किसीके साथ युद्ध ठानेंगे तो हमको भी घसीट ले जायँगे।

—शद्दाख-बिन-यामर इल-किनानी।

उच्च कुलोत्पन्नके निमित्त कालकी क्रूरताओंमेंसे एक क्रूरता यह भी है कि उसका ऐसे शत्रुसे पाला पड़े जिससे मित्रता किये बिना काम न चले।

—मुतनब्बी।

एक संग्रामका वर्णन ।

हमने जुहल वंशवालोंकी छेड़छाड़की ओर पहले इस विचारसे ध्यान नहीं दिया कि ये तो हमारे भाई ही हैं। और कुछ दिनों बाद समय इनको वैसा ही कर देगा, जैसे कि वे पहले (हमारे भाई) थे।

परन्तु जब उनकी ओरसे मामला ऐसा हो गया कि लड़ाई स्पष्ट रूपमें दृष्टिगोचर हुई और परस्पर वैमनस्यके सिवा कुछ और शेष न रहा, तब हमने उनको जैसेका तैसा बदला दिया।

हम भूखे शेरके समान क्रुद्ध होकर झपटे। फिर ऐसी तलवारें चलाईं, कि उनका कलेजा हिल गया और वे नम्र तथा विनीत हो गये।

हमारे भालोंकी मारसे ऐसा खून बहा जैसे भरी हुई मशकका मुँह खोल देनेसे पानी बहा करता है।

अज्ञानियोंकी अज्ञानताके अवसर पर जो मनुष्य सहनशीलता धारण करता है, निस्सन्देह उस मनुष्यको कभी कभी अधमताका भी मुँह देखना पड़ता है।

तेरा जो कार्य्य भलाईसे नहीं होता, वह लड़ाई अथवा बुराईसे ही होगा।

—फिन्द-उज़-ज़मानी।

गौरवके अनुसंधानके स्थान घोड़ोंकी पीठें हैं; और महासम्मानित पद तेज तलवारोंकी धारोंमें हैं।

—अबी बर्दी।

अति कष्टप्रिय पराक्रमी।

अति कष्टप्रिय पराक्रमी पुरुष जब किसी दुस्तर कार्य्यको ठानता है तब वह किसी मित्रकी सहायता नहीं चाहता।

जब वह किसी कार्य्यका संकल्प करता है तब उससे वह रोका नहीं जा सकता। और वह जो कार्य्य करता है, निर्भय होकर करता है।

वह अपनी प्रतिज्ञाको अपनी दोनों आँखोंके सम्मुख रख लेता है। और परिणामोंके विचारको भूलकर भी चित्तमें नहीं लाता।

वह अपने कार्य्यमें, अपनी आत्माके सिवा, किसी औरसे सलाह नहीं लेता। और न अपने कार्य्यमें, अपनी तलवारके दस्तेके सिवा, किसी औरको अपना साथी ही बनाता है।

—सम्राट बिन नाशिब।

कुलीन अ-दासी पुत्रकी महिमा।

अति कठिन दुःसाध्य कार्य्य केवल कुलीन और अ-दासी जननीका पुत्र ही किया करता है। वह पहले विपत्तियोंके पहाड़ोंको दूरसे देख लेता है और फिर कार्य्यमें कटिबद्ध हो जाता है।

हम अपनी तलवारोंको शत्रुओंमें बड़ी बुरी तरहसे बाँटते हैं। नतीजा यह होता है कि हमारे हिस्सेमें तलवारोंके दस्ते (क़बज़े) और शत्रुओंके हिस्सेमें तलवारोंके फल होते हैं।

—जाफ़र बिन-उलबत-उल-हारसी।

रणकुशल योद्धाओंकी सराहना ।

मेरा तन, मन, धन सब कुछ उन सवारों पर न्योछावर हो जिन्होंने अपने आपको मेरे विचारोंके अनुकूल साबित कर दिखाया है ।

वे सवार ऐसे रणवीर हैं कि मृत्युसे उस समय भी भय-भीत नहीं होते जब कि घमासान युद्धकी चक्की लोगोंको पीस डालती है ।

वे सवार भलाईके बदले बुराई नहीं करते और न निष्ठुरता-के बदलेमें करुणा ही दर्शाते हैं । उनके शौर्य्यको हानि नहीं पहुँचती, चाहे वे सदैव युद्धमें लड़ते ही क्यों न रहें ।

उन्होंने बक्रबाके चरागाह (चरी) की रक्षा ऐसे वारोंसे की है, कि तलवारके एक एक वारमें शत्रुओंके कई कई वीर एक साथ ढेर होते थे ।

तलवारके धनी होनेके कारण उन सवारोंने शत्रुओंके साथ झगड़ेका निपटारा किया और पागलपनकी दवा पागल-पनसे की ।

वे सवार ऐसे युद्धवीर और निडर हैं, कि जब किसी स्थानमें डेरा डालते हैं तब अपने ऊँटोंको खराब जगहमें नहीं चराते और न मित्रोंकी ही भूमिमें चराते हैं । बल्कि लड़ाई मोल लेनेसे भयभीत न होते हुए, अपने ऊँटोंको दुश्मनोंकी ही भूमिमें चराते हैं ।

—मजुल-उल-गौल-उस-तहवी ।

परस्पर युद्ध।

मैं अपनी सौगंद खाकर कहता हूँ कि अभी पक्षी मेरे समीपसे गये; और उन्होंने मुझे ऐसे मामलेकी सूचना दी, कि जिसकी अब कोई औषधि ही नहीं रही; क्योंकि अब पक्षी जा चुके हैं।

अब मेरा हाल यह है कि मुझे उन लोगोंके साथ मृत्युके प्यालोंको पीना-पिलाना पड़ रहा है, जिनका पिता और मेरा पिता एक ही है।

हम दोनों निज़ारको उस समय सहायतार्थ बुलाते हैं जब कि हम दोनोंके बीचमें ख़त्तीय अथवा भारतवर्षीय * भाले पर्वेके समान तन जाते हैं।

हम निज़ारके समान श्रेष्ठ हैं जिन (हम) पर पैग़म्बर हज़रत दाऊद साहबकी बनाई हुई अथवा सुग़ादकी तैय्यार की हुई ज़िरहें हैं।

जब हम उनपर आक्रमण करते हैं, तब वे ऐसी तेज़ तलवारोंको लेकर हमारे सम्मुख खड़े हो जाते हैं जो कि बाँहोंको साफ उड़ा देती हैं।

यदि हम उनके साथ तलवारोंसे लड़ते हैं, तो वे हमारे ही समान लोहेके वस्त्र धारण करके हम पर धावा कर देते हैं।

मेरे दुःखी रहनेके लिये यह बात पर्याप्त है कि मैं सदैव

---

* इस पद्यमें भारतवर्षके नेज़ों (भालों) का वर्णन है। किन्तु अन्य अनेक प्राचीन तथा अर्वाचीन अरबी पद्योंमें भारतकी तलवारोंका ही वर्णन है जो कि बहुत अच्छी समझी जाती थीं। —अनुवादक।

भालोंको देखता हूँ कि वे मेरे हाथों और बाँहोंके रक्तसे कुल्ली करते हैं ।

यदि मैं अपने भाइयोंसे लड़ूँ तो निस्सन्देह मैं उस मनुष्यके समान हूँ जो कि मृग-तृष्णामें पड़कर अपनी मशकका पानी गिरा दे ।

अथवा मैं उस स्त्रीके समान हूँ जो अन्य लोगोंके बच्चोंको तो दूध पिलावे और अपनी सन्तानको नष्ट करे ।

ए निज़ारके* पुत्रो ! मैं तुम दोनोंको उपदेश देता हूँ कि तुम दोनों उसका उपदेश ग्रहण करो जो तुम्हारा हितैषी, विश्वस्त और प्रेमी है ।

तुम मेरी उपस्थितिमें न लड़ो और न मेरे बाद बाण चलाओ । तुम दोनोंके लिये शोक है ।

क्या तुम दोनों अपने मामलेमें अग्नि (नरक)से नहीं डरते और स्वर्गमें ईश्वरके दर्शनकी अभिलाषा नहीं रखते ?

निस्सन्देह यद्यपि मैंने उनसे वैर रक्खा और उनपर अत्याचार किया, तथापि मेरा हृदय इस बातसे दुःखी है कि मैंने अपने ही कलेजोंको काटा है ।

इसलिये शोक क्यों न हो, जब कि मर्यादाकी रक्षाके समय मेरा पिता, उनका पिता, उनका मामा, मेरा मामा और उनका दादा, मेरा दादा है ?

---

* निज़ार लड़नेवालोंके पूर्वजका नाम था । और इसी नामसे उनका घराना प्रसिद्ध था ।

—अनुवादक ।

लम्बाईमें उनके और हमारे भाले बराबर हैं। वे हमारे ही समान हैं। मानों हम दोनों एक ही चमड़ेके चर्मरज्जु हैं।

—उदैल-बिन-इल-फ़रख़।

हमारी हीनता।

[कविके ३० ऊँट, जुहल समुदायमेंसे लक़ीता घरानेके लोगोंने लूट लिये। कविके समुदायमें यद्यपि बहुतसे लोग थे, तथापि उन्होंने सहायता देनेका साहस न किया। बादको उसने माज़िन नामकी एक बहादुर जातिसे सहायता माँगी। उन्होंने लूटनेवालोंके १०० ऊँट लूटकर कविको दे दिये। इसी पर माज़िनकी प्रशंसा करते हुए अपने समुदायवालोंकी हीनताका विलक्षण चित्र कविने खींचा है

—अनुवादक।]

यदि मैं माज़िन नामके समुदायमेंसे होता तो जुहल बिन शैबानमेंसे लक़ीता नामक वंशके लोग मेरे ऊँटों को लूटकर न ले जा सकते।

और यदि ले भी जाते तो उसी समय मेरी सहायताके लिये एक ऐसा समूह उठ खड़ा होता जिसके रणसेवी साधारणतया सरल स्वभावके हैं, किन्तु आत्म-गौरवके अवसर पर युद्धमें नृशंस हैं।

माज़िन जातिके लोग ऐसे वीर हैं, कि जिस समय लड़ाई उनको अपनी डाढ़ें दिखाती हैं—अर्थात् घोर युद्धका समय होता है, उस समय भी उनका दिल नहीं दहलता; बल्कि वे बड़ी

निर्भयताके साथ झुण्डके झुण्ड और एक एक भी लड़ाईके समय शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं ।

उनका कोई भाई जब विपत्तिमें उनकी दुहाई देता है, तब वे उससे किसी प्रकारका प्रश्न नहीं करते; बल्कि उसी समय तन्मय होकर उसकी सहायतामें लग जाते हैं ।

परन्तु मेरी जातिके लोग यद्यपि संख्यामें अधिक हैं, तथापि किसी छोटीसी लड़ाईमें भी वे किसी कामके नहीं हैं । बल्कि मेरी जातिके लोगोंका हाल तो यह है कि अत्याचारियोंके अत्याचार पर भी, वे क्षमाकी दृष्टि रखते हैं और बुराई करनेवालोंके साथ भी भलाई ही करते हैं । मानों सृष्टिके रचनेवालेने जिन मनुष्योंको पैदा किया है, उनमेंसे इनके सिवा किसी औरको अपनेसे डरनेके लिये बनाया ही नहीं । *

क्या ही अच्छा हो कि मुझे इनके बदले एक ऐसी जाति मिल जाय, जिसके लोग, जब घोड़ों और ऊँटों पर सवार हुआ करें, तब खूब ही लूट मार किया करें ।

—क़ुरैत-बिन-उनैफ़ ।

मेरी मृत्यु उसकी आँखोंमें इस प्रकार छिपी हुई है, जैसे तलवारकी धारमें मृत्यु छिपी रहती है ।

—सिर्री रफा ।

---

* ध्यान रहे कि कविका कथन अपने समुदायके विषयमें व्यङ्गरूपमें है ।

—अनुवादक ।

पिताका बदला।

[कवि मसूरके पिताको शत्रुओंने मार डाला। तत्पश्चात् शत्रुओंने चाहा कि मसूर धन लेकर बदलेका विचार छोड़ दे और दयासे काम ले। मसूरके कुछ सम्बन्धियोंने भी मसूरको ऐसा ही करनेके लिये जोर दिया। पर मसूरने किसीकी भी न सुनी और निम्न-लिखित भावकी कविता बड़े साहसके साथ कही।

—अनुवादक।]

उस मनुष्यके पश्चात् जो कि कुवैकब पहाड़की घाटीमें मिट्टी और सख्त पत्थरकी कबरमें गड़ा है, मुझसे घातकके निमित्त कृपालुतासे काम लेनेके लिये आशा क्योंकर की जा सकती है ? ऐसे अवसर पर तो मेरी कृपालुता यही है कि मैं बदला लेनेमें कोई कसर उठा न रक्खूँ।

ऐ चचेरे भाइयों ! यदि मैंने आज या कल तक बदला नहीं लिया, तो कुछ हर्ज नहीं। समय तो बहुत पड़ा हुआ है; किसी न किसी दिन बदला ले ही लूँगा।

ईश्वरकी सौगन्द, यदि मैं घातकको शीघ्र न मारूँ अथवा मैं ही न मारा जाऊँ, तो मेरी जाति मेरा तिरस्कार कर दे और मुझे किसी लड़ाईके निमित्त न बुलावे।

जिनके बाप अथवा भाई पर ऐसी विपत्ति नहीं पड़ी, वे लोग मुझसे कहते हैं कि कुछ दण्ड लेकर ही निपटारा कर लो।

शत्रुओंने तो केवल एक बार ही हम पर युद्धका भार रक्खा; किन्तु हम शत्रुओं पर सदैव युद्धका भार रक्खा करेंगे।

—मसूर-बिन-हुदवा।

समरस्थलमें मरना।

जो लोग जैशान नामके रणक्षेत्रमें खेत हुए हैं, उनकी माताएँ क्यों न दुःखी हों ? क्योंकि वहाँके युद्धस्थानमें प्रभुताका बड़ा विध्वंस हुआ है।

उन समरसेवियोंकी छातीमें भाले घुसे हुए थे। लेकिन ऐसे हृदय-विदारक समयमें भी उन्होंने मैदान छोड़नेसे इन्कार किया। और यह बात भी स्वीकार न की, कि मृत्युके भयसे किसी सीढ़ी पर चढ़ जायँ। निस्सन्देह यदि वे रणबाँकुरे भाग भी जाते तो भी आदरणीय रहते *। परन्तु उन्होंने रणभूमिमें धैर्य्यको मृत्युसे श्रेष्ठ समझा। (अर्थात् समरस्थलमें ही काम आये।)

—उम्म-उस-सरीह (स्त्री)

जब कोई मनुष्य तेरी मानहानि करे तब तू भी उसकी मानहानि करे, चाहे उससे सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही अधिक क्यों न हों।

यदि तू ऐसा शक्तिशाली नहीं है कि उसकी मानहानि कर सके, तो तू उससे उस समय तक कुछ मत कह जबतक कि तू उसके लिये शक्तिशाली न हो जाय।

—औस-बिन हंबा।

---

* अरबीमें एक कहावत है:—अल फ़िरारो फ़ी वक़्त ही आफ़रून—अर्थात् समयके अनुसार भागना भी विजय है। —अनुवादक

एक घायल रणधीर और उसकी पत्नी ।

मेरी पत्नीने देखा कि मेरे साथवाले सवार रणक्षेत्रमें खेत हुए, और घावोंकी बौछारसे मैं मूर्छित हूँ ।

अतः प्रातःकाल अपनी अज्ञानताके कारण वह मुझको बुरा भला कहती हुई आई और अपनी मूढ़ताके कारण बुरा-भला कहती हुई मुझको निकम्मा बतलाती थी । मैंने उससे कहा, कि मैं ही आदि मनुष्य नहीं हूँ, जिसको काल और उच्च कुलके रणसेवियोंने आज दुःख दिया है ।

मैं उनसे लड़ता रहा । यहाँ तक कि सेनाके केन्द्रस्थानमें वे एकत्र हो गये । घोड़े रक्तके बहावमें तैरते थे । हमारे भालों और तलवारोंकी मारामारका यह हाल था कि तमीम समुदायके वीर मुआकस घरानेवालोंका आश्रय लेते थे ।

मुआकस घरानेवाले बड़े रण-धनी हैं । ऐसे समर-सेवियोंसे मैं कभी नहीं लड़ा था । इनके अतिरिक्त जिनसे अब तक लड़ा हूँ , उनका यह हाल होता था कि उनके कुछ घोड़े तो स्वयं भाग जाते थे और और कुछ भगा दिये जाते थे ।

जब कि दोनों ओरके रणकुशलोंकी मुठभेड़ हुई तो प्रत्येक-ने नेजाबाजीके हाथ दिखाये । घोड़े धूलमें लगामको खूब चबाने लगे ।

फिर युद्धस्थलमें धूलसे घोड़ोंकी आकृति बदल गई थी और उनके शरीरमें बहुतसे घाव हो गये थे । इसी समय एक मुख्य सरदार पर मैंने एक ऐसा वार किया कि वह

औंधे मुँह तृणके समान पृथ्वी पर आ लगा। जबकि मैंने उस सरदार पर चोट की थी, उस अवसर पर मेरे साथ हनीफ़ा समुदायके शेर थे जिनके सिरों पर खोद (लोहेकी टोपी) के चिह्न हैं।

हनीफ़ा समुदायके लोग ऐसे हैं कि जब वे जिरहबकतर और खोद पहनते हैं, तो चमकते हुए तारोंके समान प्रतीत होते हैं।

यदि मैं जीता रहा, तो अपनी ऊँटनीको ऐसे संग्रामके लिये कसूँगा जिसमें बहुतसा धन प्राप्त हो, अथवा मैं पुण्यात्माकी मृत्यु मरूँ।

—कतादा-बिन-सलमा।

मेरा संग्राम।

आज मैं ऐसा घोर युद्ध ठानूँगा कि मेरे धैर्य्यके सम्मुख बड़े बड़े प्रतिष्ठित प्राचीन योद्धा भी तुच्छ प्रतीत होंगे।

जब मैं अपनी तेज तलवार लेकर लोगों पर चढ़ाई करूँगा, तब उनके गलोंसे खून बहाकर ही छोडूँगा।

मेरी चढ़ाईके समय बहुतसे सरदार मुझे देखते ही अपने अस्त्र शस्त्र रख देंगे और अपने आपको भागनेके लिये उत्तेजित करेंगे।

मैं वह शूर वीर हूँ जो युद्धकी अग्निको प्रज्वलित करता है, लोगोंकी नाकोंको रगड़ देता है और उनको तथा उनके घोड़ोंको कालके हवाले कर देता है।

जब कि समर-स्थलमें खूब धूल उड़ रही हो और अस्त्र-शस्त्रकी चमक अग्निकी लपटके समान प्रतीत होती हो, ऐसे समयमें समर-स्थलमें मेरा साहस देखकर मृत्युका भी कलेजा दहल जाता है।

जिस समय मेरे शत्रु योद्धा निकट होकर अपने आसमानी रङ्गके नेजोंसे अपने शत्रुओं पर वार करते हैं, उस समय तो मुझे लड़नेमें खूब ही मजा मालूम होता है।

अनेक बार धूलसे भरे हुए मैदानमें जा कूदा हूँ, पर कभी तनिक भी नहीं हिचका। समर क्षेत्र ही मेरा आदर्श है, यहाँ तक कि मैं सदा उसीकी खोजमें लगा रहता हूँ।

मैं अवश्यमेव ऐसे कार्य्य करूँगा जो अद्वितीय होंगे और पुस्तकोंके पृष्ठोंमें लिखे जायँगे।

मैं निस्सन्देह रण-स्थलमें घुस जाऊँगा, और ऐसी मार-धाड़ मचाऊँगा कि सारी नदियोंमें रक्त ही रक्त बह चलेगा, क्योंकि रक्तकी लहरें मेरे आनन्दको बढ़ा देती हैं।

निस्सन्देह मेरे रण-स्थलमें इतनी धूल उड़ेगी कि उससे आकाश-मण्डलमें एक परदा छा जायगा और सारा आकाश-मण्डल काली रात्रिके समान बन जायगा।

मेरे असली घोड़ेके सिवा, मेरी प्रत्येक लड़ाईमें किसी अन्यको मेरे साथ सहानुभूति नहीं; क्योंकि सच तो यह है कि तलवार भी मेरे क्रोधकी शिकायत करती है।

—अन्तरः।

हमारा शौर्य्य।

हे प्रिये सलेम! मैं तेरे मङ्गलका अभिलाषी हूँ; सो तू भी मेरे मङ्गलकी अभिलाषिणी हो। और यदि तू भद्र पुरुषोंको मदिरा पान करावे, तो मुझे भी मदिरापान करा।

यदि तू किसी दिन लोगोंको किसी शुभ कार्य्यके निमित्त अथवा युद्धके लिये बुलावे तो मुझे भी उस समय अवश्यमेव बुला।

यद्यपि शुभ कार्य्यके हेतु लोग कठिन उद्योग करते हैं तथापि उसमें पहला तथा दूसरा दरजा हमारा ही हुआ करता है।

ज्योंही हमारा कोई सरदार मर जाता है, त्योंही हम अपने किसी बालकको अपना सरदार बना देते हैं। (अर्थात् हमारे बच्चोंमें भी सरदारीकी योग्यता है।)

युद्धके दिन निस्सन्देह हम अपनी जानें सस्ती कर देते हैं: पर शान्ति-कालमें उनका मूल्य बहुत अधिक होता है।

शत्रु जब युद्धमें योद्धाओंको ललकारते थे, तब हमारे ही पूर्वज घोड़ोंसे उतरकर पैदल * मुठ-भेड़ करते थे।

जब कि अन्य शूरवीर तलवारोंकी धारोंसे भयभीत होकर खेतमें कतराते हैं, ऐसे समयमें भी हम अपनी तलवारें हाथमें लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं।

---

* युद्धमें दूरसे बाणों द्वारा लड़ने, अथवा घोड़ोंपर सवार होकर नेज़ों और तलवारोंसे लड़नेके बदले, तलवार लेकर पैदल लड़ना अधिक प्रशंसनीय समझा जाता था। और वास्तवमें यह शौर्य्यका बड़ा भारी चिह्न है। —अनुवादक।

अनेक बार जब हमने युद्ध ठाना है तब उसका यथायोग्य ही निपटारा किया है, और हमारी कुलश्रेष्ठता तथा हमारी तलवारें सदैव हमारे अनुकूल ही रही हैं।

हम ऐसे सहनशील हैं कि चाहे हमपर कैसी ही विपत्ति क्यों न आवे, हमारी स्त्रियाँ मृतकोंके लिये रोया नहीं करतीं।

—कैम वंशका एक कवि।

हमारा प्रशंसनीय ग्रामीण जीवन।

नागरिक जीवन जिसको भाता हो, भावे। हे लोगों! भला ग्रामीण होनेकी हालतमें हमें कैसा पाते हो?

जिसके घरमें गधोंके बच्चे बँधे हों, बँधे रहें। हमारे यहाँ तो अच्छे घोड़े और लम्बे भाले हैं।

जब हमारे घोड़े जनाब नामी समुदायको लूटनेके लिये उद्यत होते हैं, तब जहाँ कहीं वह समुदाय होता है वहीं पहुँचकर उसपर छापा मारते हैं।

हमारे घोड़े ज़िबाब और जअ्बः नामके सुप्रतिष्ठित समुदायों पर भी डाका डालते हैं जो कि घरोंमें रहते हैं। और उनमेंसे जो मर जायँ वे मर जायँ, हमें कुछ चिन्ता नहीं।

लूट-मारके लिये जब कोई और नहीं मिलता, तब हम अपने भाई-बन्दों पर ही छापा मारते हैं।

—क़िनामा।

युद्ध-ताण्डव ।

ईश्वरकी सौगंद, यदि वह (शत्रु) एकांतमें मिले तो हम दोनोंकी तलवारें उसीके साथ जायँ जो हममेंसे प्रबल हो ।

—इब्न ज्याबः ।

मैंने उन (अपने सम्बन्धियों) की हत्या करके अपने क्रोधकी अग्नि शांतकी है। परन्तु वास्तवमें अपनी उंगलियोंको ही मैंने काटा है ।

कैस-बिन जहैर ।

जो मुझसे नहीं डरता, मैं भी उससे नहीं डरता। और न मैं किसीके लिये वह निर्देश करता हूँ जो निर्देश वह मेरे विषयमें नहीं करता ।

—उबई-बिन-हमाम ।

जब युद्धके समय कालके दाँत तुझको काटें तो तू भी उसको उस समय तक काटता रह जब तक काल तुझको काटता रहे ।

—जरयत बिन इल-असीम ।

शृंगार ।

इसमें सन्देह नहीं कि प्रेमी ही प्रेमका मीठा स्वाद चखता है; क्योंकि भूमण्डल पर उससे बढ़कर बुरा मनुष्य कोई नहीं; क्योंकि प्रियाके वियोगके समय वह मिलनेकी अभिलाषामें रोया करता है और मिलापके समय वियोगसे चिन्तित होकर रोता है। सो उसकी आँखें वियोग और संयोग दोनों हालतोंमें गर्म ही रहती हैं।

—एक कवि।

अरबी काव्य-दर्शन।

३—शृंगार।

प्रेम।

एक दिन एक अनुरागशून्य हृदयवालेने कहा कि प्रेम तो कोई चीज ही नहीं है। मैंने उत्तर दिया कि यदि तुम प्रेमका रस चखते, तो जान लेते।

उसने कहा कि अनुराग क्या दिल्लगीके सिवा और भी कोई वस्तु है? सो दिल्लगी यदि न भाई तो उसकी ओरसे मुँह फेर लिया।

क्या रोने पीटनेके सिवा अनुराग कोई और वस्तु है? इसलिये जब जीने चाहा तब उसे रोक लिया।

इन परिभाषाओंको सुननेके पश्चात् मैंने कहा कि जब आपने अनुरागकी यह परिभाषा बतलाई है, तो वास्तवमें आपने अनुरागको पहचाना ही नहीं।

—अब्दुल्लाः कौरवानी।

प्रेमकी माया।

जो कुछ तू करती है, वह मेरी दृष्टिमें अति सुन्दर प्रतीत होता है *। और तेरे सिवा अन्य कोई यदि उसी कार्य्यको करता है तो वही मुझे अति घृणित जान पड़ता है।

—एक कवि।

प्रेमकी चञ्चल तरङ्गें।

अनुराग एक भड़कती हुई आग है, जो मुझमें बढ़ती ही जा रही है।

ऐ किसीके दिल! क्या तुझमें अनुरागी ऐसे अतिथिके निमित्त भी कोई स्थान है?

निस्सन्देह मैं तेरे दरवाजे पर खड़ा हूँ; और आशा करता हूँ कि तेरी ओरसे मुझे कोई उत्तर मिलेगा।

मुझको दुबलेपनका वस्त्र पहनानेवाली! तुझको कुशलता-का वस्त्र मुबारक (धन्य) रहे।

---

* इसी प्रकारका कथन एक उर्दू कविका है:—

तबीअतका अजब ढँग है कि हो माशूक़ कैसा ही।
बुरी भी हर अदा उसकी भली मालूम होती है।

भावार्थ:—तबीअतका ढंग विलक्षण है। वह यह कि चाहे प्रिय कैसा ही क्यों न हो, पर उसकी प्रत्येक बुरी बात भी भली ही प्रतीत होती है।

—अनुवादक।

मेरे शरीरमें तो पुराने चिह्नों अर्थात् हड्डियों और पत्थर-के सिवा कुछ शेष नहीं रहा। और इस सूखे पत्थरमें केवल साँसको ही अनुरागने बाकी रक्खा है।

मैंने तेरे लिये अश्रुओंको सस्ता कर दिया है। यदि तू न होती तो मेरे आँसू बड़े महँगे होते।

यदि तू अपने प्रेमके कपाट मेरे लिये खोल न देगी, तो मेरा दुर्भाग्य! और मेरा पतन!!

मेरी जान तेरे हाथमें है! यदि तू मेरे धनसे प्रसन्न है तो मेरा सारा धन भी तेरा ही है।

हे विधातः! मैं तेरे दरबारमें शिकायत करता हूँ। परन्तु तू तो जानता ही है कि मुझपर क्या बीत रहा है।

—बिहा-उद्-दीन-जुहैर।

प्रेम-प्रार्थना।

पृथ्वी पर ही बैठे बैठे मैंने तेरे निमित्त ऐसी प्रार्थना की है कि वह आकाशके कोने कोनेमें छा गई है।

साधु लोग नम्रतापूर्वक जो प्रार्थना किया करते हैं, उसे ईश्वर कभी भूलता ही नहीं।

ईश्वर तेरे दर्शनसे तेरे शुभचिन्तकोंके लिये आनन्द मंगल, की सामग्री एकत्र कर दे।

तेरे निमित्त ही मैं जो प्रार्थना करता हूँ, हे परमात्मन! तू उसको अच्छी तरह स्वीकार कर।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

प्रेम-वृत्त।

हे कान्ते! जबतक तु मेरी आँखोंसे ओझल रहती है, सारा संसार मुझे उजाड़ मालूम होता है। सो हे चन्द्रमुखी! तू बता कि कब तेरा दर्शन प्राप्त होगा।

मैंने अपनी जानको तेरे अनुरागमें खपा दिया है। सो मेरी प्यारी जान, मेरे निमित्त तू क्या करेगी?

मैं तो इसी बातसे प्रसन्न हूँ कि तू आनन्दपूर्वक जीवित रहे। मैं दुनियाँमें इसीसे संतुष्ट हूँ।

अब मैं अपने मोहको दूना कर दूँ तो क्या वह निरर्थक जायगा और क्या अश्रुओंके बहानेसे लाभ नहीं होगा?

तेरे सिवा यदि किसी औरने मेरे साथ अपना वचन पूरा किया है तो मैंने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं; और यदि किसी औरने बुलाया है तो सुना तक नहीं।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

मेरी कान्ता एक उज्ज्वल कुरता पहने हुए निकली। उसकी आँखें मतवाली थीं। मैंने कहा कि पास होकर निकले, पर सलाम भी नहीं किया, ऐसी सचमुच जब कि मैं तेरे सलामसे ही राजी हूँ।

—एक कवि।

प्रेम-निकेतन।

"मेरे हृदयमें प्रेमकी प्रचंड अग्नि प्रज्वलित है"—निस्सन्देह मैं ऐसी बात उस समय कह सकता हूँ जब कि यदि मेरा हृदय, केवल एक नेजेके लगभग दहकती हुई अग्निके निकट हो जाय तो उस अग्निको ही जला दे।

क्या यह न्यायकी बात है कि मैं तो तेरा दुखिया प्रेमी हूँ; परन्तु तुझसे न तो मुझको कुछ लाभ ही पहुँच रहा है और न हानि ही ?

यदि मैं रोगी हूँ तो सदैव रोगी ही बना रहूँ; और यदि मुझपर जादू किया गया है तो ईश्वर करे, मेरा जादू अच्छा होनेमें ही न आवे।

—एक कवि।

प्रेम-विनोद।

हे कान्ते ! तूने मेरे हृदयमें निवास किया और इसीमें तेरा गुप्त भेद है। सो ऐसा घर और ऐसे पड़ोसी दोनों धन्य हैं।

इसमें तेरे भेदके सिवा मैंने किसी औरको स्थान नहीं दिया है। तूही अपनी दोनों आँखोंसे देख ले कि क्या कोई और इसमें निवास करता है।

हे घातक ! मेरे अनहितमें भी जो कुछ तू करती है, मैं उससे प्रसन्न होता हूँ; और जो कुछ तू अच्छा समझती है, मैं भी उसे अच्छा ही समझता हूँ।

मेरा हृदय अंगारेके समान जलता हुआ है। पर ईश्वरकी सौगन्द, वह खिन्न नहीं है और न अपने वचनसे टलना ही चाहता है।

मैं अपने आपको ऐसी मृगनयनी पर न्योछावर करता हूँ जिसका प्रकाश चन्द्रमाके समान है और जिसको देखकर बुद्धि और आँखें हैरान हो जाती हैं।

यह एक अति अद्भुत दृश्य है कि उसके बालोंमें अग्नि और जल प्रतीत होता है; पर वास्तवमें न तो उनमें अग्नि ही है और न जल।

जिस रातको मैं जागता रहता हूँ, वह बहुत ही अच्छी होती है; क्योंकि उस रातमें मेरे अश्रु मेरे निमित्त कहानी कहनेवालेका काम देते हैं।

वियोगकी रात चाहे छोटी हो चाहे बड़ी, पर वह मेरी अभिलाषाओं और स्मृतिसे सहानुभूति रखती है।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

जिस दिन किसी कान्ताका कान्त अपनी कान्तासे रुष्ट रहता है और उसके वियोगमें पड़ा रहता है, कान्ता द्वारा उस दिनके किये हुए शुभ कार्य्यको ईश्वर स्वीकार नहीं करता।

—एक युवती स्त्री।

प्रेम-आलिङ्गन ।

हे मित्रो ! यदि मैं अपने विचारोंसे टल जाऊँ तो उच पदोंके निमित्त और प्रेमके मार्गमें मेरी प्रतिज्ञाएँ पूर्ण न हों।

तुमसे प्रेम करनेके बाद यदि मैं किसी अन्य पर मोहित हो जाऊँ, तो ईश्वर करे कि उच स्थानकी चोटियों तक मेरा साहस भी न पहुँचे। (अर्थात् मैं साहसहीन हो जाऊँ।)

यदि मेरे मोहकी अग्नि शान्तिसे बुझ जाय, तो ईश्वर मुझे किसी कार्य्यमें सफल न करे और न मेरी नीतियाँ ज्ञानका स्रोत बनें।

मैंने तो तुम्हारे प्रेममें अपनी सवारी त्याग दी है और अकेला हो गया हूँ; यहाँ तक कि पारितोषिकमें मुझे बीमारी मिली है।

तुमने अपनी शरणमें आनेवाले प्रेमीपर निस्सन्देह अत्याचार करनेका फैसला कर लिया है। सो हे अत्याचारियो ! अब तुम्हारे अत्याचारकी दुहाई है।

तुम्हारे प्रेममें प्रत्येक कड़वी वस्तु पर धैर्य्य धरता हूँ। सो हे भले लोगो ! तुम्हारे कारण दुःखमें भी मुझे कैसा अच्छा स्वाद मालूम होता है !

ईश्वर करे, तुम्हारा दिल उस प्रेमी पर पसीजे, जिसके स्वभावमें तुम्हारा प्रेम सृष्टिके आदिसे है।

जब मैं प्याससे कष्टमें होता हूँ और उस समय भी यदि तुम्हारी याद आ जाती है, तो शीतल जल तक पहुँचना भूल जाता हूँ ।

मेरा प्रेम जीवित है और मेरी शान्ति मर चुकी है । मेरे शरीरमें हृदय है, पर उसकी उपस्थिति भी अनुपस्थितिके बराबर ही है ।

अब उस जानके मामलेमें ईश्वरसे डरो, जो तुम्हारे शरण अथवा पड़ोसमें है । पड़ोसीके साथ नेकी करना एक प्रशंसनीय गुण है ।

अहा ! वह भरपूर आनन्द कैसा अच्छा था, जब कि बुरे दिन भी हँसमुख मुखड़ा दिखलाते थे ।

मना पहाड़के किनारेकी सुन्दर रात्रियाँ कैसी अच्छी और छोटी थीं, पर उनके वियोगके पश्चात् लम्बी हो गईं ।

वे लोग कैसे उदार हृदयके और प्रतापी थे जिन्होंने अपने सद्व्यवहारसे प्रत्येक कुलीनको अपना दास बना लिया था ।

वह अपनी तिरछी चितवनसे भयके बाणोंकी बौछार करते थे; और उनकी आँखोंमें लगे हुए सुरमेने बाणोंको अधिक विषैला बना रक्खा था ।

—इब्न मातूक ।

प्रेम-पत्रावली ।

(अनुरागीकी ओरसे)

हे प्राणोंकी जान ! तू अपने मिलनका दान उसको दे, जिसको तेरे वियोगने घुला दिया है । मैं पहले आनन्दमय जीवन व्यतीत करता था, पर आज मैं एक दीन-हीन दुखिया हूँ ।

मैं सारी रात जागता रहता हूँ और रात्रिमें मेरे दुःख ही मेरी कथाके वाचक होते हैं ।

सो ऐसे हीन दुखियापर दया कर जिसका हाल बहुत ही शोचनीय हो गया है ।

जब कि सबेरा होता है, उस समय प्रेमकी मदिरासे मत-वाला हो जाता है ।

(अनुरागिनीका उत्तर)

हे नाना प्रकारके दुःख सहनेवाले और अनुरागका दम-भरनेवाले ! क्या तू चन्द्रमासे मिलनेका अभिलाषी है ?

तू धोखेमें है । क्या कोई चन्द्रमासे अपनी इच्छाएँ पूर्ण कर सका है ?

मैंने तो तुम्हें सुनाकर बातों बातोंमें उपदेश दिया था कि अब थम जाओ, क्योंकि तुम मृत्यु और आपत्तिके चंगुलमें आ फँसे हो ।

अब तुमने मिलनका प्रश्न फिर उठाया, तो तुम्हें हमारी ओरसे बड़ी भारी हानि पहुँचेगी।

अब तुम्हारे लिये उचित यह है कि तनिक बुद्धिसे काम लो, और भली भाँति जान लो कि मैंने अपनी ओरसे तुम्हें उपदेश दे दिया।

उस ईश्वरकी शपथ, जिसने सारी वस्तुओंको उत्पन्न किया है और आकाश-मण्डलको तारागणसे सुशोभित किया है, यदि तुमने फिर कभी मुँहसे वह बातनिकाली जो अभी कही है, तो किसी वृक्षकी डाल पर तुम्हें फाँसी दे दूँगी।

(अनुरागीका प्रत्युत्तर)

प्रेमके कारण तुम मुझे मार डालनेकी धमकी देती हो; पर सच तो यह है कि मृत्यु तो एक दिन आवेगी ही; सो मरना मेरे लिये वस्तुतः आनन्द दायक है।

जो अनुरागी कान्ताके घरसे निकाला और दुतकारा गया है, वास्तवमें मृत्यु उसके लिये चिर आयुसे अधिक उत्तम है।

जिस मनुष्यके सहायक थोड़े हैं, यदि तुम उससे मिलने जाओ तो बहुत अच्छी बात है; क्योंकि वास्तवमें जो मनुष्य दूसरोंकी भलाईमें लगता है, वह धन्यवादका पात्र होता है।

यदि तुमने मुझे मार डालनेका निश्चय किया है, तो मैं हाजिर हूँ; क्योंकि मैं तो तुम्हारा दास हूँ। और दास तो कैदमें होता ही है।

मैं तो तुम्हारे लिये अति व्याकुल हूँ, पर तुम्हारे मिलनेकी कोई राह सूझ ही नहीं पड़ती। हाँ, व्याकुलचित्त भला क्योंकर कोई उपाय सोच सकता है ?

हे ज्ञानकी मालिका ! तुम मुझपर दया करो; क्योंकि जो मनुष्य सौन्दर्य्य पर मोहित होता है, वह बेबस हो जाता है।

(अनुरागिनीकी ओरसे प्रत्युत्तर)

हे मिलनके भूखे अज्ञानी ! तू अनुरागके पंजेमें बुरी तरह फँसा है। क्या तू चतुर्दशीके प्रकाशमान चन्द्रमाके पास पहुँच जायगा ?

अब मैं तुझे ऐसी प्रज्वलित अग्निमें डालूँगी जिसकी लपट कभी ठण्ढी ही न होगी; और तुझे ऐसा घायल बनाऊँगी जिस पर अनगिनत तेज तलवारें पड़ी हों।

हे प्रेम करनेवाले ! मेरे मिलनसे पहले बड़ी कठिन दूरी है; और साथही साथ ऐसी बुरी और टेढ़ी उलझन है कि आयु पर्य्यन्त उसका सुलझना दुस्तर है।

तू अनुरागका परित्याग कर और उससे मुँह मोड़। मेरी यह शिक्षा मान ले, क्योंकि यह अच्छी वस्तु नहीं है।

—एक कवि।

प्रेमियोंके वियोगको छोड़कर संसारकी सारी आपदाएँ मुझको तो सुगम ही प्रतीत हुई हैं।

—एक कवि।

प्रेमका भिखारी ।

अनुरागी लोग विरहकी वेदनाकी शिकायत करते हैं। परन्तु मेरी अभिलाषा तो यह है कि परमात्मा वह सबका सब विरह-कष्ट, जो अन्य समस्त लोग इस मार्गमें उठाते हैं, मुझे अकेले ही उसका उठानेवाला बना दे।

ऐसी दशामें सारेका सारा प्रेम मेरे ही हिस्सेमें हो जायगा। यहाँ तक कि वैसा स्वाद न तो मुझसे पहले किसीने चखा था और न आगे कभी चखेगा ही।

—एक कवि ।

प्रेमका दास ।

वियोगने जबसे मेरे हृदयमें चिरकाल तक न बुझनेवाली अग्नि प्रज्वलित की, तबसे मैं दुर्बल हो गया हूँ। नहीं तो मैं इससे पहले बहुत शक्तिशाली था।

मुझे आशा थी कि जब बहुत समय बीत जायगा तब मेरा अनुराग लुप्त हो जायगा; किन्तु ऐसा न हुआ।

अनुरागने तो अब मेरे हृदयके बीचो बीच तथा अँतड़ियों-में भी मूसलाधार वर्षा कर दी है। पर बादमें भी रह रह-कर जोरकी झड़ी लगती है।

वास्तवमें उनका हाल बड़ा आश्चर्यजनक है जो मुझको आँख उठाकर बार बार देखते हैं; मानों मुझे देखनेसे पहले और बाद उन्होंने कोई आशिक (प्रेमी) देखा ही नहीं था।

लोग कहते हैं कि यदि तू अपनी कान्तासे नाता तोड़ ले तो तेरी सुध-बुध ठीक हो जायगी। परन्तु सच तो यह है कि यारसे नाता तोड़नेमें तो सुध-बुध और भी ठिकाने न रहेगी।

ऐ लोगो, क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं कि जो मेरा घातक है, मैं उसीके साथ प्रेम रखता हूँ? मानों उस घातक-को उसके घातके बदले मैं मित्रता देता हूँ।

मेरे प्रेमके प्रमाणोंमेंसे एक प्रमाण यह भी है कि मेरी कान्ताका कुटुम्ब मेरे हृदय और आँखोंमें मेरे कुटुम्बियोंसे भी अधिक प्यारा है।

—हुसैन-बिन-मुनैर।

प्रेमका वशीभूत।

मेरा एक मित्र है जिसका मैं न तो नाम ही बतलाऊँगा और न जिसकी कोई बात ही बतलाऊँगा।

अपने मनमें तो मैं उसका नाम लेता ही हूँ; पर यदि अपनी जबानसे भी उसका नाम ले सकता, तो मेरे लिये यह एक अच्छा ढंग था कि मैं उसका नाम लोगोंको बतला सकता।

मैं अपने मित्रके विषयमें यह बात पसन्द नहीं करता कि लोगोंमें उसकी चर्चा की जाय।

वह विख्यात तो है, किन्तु वह अज्ञात विख्यात है। अर्थात् उसका ठीक ठीक हाल किसीको मालूम ही नहीं है।

वह हिरन है; परन्तु जब मैं उससे मिलापके लिये संकेत करता हूँ, तो चीतेके समान हो जाता है।

अब मेरा हाल यह है कि अश्रु मेरे नयनोंसे बन्द नहीं होते और जीभ लड़खड़ा रही है।

वास्तवमें मेरी व्यथाकी कथाने मुझे बुरा-भला कहने-वालोंका भी बुरा हाल कर दिया और उनको बड़ी भारी परेशानीमें डाल दिया है।

मेरे शुभचिन्तको ! चुगुलखोरोंकी बातों पर तनिक भी ध्यान न दो, चाहे वे थोड़ा कहें चाहे ज्यादा।

मेरी राम-कहानी बहुत ही लम्बी-चौड़ी है और चुगुल-खोरोंके अनुमान तथा समझके बाहर है।

प्रेमके पथमें वचन भङ्ग करनेका पाप निस्सन्देह एक ऐसा पाप है जिसका कोई प्रायश्चित्त ही नहीं है।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

संसारके शूर-वीरोंसे हम लड़ते हैं और उनको मार डालते हैं; पर कोमलाङ्गी नवयौवनाओंकी तिरछी चितवन हमको शान्तिके कालमें ही मार डालती है।

—मुसलिम-बिन-वलीद।

अपनी प्रेम-कथा।

जब कि कोई उसके निकट नहीं होता, तब मैं उससे वार्तालाप करता हूँ और उत्तरके लिये कहता हूँ; किन्तु वह उत्तर नहीं देती।

जब कि मैं उसकी कोई मीठी बात सुनता हूँ तो घुल जाता हूँ। यही नहीं, बल्कि ऐसी भी संभावना है कि उसके मीठे वचनके कारण मिठास भी घुल जाय।

मैं जब उसको देखता हूँ, तब मेरा दिल लहराने लगता है; और प्रसन्नवृत्ति चित्त यदि नाचने लगे तो भी आश्चर्य्यजनक बात न होगी।

इस संसारमें मेरे भाग्यमें भी कुछ वस्तु आई है। किन्तु उसकी ओरसे तो मुझे कुछ भी नहीं मिला।

हे विधाता! तू ही बता कि मेरी जो यह दुर्दशा हो रही है वह किस पापके कारण है, जिसमें मैं उससे तोबा (प्रायश्चित्त-पश्चात्ताप) कर लूँ।

हे कान्ते! मेरी दुर्दशा देखकर तो समस्त लोगोंके हृदय पसीज गये हैं; परन्तु तू ऐसी निठुर है कि तेरा हृदय पसीजता ही नहीं।

हे कान्ते! तू ही बता कि तू मित्र है अथवा शत्रु; क्योंकि तेरे कार्य मित्रकेसे नहीं हैं।

कान्ते ! तेरे सम्बन्धमें मेरे शत्रु नाना प्रकारके हैं। कुछ तो डाही, कुछ बुरा-भला कहनेवाले, कुछ चुगुलखोर और कुछ रकीब (प्रतिद्वन्द्वी) हैं। परन्तु मैं उनकी करनी पर हँसता हूँ।

वास्तवमें मुझे तेरे विषयमें घोर संग्राम करना पड़ा है। सो आशा है, तेरे मिलनसे विजयी होनेका सौभाग्य प्राप्त हो जायगा।

थोड़े ही कालके पश्चात् मैं अपने अनुरागका गुप्त रहस्य तेरे सन्मुख रख दूँगा। परन्तु मैं नहीं समझता कि ऐसा करनेमें मैं कहाँ तक भलाई या बुराई करूँगा।

मैं तेरे सौन्दर्य्यको भलाईका शकुन समझता हूँ। क्योंकि इससे मुझे इस बातकी शुभ सूचना मिलती है कि मैं घाटेमें न रहूँगा।

—बिहाउद्दीन जहैर।

जिस स्थानमें मेरी प्यारी सुलेमा उतरती है उसे मैं बहुत प्यार करता हूँ; चाहे अकाल ही सदैव उस भूमिके स्वामी रहें। अर्थात् चाहे निरन्तर वहाँ अकाल ही क्यों न वास करता हो।

—एक कवि।

आदर्श प्रेम ।

हे सुन्दरी ! तू अपने अनुरागको मुझमें अधिक न बढ़ा; क्योंकि अनुरागकी अधिकतासे मनुष्य कुमार्गी हो जाता है ।

जब मामला हाथसे निकल चुका है तब भला मैं अनुरागको क्योंकर छिपा सकता हूँ ?

मैं तो अनुरागसे मर गया हूँ; पर मुझे धिक्कारनेवाले कहते हैं कि तू जीवित है ।

मेरे हृदयमें अनुरागका बसेरा तो बचपनसे है; और उसीका बहुत कुछ अंश अब भी बाकी है ।

हे लोगो ! तुम मुझसे यह न पूछो कि मैं किस बातपर मोहित हो गया हूँ, और वह कैसी है । वह सौन्दर्य्यमें सूर्य्यसे भी अपूर्व है और उसके ऊपर काले घूँघरवाले बालोंकी छाया है ।

वह मेरे लिये दुःखदायी तो है, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों परम्परासे ही वह मुझ पर कृपालु है ।

—बिहाउद्दीन ज़ुहैर ।

मैं उस व्यक्तिके प्रेमकी शिकायत करता हूँ जिसकी दूरीने मुझे दुर्बल कर रक्खा है, और मेरे हृदयमें ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर रक्खी है जो बुझाई ही नहीं जा सकती ।

—ख़तीरी वर्राक़ ।

प्रियाकी याद ।

[अरबमें हीरः नामी देशके बादशाहकी रानी अति सुन्दर थी । रानीका नाम 'हिन्द' था पर वह 'मुतजररिदः'के नामसे भी विख्यात थी । दैवयोगसे ऐसा हुआ कि एक बार महलके नीचेवाले बागमें रानी अपनी सहेलियोंके साथ सैर कर रही थी । वहीं रानी और कविकी आँखें चार हो गईं ।

कवि भी अपने शौर्य तथा कुटुम्बके लिहाजसे कुछ कम यश प्राप्त किये हुए न था । अतः दोनोंमें गाढ़ा प्रेम हो गया । कुछ काल तक बादशाहको बिल्कुल खबर ही नहीं लगी । बादमें जब एक दिन बादशाहने अपनी आँखोंसे दोनोंको एक साथ बैठे देखा तब कविको बन्दीगृहमें डाल दिया । उसी कैदकी हालतमें अपनी प्रेमिकाका ध्यान धरकर कविने जो सीधे सादे पद्य कहे थे, उन्हींका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है ।

—अनुवादक ।]

हे कान्ते ! यदि तू मुझे निर्धन समझकर धिक्कारती है तो मेरे साथ इराकको चल और वहाँसे मत लौट ।

अब तू मेरी आर्थिक पूंजी न देख, बल्कि मेरी श्रेष्ठता और मेरी भलमनसत पर दृष्टि डाल ।

मेरी अधीनतामें ऐसे तेज सवार हैं जो अग्निकी लपटके समान तेज हैं और नर घोड़े सदैव उनकी रानोंके नीचे रहते हैं ।

उन सवारोंकी जिरहों और कवचोंमें मजबूत कीलें हैं। उन्हींसे उन्होंने अपने घोड़ोंके किनारोंको बाँध लिया है जिसमें वे लड़ाईमें गिर न जायँ।

उन सवारोंने जिरह (कवच) पहनी; फिर गाती बाँधी; और गाती बाँधना प्रत्येक अस्त्र-शस्त्रधारीके निमित्त उचित है।

वह सवार सबके सब एकही रंग ढंगके बाँके तिरछे हैं और चर्ख पक्षीके समान बड़े उद्योगी हैं।

उन घोड़ोंके बहुत तेज दौड़नेके कारण बड़ी धूल उड़ा करती है और जिन पशुओं तथा ऊँटों पर वे छापा डालते हैं उनको झटपट उठा ले जाते हैं।

मैंने अपनी आँखें ऐसे सवारोंसे ठण्डी की हैं जिनसे अबीर-गुलालके समान सुगन्धि आती थी।

जब घोर अकाल पड़ता था उस समय मेरे पूर्वज धर्मार्थ कार्य्य करते ही देखे जाते थे।

मैं अपनी कान्ता 'मुतजरिद:' के पास निस्सन्देह उस दिन गया था जिस दिन वर्षा हो रही थी।

उसके कुच उस समय उभरे हुए थे और वह श्वेत रेशमी वस्त्र धारण किये हुए थी।

मैंने उसे परदेसे निकाला। फिर वह मेरे साथ चली और अति प्रसन्न होकर चली। मानों कता (भटतीतर) पक्षी पानीकी ओर जा रहा था।

मैंने उसका चुम्बन किया तो उसने ऐसी साँस ली जैसे हिरनका छोटा बच्चा भयके अवसर पर दम चढ़ा लेता है।

फिर वह मेरे पास आ गई और बोली कि मुनख्खल, तू दुर्बल क्यों हो गया है ? तेरा शरीर इतना गर्म क्यों है ?

मैंने कहा कि तेरे प्रेमके सिवा और किसने मुझे दुर्बल किया ? सो मेरा हाल न पूछ और चली चल।

मैं उससे प्रेम करता हूँ और वह मुझसे; पर उसके प्रेमकी सीमा यहीं तक नहीं है कि वह मुझसे प्रेम करती है; बल्कि उसकी ऊँटनी भी मेरे ऊँटके साथ प्रेम करती है।

मैंने केवल छोटे छोटे प्यालों-भर शराब नहीं पी; बल्कि बड़े बड़े प्यालों-भर शराब पी है।

जब मैं शराबमें खूब मतवाला हो जाता हूँ तब अपने आपको बड़ा भारी बादशाह समझता हूँ।

पर जब नशा उतर जाता है तब फिर उस समय ऊँटों और बकरियोंका स्वामी हो जाता हूँ।

हे कान्ते ! भला उसका कौन मित्र होता है जिसकी मिट्टी प्रेमने खराब कर रक्खी है ? और हे कान्ते ! दुःखी कैदीका भला कौन सहायक होता है ?

—मुनख्खलयशकरी।

वह प्रेम जिसका तुम दम भरते हो, यदि सच्चा होता तो तुम पानीपर भी चलनेका साहस करते।

—बिहा उद्दीन जुहैर।

प्रियाका बखान।

मैंने चन्द्रमा और कान्ताके मुखड़ेको देखा; सो दोनोंके दोनों दृष्टिमें चाँद ही प्रतीत होते थे।

मैं ऐसा दृश्य देखकर भौचक्कासा हो गया और बिलकुल ही न जान सका कि कौनसा आकाश-मण्डलका चन्द्रमा है, और कौनसा मनुष्य-जातिका।

यदि कान्ताके गालोंपर गुलाबकीसी रङ्गत न होती और वह मुझे अपने काले बालोंसे न डराती, तो मैं चन्द्रमाको कान्ता और कान्ताको चन्द्रमा ही समझ बैठता।

हाँ, आकाशका चन्द्रमा तो छिप जाया करता है, पर यह चन्द्रमा कभी छिपता ही नहीं। फिर भला छिप जानेवाले चन्द्रमाकी तुलना इस न छिपनेवाले चन्द्रमाके साथ क्योंकर हो सकती है?

—नज़र-बिन-शुमैल।

प्रेमीकी विरह-कातरता।

मेरी कान्ताने मेरे विषयमें न्याय नहीं किया; क्योंकि जब मैं उससे मिलना चाहता हूँ तब वह दूर हो जाती है। और जब मैं उससे दूर रहना चाहता हूँ तब उसका वियोग उससे मिलनेके निमित्त उत्तेजित करता है।

वह उस मनुष्यसे, जो उससे मिलना चाहता है, दूर भागती है। मानों वह उससे प्रीति रखती है जो उससे प्रीति नहीं रखता।

—एक कवि।

आप-बीती ।

मैंने अपने मित्रोंसे कहा कि तुम्हारे वियोगके कारण हमारी रात तो लम्बी होती है, काटे नहीं कटती। उन्होंने उत्तर दिया कि हमारी रात तो ऐसी छोटी होती है कि क्या कहें।

हे लोगों! हमारे मित्रोंकी रातके छोटे होनेका कारण यह है कि उनकी आँखोंमें निद्रा जल्द आ जाती है; और हमें तो नींद ही नहीं आती।

रात्रि जब हम अनुरागियोंके निकट आती है तब हम व्यग्र हो जाते हैं; क्योंकि वह हमारे लिये दुःखदायी है। पर जब रात होनेको आती है तब हमारे मित्र प्रसन्न होते हैं।

सो वह बात जो कि हमपर बीत रही है, यदि उनपर बीते तो निस्सन्देह बिछौनों पर हमारे मित्र भी करवटें बदलते रहें।*

—एक कवि।

---

* सच है:—

जिसके पैर न फटी बिवाई। वह क्या जाने पीर पराई।

—अनुवादक।

उलटा जप ।

मेरे मनमें सदैव उस प्यारीके मिलनेकी उत्कण्ठा रही, परन्तु परिणाम मेरी उत्कण्ठाके विरुद्ध ही हुआ; क्योंकि उसके वियोगकी लड़ी और बढ़ती ही गई ।

सो अब मेरे मनमें उसके वियोगकी चाह है, जिसमें उसका मिलन हो; और मेरी आँखें अश्रुओंकी धारा बहावेंगी, जिसमें आनन्द प्राप्त हो * ।

—अब्बास-बिन अहनफ़ ।

मेरी प्रियाका कथन है कि मेरा दूर रहना तेरे लिये अधिक आनन्ददायक है; क्योंकि सूर्य्य दूर न होता तो उसकी ज्योति तुझको जला देती ।

—ख़तीरी बर्रांक ।

---

* बिल्कुल इसी भावका उर्दूमें एक पद्य है:—

मांगा करेंगे हम भी दुआ हिज्र यारकी ।
आखिर तो दुश्मनी है दुआको असरके साथ ॥

भावार्थ:—मैं प्रियके वियोगके लिये ईश्वरसे प्रार्थना किया करूँगा क्योंकि मेरी प्रार्थनाका प्रभाव उलटा हुआ करता है । अर्थात् जब मैं मिलनका प्रार्थी था तब वियोगका मुँह देखना पड़ा । इसलिये अब जब कि वियोगकी प्रार्थना करूँगा तो उलटा प्रभाव होनेके कारण मिलना हो जायगा ।

—अनुवादक ।

सन्ताप।

ऐ नजद देशकी पुरवाई हवा ! तू नजदसे कब चली थी ? सुन, निस्सन्देह तेरे चलनेने तो मेरे ऊपर विरहकी तह चढ़ा दी हैं।

प्रातःकाल कुछ दिन चढ़े जब कुमरी बेतकी कोमल हरी भरी डालेपर बोली, तो मैं बच्चोंके समान रो पड़ा, अपने हृदय-को थाम न सका। और उस समय इतना व्याकुल हुआ कि मैं कभी उतना व्याकुल हुआ ही न था।

बहुतसे लोगोंने निस्सन्देह यह समझ रखा है कि कान्त जब कान्ताके पास होता है, तब उस कान्तका दिल दुःखी रहा करता है; और कान्ताके दूर रहनेसे कान्त कुछ शान्त रहता है।

मैंने प्रत्येक ढंगसे दवा की, लेकिन मुझे तो किसी प्रकार-से शान्ति न मिली। हाँ, फिर भी कान्ताका घर दूर होनेके बदले निकट होना अधिक उत्तम है।

पर कान्ताके घरके निकट होनेसे क्या लाभ, यदि कान्ता मिलनसार न हो ?

—अब्दुल्ला-दुमैनी।

प्रेमके मार्गमें जिसने दुःख भोगा है, वही उसको पह-चानता है।

—अबू अब्दुल्ला बगदादी।

आत्म-प्रमाद।

हे प्रिये! मुझको तेरे प्रेमने ऐसे स्थानपर खड़ा कर दिया जहाँ तू है। सो उस स्थानसे न तो आगेही बढ़ सकता हूँ और न पीछेही हट सकता हूँ।

जो लोग तेरे प्रेमके कारण मुझको बुरा-भला कहते हैं, उनको चाहिए कि वे दिल खोलकर मुझे बुरा-भला कहें; क्योंकि जब वे बुरा-भला कहते हैं तब तेरी चर्चा करते हैं जो मेरे लिये अति रुचिकर है।

मुझको जिस प्रकार शत्रु कष्ट देते हैं उसी प्रकार तूभी कष्ट देती है। इसलिये अब जब कि तू शत्रुओंके समान हो गई तो मैं अब शत्रुओंके साथभी प्रेम करने लगा हूँ।

जब तूने मेरा तिरस्कार किया तो मैंने अपने आपको अत्यन्त तिरस्कृत किया; क्योंकि जो तेरी दृष्टिमें तिरस्कृत है, वह प्रतिष्ठाका भागी नहीं हो सकता।

—अबुल शैम।

समर क्षेत्रमें बाण हमारे प्राणोंके घातक नहीं होते; पर वह तीर जो भँवोंकी धनुषमें लगाये जाते हैं, हमारा अन्त कर देते हैं।

—मुसलिम-बिन-वलीद।

प्रेम-पिपासु ।

हे कान्ते ! तेरे लिये मेरा वह हाल है जो किसी ऐसे प्यासेका होता है जिसने कि केवल एक ही बारकी प्यास बुझानेके लिये ऐसे स्थानमें पानी देखा हो जिससे पहले एक गढ़ा हो और उसमें भी मृत्युका भय हो ।

उस प्यासेने अपनी दोनों आँखोंसे ऐसा पानी देखा हो जिसके घाट तक पहुँचना कठिन हो और जिसे बिना पिये प्यासा लौट भी न सकता हो ।

—एक कवि ।

आत्म-विस्मृति ।

(क)

हे प्रिये ! मैं तेरे प्रेमके वशमें ऐसा हो गया हूँ जैसे नकेल-वाला ऊँट, कि जिधर इच्छा हो उसी ओर वह खींचा जा सकता है ।

मेरे हृदयमें जितना प्रेम है, वह सब प्रकट नहीं किया जा सकता; और जिन बातोंके छिपानेमें मैं अशक्त हूँ, उनमें एकता भी नहीं । ❀

---

* बोलन थों मैं रह ना सक्का
जीभ ना बने सहाई ।
सूरज दे रथ जोड़देयाँ ई
पी बद्दर्मा बिन्न माई ॥

—पूरण नाटक ।

मैं तुझसे मिलापकी वैसी ही अभिलाषा रखता हूँ जैसी कि एक प्यासा पानीकी, परन्तु उस प्यासेको कूआँ खोदते समय पानीसे भी पहले पत्थरकी ऐसी एक कड़ी शिला मिल जाय जिसको वह तोड़ ही न सके।

भला ऐसे निष्ठुर व्यक्तिसे क्या आशा की जा सकती है जो मेरी जान निकलती देखे तो कहे कि निस्संदेह यह स्वस्थ है और बड़े पक्के हृदयवाला है। * —असद समुदायका एक कवि।

(ख)

हे कान्ते ! तू झाऊके वृक्षोंसे ही पूछ ले कि क्या मैंने तेरे घरके टूटे फूटे चिह्नोंकी वन्दना नहीं की †, क्या मैं वहाँ टीलोंपर दुखियाके समान खड़ा नहीं हुआ, क्या खड़े होनेके समय खुश था, और फिर प्रातःकाल मेरी आँखोंसे क्या ऐसे आँसू नहीं बहे जो टूटी हुई लड़ीके मोतियोंके समान न थे। ‡

मैं लोगोंको देखता हूँ कि वे वसन्त ऋतु की अभिलाषा रखते हैं। किन्तु मेरे लिये तेरा मिलना ही वसन्त ऋतु है। +

---

* इधर जान मेरी है जोखोंमें, जालिम।
  उधर तू कहे—यह तो अच्छा भला है।

† माचीभूतं वनं सर्वं
  क शुचो मे न दृश्यते ?

‡ मुक्ताहारस्त्रुटितपतितः कोपने नेत्रयोर्मे।

+ लोको कहंदे आई वसंत,
  जद मेरो भी प्राणप्यारी आवे
  आवेतदही आई वसंत।

मैं देखता हूँ कि लोग अकालसे डरते हैं; परन्तु मैं जिस अकालसे डरता हूँ वह तेरा प्रस्थान है ।

ईश्वरकी शपथ, यदि मुझे इस बातसे दुःख पहुँचा है कि तूने मुझे कष्ट पहुँचाया है तो कुछ हर्ज नहीं; क्योंकि मैं इस बातसे प्रसन्न हूँ कि तेरे दिलमें मेरे विषयमें कुछ ख्याल तो पैदा हुआ ।

—एक कवि ।

अपनी दुःख-गाथा ।

मेरे हृदयमें तुम्हारे लिये अक्षय प्रेम है; और अपने लिये संकटमय अभिलाषा ।

मैंने तुम्हारे पास बहुत पत्र और दूत भेजे, पर वे मेरी व्यथाको भली भाँति दर्शा न सके ।

मेरे अन्तःकरणमें ऐसी ऐसी बातें भरी पड़ी हैं जिनकी मैं चर्चा ही नहीं कर सकता । यहाँ तक कि दूतको जतलाना अथवा पत्रों द्वारा ही उनको प्रकट करना उचित नहीं समझता ।

तुमने यह ख्याल कर लिया कि मैंने प्रतिज्ञाओंका भंग कर दिया है; पर वास्तवमें वह पिशुन पापी है जिसने अपने आपको तुम्हारा शुभचिन्तक जतलाकर मेरे विषयमें हलाहल विष उगला है ।

यदि पिशुन झूठा नहीं है, तो सम्भव है कि बेहोशीकी हालतमें रहा हो, अथवा हँसी ठट्ठेके समय शायद भूलसे प्रतिज्ञा-भंगका कोई शब्द उसके मुँहसे निकल गया हो।

प्रतिज्ञा-पालनका गुण जन्मसे ही मेरे स्वभावमें है। प्रेमके मार्गमें वचन-भंगका दोष मुझमें नहीं, और मेरा भाव कदापि तनिक भी बदल नहीं सकता।

तुम्हारे वियोगके पश्चात् मैंने जिस प्रकार प्रतिज्ञाका पालन किया है, उसका हाल मुझसे न पूछो, बल्कि अन्य लोगोंसे पूछो; क्योंकि अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनना मुझे बुरा मालूम होता है।

हे मित्रो! बताओ तो सही कि कब तक और कहाँ तक मैं अपनी दुःख-गाथा तथा संकेतकी बात तुम्हें प्रकट रूपमें सुनाता ही रहूँगा?

जबसे तुम्हारा बिछोह हुआ है, तबसे मेरा जीवन और मेरा संतोष दोनों अनाथ हैं; कोई इनका सहायक नहीं। और मेरे आँसू इन दोनों अनाथोंकी दशाको दर्शा रहे हैं।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

अपने अनुरागीके मार डालनेसे अनुरागिनीको पुण्य नहीं होता; बल्कि अनुरागी ही पुण्यका भागी ठहरता है।

—एकयुवती स्त्री।

मिलाप-याचना ।

मेरी कान्ताने मुझसे यह ठहराया कि जब तुम सोचोगे तब मैं स्वप्नमें तुमसे मिलने आया करूँगी; पर उसके प्रेममें मुझे नींद कहाँ ?

उस कान्ताका मैं प्रेमपात्र हूँ । सो वह मेरी घातक कैसे बन गई ? ईश्वरकी सौगन्द, यदि कोई मेरा वैरी ही होता तो भी वह मेरा घातक न बनता ।

उसके प्रेमके कारण धिक्कारनेवालोंने अनेक बार चौबीसों घण्टे मुझे बुरा-भला कहा; परन्तु किसी समय भी मैंने उनके बुरा-भला कहनेपर कान नहीं दिया ।

मेरे हृदयको अपनी तिरछी चितवनके बाण मारनेवाले ! क्या तूने मेरे हृदयको भी अपनेही हृदयके समान पत्थर समझ लिया है ?

तेरे प्रेमकी सौगन्द, यदि प्रेमके मार्गमें न्याय अत्याचारसे पूर्ण न होता, तो मेरी आँख तारे गिनते हुए ही सारी रात न काटती ।

—बिहाउद्दीन ज़ुहैर ।

मेरी यह आदत नहीं, कि मैं किसी भूमिकी मिट्टीको प्यार करूँ । बल्कि मैं तो वास्तवमें उसे प्यार करता हूँ जो उस भूमि पर उतरता है ।

—एक कवि ।

राम-कहानी।

मुझ पर दुःखोंका पहाड़ टूट पड़ा है, मैं वियोगसे खिजलाया हुआ हूँ, मेरे नेत्र अश्रु बहा रहे हैं और मेरा दिल जला जा रहा है।

परन्तु मुझ जैसे दुखिया पर अनुरागकी जलन और ज्यादा हो गई है; यहाँ तक कि सन्ताप और विलापके कारण मेरी दशा अधिक शोचनीय हो गई है।

हे परमात्मन! यदि मेरे लिये तनिक भी भलाई इसीमें हो, तो जबतक जानमें जान बाकी रहे, मेरे ऊपर दुःखोंकी ही मारामार रहे।

उस मृगनयनीके वियोगमें मेरा शरीर दुःखोंका घर बन गया है।

हे पुरवाई हवा! तू उस सुन्दरीके गृहकी ओर प्रस्थान कर और उस पर क्रोध कर; क्योंकि संभव है कि तेरे क्रोधसे उसका हृदय कुछ नर्म हो जाय।

जब उसका दिल नर्म हो जाय और वह तेरी बात सुनने लगे तो मीठे शब्दोंमें प्रेमियोंकी दुर्दशाकी भी चर्चा कर।

ईश्वर तेरा भला करे, तू मेरी भी चर्चा छेड़ना और पूछना कि क्या तुम्हें भी कुछ खबर है?

कि तुम्हारे वियोगमें तुम्हारे दासका क्या हाल है और किस प्रकार उसकी मिट्टी खराब हो रही है ?

उसने न तो तुम्हारा कोई क़सूर ही किया है, न अपनी प्रतिज्ञाही भङ्ग की है, न किसी अन्यके साथ दिल लगाया है, न कुपथ ही चला है और न किसी अन्य प्रकारकी ही गड़-बड़ी की है ।

इन बातोंको सुनकर यदि वह मुस्कराय, तो नर्मीके साथ कहना कि यदि तुम एक दिन उससे मिल लो तो भला तुम्हारा क्या बिगड़ जायगा ?

साथ ही साथ यह भी कहना कि निस्सन्देह वह तुम्हारा ऐसाही प्रेमी है जैसा कि होना चाहिए ।

अतः वह सारी रात जागता रहता है और रोता रहता है, यहाँ तक कि किसी समय भी चैन नहीं लेता ।

इन बातों पर यदि उसने प्रसन्नता प्रकट की तो अहो-भाग्य ! और यदि क्रुद्ध हुई, तो दम-दिलासा देकर कहना कि हम तो उसे पहचानते भी नहीं ।

—एक कवि ।

मैंने केवल मिलने अथवा केवल दर्शनमात्र करने पर ही सन्तोष किया; क्योंकि निस्सन्देह मित्रकी ओरसे थोड़ा भी बहुत है ।

—मुतनब्बी ।

दुःख-गाथा।

हे कोमलाङ्गी मृगनयनी ! तू मुझे और अधिक कष्ट देगी तो मैं तुझसे और अधिक प्रीति करूँगा; क्योंकि वह बड़ा मतिमन्द प्रेमी है जो प्रियाके दुःख देने पर उससे वैमनस्य रखने लगे।

हे वियोगकी रात्रि ! तू उसके लम्बे केशोंके समान हो गई तो अब मेरी निद्राँसी आँखोंके लिये प्रियाके वियोगकी दूरीके भी समान हो जा। (अर्थात् जिस प्रकार प्रिया मुझसे दूर है उसी प्रकार तू भी दूर हो जा।)

प्रियाके वियोगमें मेरा रोना भी बहुत लम्बा है और रात्रि भी बहुत लम्बी है। सो दोनोंकी लम्बाई एकही सी है।

रात्रिके तारोंका कैसा विचित्र हाल हो गया है कि ये अपनी जगहसे टलतेही नहीं। मानो ये अन्धे हैं कि इनका हाथ पकड़कर कोई ले जानेवाला ही नहीं है।

—मुतनब्बी।

वियोगको तो मैं खूब जानता हूँ, क्योंकि मैं नित्यप्रति ही उसका दर्शन किया करता हूँ। हाँ, वियोग यदि किसी की द्वारा जन्म लेता, तो मेरा जौआँ भाई होता।

—मुतनब्बी।

प्रेमीका शाप ।

हे परमात्मन् ! यदि तू मेरी प्रियासे मिलनेका आदेश नहीं करता, तो रक़ीबोंसे भी उसे न मिलने दे, बल्कि वे जिस अवस्थामें हों, उसी अवस्थामें उनकी जान निकाल ले ।

हे परमात्मन् ! यदि मेरा मिलना मेरी प्रियाके साथ नहीं होता तो क्याही अच्छा हो कि तेरी यह आज्ञा हो जाय कि कोई दो प्रेमी आपसमें न मिल सकें ।

—हिफ़ंजुल-अलीमी ।

लोग कहते हैं कि लैला काली-कलूटी है । किन्तु सच तो यह है कि यदि कस्तूरी काली न होती, तो महँगी न होती ।

—एक कवि ।

लोग कहते थे कि प्रियाके एक मासके वियोगसे मुझे कुछ दुःख न पहुँचेगा । यह सुनकर मैंने उत्तर दिया कि भला जब मुझे कुछ दुःख न पहुँचेगा तो फिर किसे दुःख पहुँचेगा ।

—इब्न-अबी-दवाकिल ।

किशोरि ! जिस दिन तू मुझे नहीं मिलती, वह दिन लम्बा हो जाता है और काटे नहीं कटता । पर जिस दिन मुझे तेरे दर्शन हो जाते हैं, वह अति छोटा प्रतीत होता है ।

—इब्न-अबी-दवाकिल ।

वैराग्य ।

ईश्वरकी ज्योति ।

मैंने गुरुजीकी सेवामें निवेदन किया कि मेरी स्मरण-शक्ति बिगड़ गई। इस पर उन्होंने मुझे यह उपदेश दिया कि पापोंको छोड़ दे:

क्योंकि विद्या ईश्वरकी ज्योति है और ईश्वरकी ज्योति पापीको नहीं मिला करती।

—इमाम शाफ़ई।

अरबी काव्य-दर्शन ।

४—वैराग्य ।

चेतावनी ।

सुबह और शामके आने और जानेने छोटेको जवान और बूढ़ेको नष्ट कर दिया ।

हम अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिमें रात-दिन सब एक कर देते हैं । परन्तु जो मनुष्य जीवित है, उसकी आवश्यकताएँ पूरी ही नहीं होतीं ।

जीवितके बच्चोंको मृत्यु उतार देती है, और मृत्यु ही उसको उसकी इच्छासे रोक दिया करती है ।

मनुष्य जब मर जाता है, तब उसीके साथ उसकी आवश्यकताएँ भी मर जाती हैं । किन्तु जबतक वह जीवित है, तबतक उसकी कोई न कोई आवश्यकता बनी ही रहती है ।

जिस प्रकार लुक़मानने अपने पुत्रको उपदेश दिया था, उसी प्रकार मैंने भी अपने पुत्रको उपदेश दिया है। इसी लिये मैं भी एक बड़ा अच्छा उपदेष्टा हूँ।

हे मेरे पुत्र! अनेक लोगोंके साथ सलाह करनेसे भेद खुल जाता है। इसलिये तू अपना भेद गुप्त रखकर स्वयमेव सोच लिया कर।

तेरा भेद वह है जो एक मनुष्यके (तेरे) पास है; और जो भेद तीन* (अर्थात् बहुतसे लोगों) के समीप पहुँचा, वह कदापि छिपा नहीं रह सकता।

जिस प्रकार किसी किसी समय चुप रहनेमें भलाई है, उसी प्रकार किसी किसी समय बोलनेमें भी बुराई है।

—सल्तान-उल अरबी।

जब कि समयका यह स्वभाव नहीं कि वह हमारे जीते-जागते मित्रको सदैव हमारे पास बनाये रक्खे, तो भला यह क्योंकर हो सकता है कि हम अपने पूर्व मित्रकी याचना उससे करें?

जिस कार्य्यसे तेरे मनमें स्वभाविक घृणा हो, तू उसे यदि बनावटी रूपसे करेगा, तो वह शीघ्र परिवर्तनका मुँह देखेगा।

—मुतनब्बी।

---

* "षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः"

छः कानोंमें गया मन्त्र (गुप्त बात) खुल जाता है।

खिले हुए पुष्प ।

काल जिसको चाहता है, बदल देता है; परन्तु मेरी आत्माको नहीं बदल सकता । और मैं अन्तिम आयुको प्राप्त हूँगा, किन्तु मेरी आत्मा युवा ही रहेगी ।

मुझमें गुप्त बातके लिये एक स्थान है, जहाँतक न मेरे किसी स्नेहीकी पहुँच है और न मदिराका ही प्रभाव पड़ सकता है ।

जो मनुष्य अति शान्तिप्रिय होता है, उसका परिणाम भी उसी मनुष्यके समान होता है जो कि बड़ा समर-प्रेमी होता है ।

मनुष्यका धैर्य्य उसकी प्रशंसामें गिना जाता है; और उसका रोना-चिल्लाना उसका अवगुण समझा जाता है ।

प्रत्येक मनुष्यको क़बरमें ऐसे लेटना होगा कि वह अपनी जगह पर ही करवट तक न बदल सकेगा ।

प्रतिष्ठित होकर जीवित रह । अथवा उदार होकर लहराते हुए झंडेके नीचे भालोंके घावोंसे स्वर्गलोककी राह ले ।

हे मेरी आत्मा ! तू उस प्रकार मत जीवित रह जिस प्रकार अब तक प्रशंसारहित होकर जीती रही है । और हे आत्मा ! जब तू मरे तब इस प्रकार मरे, मानों मरी ही नहीं ।

कालने मुझको अकेला (बिना इष्टमित्रके) देखा और दुःखको भी अकेला देखा । इसलिये उसको मेरा मित्र बना दिया ।

मनुष्योंमें ऐसे लोग भी हैं जो अपने सरल जीवनमें ही सन्तुष्ट हैं। उनकी सवारी उनके दोनों पैर हैं और उनका ओढ़ना-बिछौना मिट्टी है।

अच्छे घोड़े और भाले किसी कामके नहीं, यदि उनके लिये अच्छे ही सवार और अच्छे ही भाला चलानेवाले न हों।

जिस मनुष्यके मुँहका स्वाद रुग्ण होनेके कारण कड़ुवा हो, उसको मीठा शर्बत भी कड़ुवा ही लगेगा।

मेरी दृष्टिमें अतीव शोक उस आनन्दमें है, जिसके चले जानेका विश्वास आनन्द मनानेवालेको है।

कालका मुझसे पूर्ववाले लोगोंके सम्बन्धमें भी यही हाल था कि उसके चक्र सदैव एक दशामें नहीं रहते थे।

मृत्यु कभी कभी उस मनुष्यको जीवित छोड़ देती है, जो उससे नहीं डरता; और उसको मार डालती है जो उससे भयभीत होता है।

अत्याचारियोंमें सबसे बड़ा अत्याचारी वह है जो उससे ही डाह करे जिसकी कृपासे वह आनन्द मना रहा है।

—मुतनब्बी।

वास्तवमें वह मनुष्य बड़ा दुर्बुद्धि है जिसको उसके गुप्त विचार सारी रात करवटें बदलवाते रहते हैं।

—एक कवि।

कालकी सूचना ।

लोग मुझे बतलाते हैं कि धनसे धनीको लाभ होता है। और जब वह अपयशका भागी होता है, उस समय भी वह प्रशंसाका ही पात्र बना रहता है।

निर्धनता मनुष्यकी बुद्धिको भ्रष्ट कर देती है और अतीव दुःखदायी कोड़ेके समान दुःख देती है।

द्रव्यहीन पुरुष प्रभुताके पदोंको देखता है, परन्तु उनको प्राप्त नहीं कर सकता; और जातिके बीचमें बैठता है, परन्तु बोला नहीं करता।

वास्तवमें बात यह है कि काल बड़ा अनुभवी है; और वह तुझको ऐसी बातें बताता है जिनको कि तू नहीं जानता।

—मालिक-बिन-हरीम।

धीरता कुलीनताका आभूषण है।

हे मेरी आत्मा! तू विपत्तिमें धैर्य धारण कर; क्योंकि धीरता ही कुलीन मनुष्योंके लिये उत्तम है और कालचक्रका कुछ भरोसा नहीं है।

घोर विपत्तिके समयमें यदि कोई मनुष्य अधीरता अथवा नीचताकी शरण लेकर लाभ उठाता है तो उठावे। परन्तु प्रत्येक असह्य विपत्तिके अवसरपर भी कुलीनके लिये

उचित और शोभाकी बात यही है कि वह सहनशीलता ही धारण करे। ❋

जब कि कोई मनुष्य अपनी मृत्यु (के नियत समय) से आगे नहीं बढ़ सकता और ईश्वरीय अटल नियम उस परसे टल नहीं सकता, तो भला वह क्यों अधीर हो ?

संसार परिवर्तनशील है। इसलिये उसने हमें यद्यपि दु:ख और सुखमें रखा, तथापि हमारी मर्यादाको भङ्ग नहीं किया और न किसी अनुचित कार्य्यके लिये ही हमें कष्ट दिया है।

हमने सहनशीलताकी बदौलत अपनी उदार आत्माओंको ऐसा साध लिया है कि वह अब न उठ सकनेवाले बोझको भी उठा लेती है।

हमने बड़ी धीरतासे अपनी आत्माओंको सुरक्षित रक्खा। इसी लिये हमारी मर्यादा बनी हुई है और अन्य लोगोंकी मर्यादामें बट्टा लग गया है।

—इबराहीम बिन-कनीफ़ इल-नबहानी।

यदि तुझको एक क्षणका भी अवकाश मिले, तो तू उसे शुभ कार्य्यमें लगा; क्योंकि कालचक्र अति क्रूर और उपद्रवी है।

—अयास–बिन-इल-इर्स।

❋ "न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः"

सन्तोष ।

नीच लोगोंके कृपापात्र बननेके बदले, मैं अपने लिये यह अच्छा समझता हूँ कि पुराने कपड़ोंमें नङ्गा रहकर दिन काटूँ और थोड़ी सी जीविकापर ही सन्तोष करूँ । *

यद्यपि मेरी शक्ति मेरे साहससे न्यून हो और मेरा धन मेरे स्वभावानुसार पुण्यके लिये कम हो, तथापि मैं अपयश तथा नीचताके घाट पर कदापि न उतरूँगा ।

तू बहुतसे लोगोंको देखेगा कि उनके पग वृत्तिके मार्गमें नहीं उठते, परन्तु वे वृत्तिके कामोंमें सफलीभूत हैं ।

फिर कौन सी वस्तु है जो तुझको सायंकाल और रातके समय यात्रार्थ कष्ट देती है ? यहाँ तक कि तू कभी स्थल-यात्रा करता है और कभी जल-यात्रा ।

जब कि समस्त कार्य्योंके मार्ग बन्द हो जाते हैं, निस्सन्देह उस समयमें सन्तोष ही सारे बन्द मार्गोंको भली भाँति खोल देता है ।

---

* वरं विभवहीनेन प्राणैः संतर्पितोऽनलः ।
नोपचारपरिभ्रष्टः कृपणः प्रार्थितोजनः ॥

तथा

वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः ।

निर्धन होकर प्राणों द्वारा आग (पेटकी) बुझाना अच्छा, परन्तु उपचारहीन कृपणसे प्रार्थना करना अच्छा नहीं ।

तथा

मर जाना अच्छा, किन्तु नीचोंके पास जाना अच्छा नहीं ।

यदि तू अपने उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये सन्तोष धारण करके प्रार्थना करता है, तो हताश न हो; क्योंकि एक न एक दिन तू सफलता प्राप्त कर लेगा ।

सन्तोषी पुरुष अवश्यमेव सफलताका अधिकारी है, जैसे कि दरवाजेको खटखटानेवाला प्रविष्ट होनेका भागी है ।

अपने पगको उठानेसे पहले उसके रखनेका स्थान देख ले; क्योंकि यदि पैर फिसलनेके स्थानमें पड़ेगा तो तू फिसल जायगा ।

स्वच्छ जल, जिसे तू पीता है, कहीं तुझे धोखा न दे; क्योंकि कभी कभी उसमें भी गन्दी वस्तु मिली हुई होती है ।

—मुहम्मद-बिन-बशीर ।

मेरी बहादुरी ।

मैं सवारोंकी एक ऐसी टोलीसे, जिसमें एक सवार काल-चक्र भी है, अकेले ही नेजाबाजी करता हूँ ।

मैं अकेला ही संग्राम नहीं करता, बल्कि इस संग्राममें मेरा साथी धैर्य्य भी है ।

प्रत्येक दिन मेरा जीवन मुझसे अधिक शूर-वीर साबित हुआ है और निस्सन्देह उसके अधिक शूर-वीर साबित होनेमें अवश्यमेव कोई गुप्त रहस्य है ।

मैं विपत्तियोंको अपने सिर पर उठानेका ऐसा अभ्यासी हो गया हूँ कि अब विपत्तियाँ मुझसे पृथक् होकर आश्चर्यके साथ कहती हैं कि यह मनुष्य आपदाओंसे न मरता ही है और न भयभीत ही होता है। फिर क्या मौतको मौत आ गई है अथवा भयको ही भयभीत कर दिया गया है ? जिसके कारण वे ही इसके पास नहीं फटकते।

मैं पानीके भयंकर भीषण प्रवाहके समान अति भयंकर अवसरों पर भी आगे ही बढ़ता हूँ। मानों मेरे लिये इस जानके अतिरिक्त कोई अन्य जान भी है जिसके कारण मैं इसकी कुछ पर्वाह ही नहीं रखता। अथवा मुझे इस जानके साथ वैमनस्य है।

तू अपने जीको मत रोक, जिसमें वह अपनी शक्तिके अनुसार प्रत्येक वस्तु प्राप्त कर ले; क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों पड़ोसी, जिनका घर आयु है, एक दूसरेसे शीघ्र पृथक होनेवाले हैं।

तू शराब और वेश्याओंको श्रेष्ठताका कारण न जान; क्योंकि वास्तवमें श्रेष्ठता तलवार और प्रत्येक नूतन आक्रमणमें होती है।

इसके अतिरिक्त श्रेष्ठता शत्रु राजाओंका वध करने और इस बातमें है कि तेरे साथ एक ऐसी बड़ी सेना हो जिसके कारण आकाश-मण्डलमें कालिमा छा जाती हो।

—मुतनब्बी।

तिरस्कार।

तू मृगनयनियों और उनकी चर्चासे विमुख हो जा, दो टूक बात कह और हँसी-ठट्ठेसे मुँह मोड़।

बाल्यावस्थाके समयकी चर्चा छोड़; क्योंकि उस समयका तारा अब टूट चुका है।

वह अति आनन्दमय जीवन जिसको तूने भोगा था, बीत चुका; पर उसका पाप अभी बाकी है।

तू अलबेलीको त्याग और उसकी कुछ परवाह न कर, तो तू मान पावेगा * और तेरी बड़ी आवभगत होगी।

यदि तू मनुष्य है तो मदिराको त्याग। भला पागलपनकी अवस्थामें कोई मनुष्य बुद्धिमानीके साथ उद्योग कर सकता है?

जो मार्गका लुटेरा है वह योद्धा नहीं कहला सकता; बल्कि योद्धा वह है जिसके हृदयमें ईश्वरका भय हो।

तू आलस त्याग और विद्या प्राप्त कर; क्योंकि प्रत्येक प्रकारके गुण बहुत ही दूर रहते हैं।

निद्राको त्याग करके विद्या प्राप्त कर। जो मनुष्य अपने

---

* कान्ताकटाक्षविशिखा न लुनन्ति यस्य।
चित्त...लोक त्रय जयति कृत्स्नमिद स धीरः॥

भर्तृहरि।

अर्थ—जिसके चितको अलबेलीके कटाक्ष नहीं छेदते वह तीनों लोकोंको जीतता है।

उद्देश्यको भली भाँति पहचान लेता है, उसकी दृष्टिमें सारी कठिनाईयाँ अति तुच्छ हो जाती हैं। *

समस्त विद्वान् चल बसे हैं, ऐसा मत कह; क्योंकि जो मनुष्य दरवाजे तक पहुँचेगा वह घरमें अवश्यमेव पहुँच जायगा।

शत्रुओंकी नाक विद्याकी वृद्धिसे कट जायगी; पर विद्याकी शोभा आचरण ठीक रहनेसे ही होगी। †

व्याकरणके अनुसार तू अपनी वक्तृताको सुसंचित कर; क्योंकि जो मात्रा आदिको भली भाँति नहीं जानता, वह वक्तृतामें ठोकर खाता है।

कभी कभी मनुष्य पिताकी कुलीनताके बिना ही कुलीन हो जाता है; जैसे कि ताव देनेसे जंगाल उड़ जाता है और धातु निखर आती है।

दरिद्रता और द्रव्य इन दोनों बातोंको छिपा और धन कमा, अनुद्योगीका ब्योरा ले, कठिन परिश्रम कर और निर्बुद्धियों और शासनकर्ताओंकी संगतिसे दूर रह। ‡

फजूलखर्ची और कंजूसीके बीचमें एक मार्ग चुन ले; क्योंकि इनमें कोई भी यदि हदसे बढ़ जायगी तो वह घातक ही होगा।

---

* को वीरस्य मनस्विनः स्वविषयः को वा विदेशस्तथा ?
मनस्वी वीरके लिये क्या स्वदेश और क्या विदेश !

† विद्याया भूषणं शीलम्। विद्याका जेवर शील है;

‡ क्षुद्राणामविवेक मूढमनसां
यत्रेश्वराणाम...नामापि न श्रूयते। भर्तृहरि।
अर्थ—जहाँ निर्बुद्धि धनियोंका नाम भी नहीं सुना जाता, बस बनको चल।

बादशाहसे परे रह और उसकी पकड़से डरता रह; और जो अपने कथनके अनुसार कार्य करे, उससे मत झगड़।

लोग चाहे तुझे हार्दिक भावसे ही कहें, पर तू न्याय चुकानेका काम न ले; और ऐसा करनेपर लोग बुरा-भला कहें तो चुपचाप सुन ले।

यदि न्यायाधीश न्यायसे काम करता है तो आधा संसार वस्तुतः उसका वैरी हो जाता है।

वह न्यायाधीश ऐसे कैदीके समान हो जाता है जिससे संसारके सारे स्वाद पृथक कर दिये जाते हैं और प्रलयके बाद न्यायार्थ जिसकी मुशकें कसी जायँगी।

न्यायाधीश बनकर न्याय चुकानेका स्वाद उस कष्टके बराबर नहीं है जो उद्दंडताके साथ पृथक् किये जानेके समय होता है।

जिन्होंने शासन करनेका स्वाद चक्खा, उन्हें वह स्वादिष्ट लगा; पर इस मधुमें विष है।

संसारमें अपनी आवश्यकताएँ थोड़ी कर तो सफल होगा: और आवश्यकताकी न्यूनता विद्वत्ताका चिह्न है। *

* [क] "And in simplicity sublime"—टेनिसन।

अर्थ—सादेपनमें महत्ता

[ख] The Fewer the wants of a man, the nearer he is to the God,

अर्थात जिस मनुष्यकी आवश्यकताएँ जितनीही कम हैं, वह ईश्वरके उतनाही समीप है।

अपने मित्रसे कभी कभी मिला भी न कर जिसमें तू उसको प्रेममय पावे; और जो मित्र बहुत पास आता-जाता रहता है उसको अवश्यमेव दुःखी होना पड़ता है। *

तू तलवारके फलसे अपना मतलब रख और उसके म्यान-को छोड़। मनुष्यकी श्रेष्ठताको ग्रहण कर न कि उसके वस्त्रोंको। †

सायंकालके समय डूब जानेसे सूर्यको जिस प्रकार धब्बा नहीं लगता, उसी प्रकार निर्धनतासे गुणवान्‌को भी कुछ हानि नहीं पहुँचती। ‡

तेरा देश-प्रेम एक खुला बोदापन है। यदि तू यात्रार्थ विदेशमें जायगा, तो कुटुम्बियोंके बदले तुझे कुटुम्बी मिल जायँगे। +

पानी एक स्थान पर ठहरे रहनेसे बदबूदार हो जाता है; और दूजका चन्द्रमा यात्राके कारण पूर्ण चन्द्र बन जाता है।

---

* [क] Familiarity breeds comtempt.

कहावत

[ख] "अतिपरिचयादवज्ञा"

अति परिचयसे निरादर होता है।

[ग] "मान घटै नितके घर आये"

† गुणेनस्पृहणीयस्यान्नरूपेण।

गुणसे कोई स्पृहणीय होता है, न कि रूपसे।

‡ गुणयुक्तो दरिद्रोऽपि।

नेश्वरैरगुणैः समः।

गुणवान् दरिद्र भी अगुण धनियोंके समान होता है

+ देशे देशे च बान्धवाः —रामायण।

हर देशमें बन्धु मिल जाते हैं।

हे मेरे कथनमें अवगुण निकालनवाले ! जान ले कि गुलाबकी सुगन्धि भी गुबरीलेके लिये दुःखदायी होती है ।

तू किसीकी कोमल बातोंसे धोखेमें न आ जा; और जान ले कि सर्पके कोमलापनसे पृथक् रहना ही उचित है ।

मैं पानीके समान शीतल स्वभाववाला हूँ । परन्तु जब वह गर्म हो जाता है तब कष्ट देता है और घातक बन जाता है ।

मैं बेतके समान लचकदार हूँ और हर ओर मोड़ा जा सकता हूँ । पर बेतके समान ही मेरा टूटना कठिन है । *

मैं ऐसे समयमें हूँ जिसमें श्रीपतिको उच्च समझा जाता है, उसका सम्मान करना परम धर्म्म समझा जाता है और निर्धनको तुच्छ माना जाता है ।

मेरे सारे सहयोगियोंमेंसे एक भी अनुभवी नहीं है और न मैं ही अनुभवी हूँ । बस इस सूत्रकी व्याख्या मुझसे न पूछो ।

--इब्न-उल वर्दी ।

कालने अब मुझको रुलाया । परन्तु मुझको असंख्य बार कालने मनभावनी वस्तुओंके साथ हँसाया है ।

—हित्तान बिन-मुअल्ला ।

---

* इसका ठीक उलटा भाव है—I would rather break than bend.

अर्थात्—मैं झुकना पसन्द नहीं करूँगा, बल्कि टूट जाऊँगा ।

निर्वेद ।

मुझसे लोग कहते हैं कि तुम कुछ विरक्तसे मालूम होते हो। पर सच तो यह है कि अपमानयुक्त स्थानसे पीछे रहनेके कारण ही मैं लोगोंकी दृष्टिमें कुछ विचित्रसा मालूम होता हूँ।

मैं संसारके मनुष्योंमें यह बात पाता हूँ कि जो उनके निकट होता जाता है, वह तुच्छ हो जाता है; और जो अपना मान आप करता है, वह प्रतिष्ठाका भागी ठहरता है।

यदि तनिकसे लालचके स्थानमें मैं विद्याको सीढ़ी बनाकर पहुँचा करूँ, तो वास्तवमें विद्याके दायित्वकी मैंने शर्त ही नहीं की।

निस्सन्देह कौन्दनेवाली प्रत्येक विद्युत् मुझे लाभ नहीं पहुँचाती। मैं प्रत्येक मिलनेवालेका कृपापात्र बनना नहीं चाहता।

जब कि मुझसे किसीके विषयमें कहा जाता है कि वह दानका स्रोत है, तो मैं हाँमें हाँ मिला देता हूँ। पर कुलीनकी आत्मा प्यासको सहन करती है।

जो वास्तवमें कुछ अनुचित नहीं है, मैं उससे भी अपने आपको बचाये रखता हूँ, जिसमें मेरे शत्रुओंको यह कहनेका अवसर न मिले कि तुमने क्यों ऐसा किया।

मैंने विद्याकी सेवामें इसलिये जान नहीं खपाई कि जो मिल जाय, उसीका दास बन जाऊँ, बल्कि इसलिये कि लोग मेरी सेवा किया करें।

क्या मैं विद्याका पौधा लगानेके लिये (अर्थात् विद्याकी प्राप्तिके लिये) तो असीम कष्ट उठाऊँ और फिर उससे अपमान-का फल चुनूँ ? इससे तो मूढ़ताकी ही अधीनतामें रहना बड़ी गूढ़ विद्वत्ता है।

यदि विद्वान् लोग विद्याको अपमानसे सुरक्षित रखते तो विद्या भी उन्हें अपमानसे सुरक्षित रखती; और विद्वान् लोग यदि लोगोंके हृदयोंमें विद्याका सिक्का बैठाते, तो विद्या भी विद्वानोंका सिक्का जमा देती।

परन्तु उन्होंने उसका अपमान किया और उसके सुन्दर स्वरूपको लालचसे कुरूप कर दिया; यहाँ तक कि विद्याकी सूरत भोंडीसी हो गई।

—एक कवि।

इस संसारमें कोई ऐसा नहीं है जिससे भलाईकी आशा रक्खी जाय; और न कोई मित्रही ऐसा है जो उस समयमें साथ दे जब कि कालचक्र धोखा दे बैठता है।

सो अकेले ही जीवन व्यतीत कर और किसी पर भरोसा न कर। मेरा इतनाही कथन पर्य्याप्त है।

—एक कवि।

संसारसे विरक्ति ।

सांसारिक कार्योंमें लिप्त हो जानेसे हानि ही होती है और परोपकारके अतिरिक्त सारे कामोंमें घाटा ही घाटा है ।

हे लोगो ! दिलको दुनिया और उसके शृंगारसे दूर रखो; क्योंकि दुनियाकी सफाई ही गन्दगी है और उसका मिलाप ही वियोग है ।

यदि तू लोगोंके साथ नेकी करेगा तो उनके दिलोंको तू अपना दास बना लेगा; क्योंकि अनेक बार नेकीसे मनुष्य दास बना लिया गया है ।

यदि कोई अल्पज्ञ बुरा काम करे तो उचित यह है कि तू उसे क्षमा प्रदान करे और उसको बुरा-भला न कहे ।

तू अपनी आत्माकी ओर ध्यान धर और उसके गुणोंकी पूर्ति कर; क्योंकि तू आत्माके कारण ही मनुष्य है, न कि शरीरके कारण ।

जो मनुष्यके कल्याणार्थ धन देता है, उसकी ओर लोग खिंच जाते हैं; और धन लोगोंको अपनी ओर खींच लिया करता है ।

हे शरीरके सेवक ! तू कब तक इसकी सेवामें लगा रहेगा ? क्या तू उस चीजसे लाभ उठाना चाहता है जिसमें घाटा ही घाटा है ?

जो मनुष्य ईश्वरसे डरता है, उसके कार्योंका फल अच्छा हुआ करता है और ईश्वर उसे प्रत्येक बुराईसे बचाता है ।

जिसको भाई और मित्र छोड़ दें, उसे चाहिए कि अपने विवेकको ही मित्र बना ले ।

तू ऐसे उच्च कुलोत्पन्न और बुद्धिमान् पुरुषसे, जो बाहर भीतर एक समान हो, सदैव सम्मति लिया कर ।

प्रत्येक कार्यके लिये समय नियत है और प्रत्येक कार्यकी सीमा भी निश्चित है ।

जिसने सारी बातोंमें नम्रतासे काम लिया है, वह न तो किसी कार्यमें लज्जित हुआ और न किसीने उसकी निन्दा ही की ।

सन्तोषी अपनी वृत्तिमें सन्तुष्ट रहता है; किन्तु लालची यदि धनी भी हो जाय तो भी रुष्ट ही रहता है । *

जो मनुष्य लोगोंमें शान्तिके साथ रहता है, वह उनकी बुराइयोंसे बचा रहता है और आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करता है ।

---

* (क) सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥

सन्तोषरूपी अमृतसे तृप्त हुए, शान्त चित्तवालोंको जो सुख होता है, वह इधर उधर दौड़नेवाले धनके लोभियोंको कहाँ ?

(ख) जब आवे सन्तोष धन,
सब धन धूरि समान ।
—तुलसी ।

यदि किसी उच्च कुलोत्पन्नको कोई स्थान रुचिकर न हो तो कुछ हर्ज नहीं; क्योंकि उसके लिये भूमंडल पर और अनेक स्थान हैं।

आनन्दको चिरस्थायी और सदैव रहनेवाला मत समझ; क्योंकि इस काल-चक्रमें एक बार जो प्रसन्न किया जाता है, वह अनेक बार कष्टमें डाला जाता है। *

अबुल—फतह—बुस्ती।

वैराग्य-रत्नाकर।

अपने मनको बुरी बातोंसे बचा और उसे ऐसी बातोंके लिये उत्तेजित कर, जिनसे उसकी शोभा बढ़े। ऐसी दशामें तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशंसा करेंगे।

लोगोंको अपनी बाहरी हालतके सिवा और कुछ न दिखा। चाहे समय तेरे अनुकूल न हो, अथवा कोई मित्रही क्यों न तुझपर अत्याचार कर रहा हो।

यदि आजकी वृत्ति तुझ पर कठिन हो, तो सन्तोष कर। आशा है कि समयका फेर कल तक जाता रहेगा।

---

* (क) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

—कालिदास।

अर्थात्—चक्रके धुरेकी भाँति दशा ऊपर नीचे होती रहती है।

(ख) चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि सुखानि च।

अर्थात्—दुःख और सुख चक्रके समान घूमते रहते हैं।

धनसे धनीके पास द्रव्य होता है; पर उसको वह पद नहीं प्राप्त होता जो कि हृदयके धनीको होता है, चाहे उसके पास कम ही धन क्यों न हो ।

उस मनुष्यकी मिताईसे कुछ भी लाभ नहीं जिसका चित्त चलायमान है, और जिधरकी वायु होती हो उधर ही झुक जाता है ।

जब तक तेरे पास सम्पत्ति है, तबतक खल मित्र तेरे प्रति बड़ी उदारता प्रकट करेगा । पर निर्धनताके समय वह तेरे निमित्त कंजूस हो जायगा ।

धनके समय तो तेरे बहुतसे भाई निकल आते हैं, पर आपदाओंके अवसर पर उनकी संख्या बहुत कम हो जाती है ।

—हज़रत अली ।

आत्म-सुधार ।

जो मनुष्य अधिक बोलता है, उसकी क्रियाओंमें अवश्यमेव त्रुटि होती है; और मनुष्यका वचन कभी उसीको ठोकर खिलाता है । *

मनुष्यकी जिह्वा छोटी होती है, परन्तु वह बड़े बड़े दोष कर बैठती है । ऐसा ही अनेक कहावतोंमे कहा गया है । †

---

* आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिकाः ।
बकास्तत्र न बध्यन्ते मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥

अर्थ—अपने मुखके दोषसे तोते और मैना कैद किये जाते हैं । बगलोंको कोई पिंजरोंमें नहीं डालता । मौन सब कामोंका साधन है ।

† बातो हाथी पाइयां बातो पांव ।

अनेक बार ऐसा हुआ है कि मनुष्यको उस बात पर लज्जित होना पड़ा है जिसको उसने कहा है; किन्तु उस बात पर कभी लज्जित ही नहीं होना पड़ा जिसको कि उसने कहा ही नहीं। *

कठिन कार्य्योंमेंसे अत्यन्त कठिन वह कार्य है जिसमें तेरा कोई सहायक अथवा सन्मार्गका दिखलानेवाला न हो।

तुच्छ मनुष्य जो बात तुझसे कहे, उसे तुच्छ मत जान; क्योंकि मधुमक्खी एक मक्खी ही है, परन्तु मधुकी स्वामिनी है। †

मतलबी आदमीको उसके मतलबकी पूर्तिसे पहले ही परख ले, जिसमें उसकी मित्रतासे धोखा न खाना पड़े।

यदि शत्रु किसी मजबूरीके कारण मित्रता पर राजी है,

---

* फलैर्विसंवाद मुपागता गिरः
प्रयान्ति लोके परिहासवस्तुताम्।

पञ्चतन्त्र।

अर्थ—वह वाणियाँ जो अपने फलसे विरुद्ध होती हैं, लोकमें परिहासका कारण हैं।

† (क) तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां
किमङ्ग वाग्घस्तवता नरेण।

हितोपदेश।

अर्थ—तिनकेसे भी बड़ोंको काम पड़ता है, जीभ और हाथवाले मनुष्यका क्या कहना है।

(ख) कूपोऽन्तःस्वादुजलः प्रीत्यै लोकस्य न समुद्रः।

पञ्चतन्त्र।

अर्थ—मीठे जलवाला कूआँ लोकप्रिय है, समुद्र नहीं।

तो उस मजबूरीके दूर हो जाने पर उसकी शत्रुता फिर लौट आवेगी। *

जिस आपदामें किसी उद्योगसे काम न निकल सकता हो, उसमें घबराना न चाहिए। यदि किसी ढंगसे काम निकल सकता हो तो उसे प्रयोगमें लानेसे चूकना भी न चाहिए। †

प्राप्तिके पश्चात् जो वस्तु जाती रहे, उससे भी न घबरा; और न उसके लिये ही प्रलाप कर जो हाथमें आनेसे पहले ही जाती रही हो।

मनुष्यका नियत समय जब समाप्त हो चुकता है, तब उसकी सारी सम्पत्ति उसके किसी काम नहीं आती। ‡

स्वतन्त्रताका भङ्ग हो जाना अथवा प्रिय वस्तुका नष्ट हो जाना, ये घटनाएँ ऐसी हैं कि इन्हींसे तुझे सबसे अधिक भयभीत रहना चाहिए।

---

* (क) शत्रुणा नहि संदध्यात् सुश्लिष्टेनापि सन्धिना।
अर्थ—शत्रुके साथ दृढ़ संधिमें भी न मिले।
(ख) कारणान्मित्रतामेति कारणादेति शत्रुताम्
भाव—क्योंकि वह कारणसे मित्रता और शत्रुता ठानता है।

† (क) त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि दैवे।
अर्थ—भाग्यके विरोधी होने पर भी धीरज न छोड़ना चाहिए।
(ख) येन केनाप्युपायेन शुभेनाप्यशुभेनवा उद्धरेद्दीनमात्मानम्।
अर्थ—किसी भी शुभ या अशुभ उपायसे अपने आपको संकटसे निकाले।

‡ (क) संमीलने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति। भोज प्रबन्ध।
अर्थ—आँखोंके मिच जाने पर कुछ भी नहीं है।
(ख) मूंदहु आँख कतहुँ कोउ नाँही।

अन्य लोगोंके ठोकर खानेपर फूला न समा और न दूसरोंकी हँसी ही उड़ा; बल्कि कालके चक्रोंसे डरता रह।*

वह वस्तु सबसे अधिक रद्द होनेके योग्य है जिसके विरुद्ध काल साक्षी है।

मनुष्यका मूल्य वह है जो उसे श्रेष्ठ बनावे। अतः प्रत्येक मनुष्यको चाहिए कि वह शुभ कार्य करे और अपने लिये ऐसी वस्तुओंका अभिलाषी हो जिनके सहारे उच्च पद प्राप्त कर सके।

यह बात असम्भव नहीं कि किसी रोगका औषध न मिले; परन्तु दरिद्रताके साथ यदि आलस्य भी हो जाय, तो ऐसे रोगके औषधकी सम्भावना ही नहीं है। †

तू अपनी मृत्युके पश्चात् अपने धनका वारिस चाहे शत्रु-

---

* आपद्गतं हससि रे द्रविणोऽसि मूढ
लक्ष्मीः स्थिराभवति कस्यवशे विधातुः।
एता न पश्यसि घटीर्जलयन्त्रचक्रे
रिक्ता भवन्ति भरिता भरिताश्च रिक्ताः॥

भावार्थ—आपदामें फँसे हुए किसी पर, हे मूर्ख, तू हँसता है! क्या रहट परकी बारी बारीसे भर जाने और खाली होनेवाली हँड़ियोंको नहीं देखता?

† (क) सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितम्।

भर्तृहरिः।

अर्थ—सब रोगोंकी दवा शास्त्रमें मिल जाती है।

(ख) आलस्यहि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।

वृद्धचाणक्य।

अर्थ—आलस्य मनुष्योंका बड़ा भारी शत्रु है।

को ही बनावे, किन्तु तू धनसञ्चय कर और अपने जीते जी खाने-पीनेमें अपने भाइयोंके अधीन न हो ।*

सच्चा दान वह है जिसे तू न तो किसीके बदलेमें करे और न बादमें उसके बदलेकी प्रतीक्षा ही करनेवाला बने ।†

नीचसे कोई बात पूछोगे तो वह संकोच करेगा; यहाँ तक कि पूछनेवालेकी जबान भी बन्द हो जायगी ।

तेरी परखी हुई बातोंमें सबसे अधिक खरी बात वह है जिसके द्वारा तू बेबसी और निखट्टूपनमें पड़नेसे बच सके ।

बुद्धिमान् उन मनोरंजक बातोंको भी छोड़ देते हैं जिनसे बुरी बातोंमें फँस जानेका भय होता है ।

जिस मनुष्यकी तू उसके सन्मुख खूब दिल खोलकर प्रशंसा करता है, पीछे उसकी बुराई करनेसे लज्जा कर; और उस मनुष्यकी प्रशंसासे भी लज्जा कर जिसके चले जानेके पश्चात् तू बकरी बन जाता हो ।

कुलीन उसीसे मुठभेड़ करता है जो उसकी टक्करका हो । पर नीच अपनेसे भी नीचपर ही हाथ बढ़ाता है ।‡

---

* न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम् ।

चाणक्य ।

बन्धुओंमें धनहीन होकर रहना बहुत बुरा है ।

† तद्दान सात्विकं स्मृतम् ।

गीता ।

अर्थात् वस्तुतः निष्काम दान ही दान है ।

‡ (क) यद्यपि रटति सरोषं मृगपतिपुरतोऽपि मत्तगोमायुः ।
तदपि न कुप्यति सिंहोऽप्यसदृशपुरुषेषु कः कोपः ॥

वास्तवमें वह बड़ा भारी त्यागी है जो अपने अपराधीको अपने काबूमें पा जाय और उसको दण्ड देनेकी भी शक्ति रखता हो, पर उसको उदारताके साथ छोड़ दे।*

मनुष्यका उत्तम धन वह है जिसके सहारे वह अपनी मर्य्यादा सुरक्षित रक्खे और शुभ कार्यों में उसे खर्च करे।

सब नेकियोंमेंसे सर्वश्रेष्ठ नेकी वह है जिसके बाद उपकार न जताया जाय और न जिसके करनेमें किसी प्रकार से विलम्बही किया गया हो।†

उन जड़ी-बूटियोंके भरोसेपर, जो भली भाँति परखी हुई हैं, कदापि विष न पी।

अर्थ—चाहे पागल गीदड़ सिंहके सामने आकर जोरसे भबके, पर सिंहको क्रोध नहीं आता। जो अपने जैसे नहीं, उन पर क्रोध काहेका?

(ख) दोहा—कीजै आप समानसों, बैर प्रीति व्यवहार।
कबहुँ न कीजै नीचसों चरचा कथा विचार॥

* (क) ज्ञानस्य भूषणं क्षमा
क्षमा ज्ञानका अलकार है।

(ख) शक्तानां भूषणं क्षमा
शक्तोंका क्षमा भूषण है।

† (क) जो उपकार करके जताने लगा।
वह अपने कियेको मिटाने लगा।

(ख) तंधिगस्तु कलयन्नपि वांछाम
अर्थिवागवसरं सहते यः।

अर्थ—धिक् है उसे जो अर्थीकी जरूरत देखता हुआ उसके बोलने तक विलम्ब करता है।

अपने भाइयों और मित्रोंके साथ सप्रेम मिल, चाहे उन्होंने तुझसे नाताही तोड़ लिया हो।

सब बातों और कार्योंका एक अन्त अवश्य होता है। सो तू कोई कार्य ऐसा न कर जिसके कारण कोई मनुष्य तुझसे बदला लेनेकी ठाने और तुझपर अकस्मात् कुछ आपत्ति आ जाय।

सारे संसारमें सबसे अधिक विवेकभ्रष्ट वह मनुष्य है जो लोगोंकी निन्दामें दत्तचित्त रहता है - जैसे मक्खी रुग्ण-स्थानोंको ही ताड़ा करती है। *

सीधे होनेमें चाहे तू बाणके समानही हो, तथापि लोग यही कहेंगे कि यह सीधा है या नहीं।

जिस मनुष्यने एक ऐसे मनुष्य पर अनेक बार अत्याचार किया है, जिसका ईश्वरके सिवा कोई और सहायक ही नहीं है, चाहिए कि वह अत्याचारी सचेत रहे और अपने अत्याचारका फल शीघ्र न पानेसे भ्रममें न पड़ जाय। †

—इस्माईल इब्न-अबीबकर।

---

* न विना परिवादेन रमते दुर्जनो जनः।
काकः सर्वरसान् भुक्त्वा विना मेध्यं न तृप्यति॥ —महाभारत।
अर्थात्—दुर्जनोंको निन्दामें ही आनन्द आता है; सारे रसोंको चखकर कौवा गन्दगीमे ही तृप्त होता है।

† कर्मवशातो भाव्यस्य नाशः कुतः। भर्तृहरिः।
अर्थ—जो कर्मवश होनी है वह नहीं टलती।

तू कुछ दिनों बाद अवश्य मर जायगा। फिर परमात्मा तेरा और तेरे अत्याचारीका ठीक ठीक न्याय चुकावेगा; यहाँ तक कि उसमें तनिक भी त्रुटि न होगी।

सफल जीवनके मूल मंत्र।

अपने जीवन-कालमें ही अपनी आत्माके लिये मार्ग-व्यय पहले भेज; क्योंकि तू थोड़े ही कालके बाद इस जीवनको छोड़-कर अपनी राह लेगा।

मृत्युके लिये तैयारी कर; क्योंकि मृत्युका मार्ग सांसारिक मार्गोंसे अधिक कठिन है।

ईश्वरसे भय करने और बुरी बातोंसे बचनेको अपना मार्ग-व्यय बना; क्योंकि तेरी मृत्यु अति शीघ्र आनेवाली है।

अपनी वृत्ति पर सन्तोष कर; क्योंकि सन्तोष ही अमीरी है। और जो सन्तोष नहीं किया करता, दरिद्रता उसकी मित्र बन जाती है।

नीचोंकी मित्रतासे बच, क्योंकि वह शुद्ध भाव रखकर मित्रता नहीं करते, बल्कि बनावटसे काम लेते हैं।

नीचोंको जबतक कुछ मिलता जुलता रहता है, तबतक वे मित्र बने रहते हैं। और जब तू उनको कुछ न देगा, तब उनका विष तेरे लिये घातक हो जायगा।

जो मनुष्य अन्यके गुप्त भेदको तुझ पर प्रकट कर कर दे, यथाशक्ति उसे अपना भेद न दे; क्योंकि जो कुछ वह अन्यके भेदके साथ कर रहा है, वही तेरे भेदके साथ भी करेगा।

किसी समाजमें बिना किसी प्रश्नके मत बोल; क्योंकि ऐसा करना उचित नहीं है ।

वास्तवमें चाहे कोई मनुष्य अविवेकी, अज्ञानी तथा निर्बुद्धि ही क्यों न हो, पर चुप रहनेसे वह अच्छा ही अनुमान किया जाता है ।

हँसी-ठट्ठा छोड़ दे; क्योंकि बहुतसे हँसी-ठट्ठा करनेवाले तेरी ओर ऐसी आपदाएँ ला खड़ी करेंगे जिनको तू दूर नहीं कर सकेगा ।

पड़ोसीके स्वत्वको न भूल; क्योंकि जो इस कर्तव्यसे चूक जाता है, वह उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकता ।

यदि कोई दोषी अपने दोषके लिये तुमसे क्षमा चाहे, तो उसे क्षमा प्रदान करो, क्योंकि इससे बड़े पुण्यके भागी होगे ।

जब तुझे कोई गुप्त भेद दिया जाय, तो उसे छिपाये रख; और जब तुझे अपने भाइयोंके बुरे कामकी सूचना मिले तो उन्हें भली भाँति ढाँक दे ।

कालकी आपदाओंसे व्याकुल न हो; क्योंकि व्याकुल होना मूर्खोंका काम है ।

अपने पिताकी शिक्षा पर चल; क्योंकि जो मनुष्य अपने पिताकी शिक्षा पर चलता है, वह दुःखी नहीं रहता ।

—हजरत अली ।

बुढ़ापेका स्वागत।

(क)

जब मैंने बुढ़ापेको देखा और मेरे सरकी माँगमें सफेदी प्रकट हो गई, तब मैंने बुढ़ापेके लिये 'स्वागत' कहा।

यदि मुझको यह विश्वास होता कि मेरे स्वागत न करनेसे बुढ़ापा रुष्ट हो जायगा, तो मैं बुढ़ापेका स्वागत न करता जिसमें वह मुझसे मुँह फेर लेता।

परन्तु कोई बुरी बला जब सिरपर आन पड़े और आत्मा उससे पीड़ित न हो, तो वह बला सुगमताके साथ टल जाती है।

—यह्निया बिन-ज्याद।

(ख)

बुढ़ापा आया। सो तू अब इसके पश्चात् कहाँ जाता है? तूने सन्मार्गसे मुँह मोड़ा और तेरे जानेका समय आ गया।

जवानीके दिन हलके फुलके थे; और अब बुढ़ापेका बोझ तुझ पर भारी है।

—अल-मुकन्नआ-उल-किन्दी।

मैं तो धनी हूँ क्योंकि ईश्वरके सिवा किसी अन्यका दास नहीं हूँ; और वस्तुतः निर्बल हूँ पर उसीके सहारे सबल हूँ।

—एक कवि।

मनुष्य और मृत्यु ।

जब कि मनुष्य ऐसा हो कि उसके पास ऊँट न हों जिनको वह प्रातःकाल चरानेके लिये ले जाय और सायंकाल घर लावे तथा उसके सम्बन्धी भी उसपर कृपालु न हों,

ऐसे निष्क्रिय मनुष्यके लिये अति उत्तम है कि निखट्टू रहनेके बदले अथवा कपटी भाईके साथी होनेके स्थानमें मृत्युकी शरण ले ।

बहुतसे असीम और अखण्ड जंगल हैं जिनमें अबू-नश नाशकी (मेरी) सवारियाँ चक्कर लगाया करती हैं ।

मेरी सवारियोंका भ्रमण इस सबबसे है कि प्रभुता प्राप्त हो, अथवा उसमें लूटका धन मिले । और संसारकी विचित्रताएँ तो असंख्य हैं ।

बहुतसे स्त्री-पुरुष मुझसे बहुतसी बातें पूछा करते हैं । भला ग़रीबसे कहीं कोई पूछता है कि तेरी हालत क्या है ?

मैंने ग़रीबीके समान अन्य कोई वस्तु युवकके लिये अधिक दुःखदायी नहीं देखी । और न कोई अन्य बुरी रात्रि उस काली, अँधेरी रातके समान देखी है जिसमें लूट-मार करनेवाला निराश होकर लौट आता है ।

तू चाहे ग़रीबीसे दिन काटे और चाहे पुण्यात्मा होकर मरे, पर निस्सन्देह मैं देखता हूँ कि मृत्युसे भागनेवाला कभी उससे नहीं बच सकता ।

यदि कोई जीवित मनुष्य (भागनेवाला) मृत्युसे मुक्त हो सकता तो मैं मृत्युसे बच जाता; क्योंकि मेरी सवारियाँ बहुत तेज़ भागनेवाली हैं।

—अबू-नशनाश।

वैराग्य-कुंज।

मैं अपने गुप्त विचारोंको नहीं छिपाया करता, और न ऐसी नौबतही आने देता हूँ कि मेरे गुप्त विचार प्रकट होनेके निमित्त दिलमें खलबली पैदा करें।

—एक कवि।

यदि तेरे लिये कुछ शुभ कार्य्य हो जाय अथवा तुझे कुछ सुख मिल जाय, तो उसे बहुत समझ; क्योंकि तू अति शीघ्र नाना प्रकारके कष्टोंमें ग्रस्त होगा।

—अयास-बिन-इल-हर्स।

यदि तूने कुछ नहीं बोया, तो अन्य किसी बोनेवालेको जब तू कुछ काटते हुए देखेगा, उस समय तू अपने व्यर्थ समय गँवाने पर लज्जित होगा।

—एक कवि।

तू विद्याकी प्राप्तिके निमित्त अथवा अपनी दशा सुधारनेके हेतु अवश्य लोगोंसे मिला जुला कर; अन्यथा मिलनेसे कुछ लाभ नहीं, क्योंकि मेल-जोलसे व्यर्थ बकवासही बढ़ती है।

—एक कवि।

घोर दुःखोंसे पीड़ित उदासीन भी यद्यपि कभी कभी हँस पड़ता है, तथापि मैं यदि कभी लोगोंकी देखा-देखी हँस पड़ता हूँ तो अपनी आत्माको एकान्तमें धिकारता हूँ ।

—हलीफ ।

जो लोग मुझसे डाह रखते हैं, मैं उनको बुरा-भला नहीं कहता: क्योंकि मुझसे पहले भी गुणवान् मनुष्य हुए हैं और उनसे भी डाह रक्खी गई थी ।

—एक कवि ।

निस्सन्देह हमसे पहले भी लोग अपने मित्रोंसे पृथक हुए हैं और मृत्युकी ओषधिने प्रत्येक चिकित्सकको थका दिया है ।

—मुतनब्बी ।

विशाल हृदयवाला मनुष्य जानता है कि दुःखके पश्चात सुख होता है। अस्तु, जब सुखी होता है, तब वह इस बातको स्मरण रखता है कि यह सुख सदैव रहनेवाला नहीं है ।

—क़ितालबउल-किशाबी ।

यदि तू अपनी आवश्यकतासे अधिक धन पुण्यार्थ दे, तो कोई बड़ी बात नहीं है । बल्कि प्रशंसनीय बात तो यह है कि तू उसमेंसे कुछ पुण्यार्थ दे, जो कि तेरी आवश्यकताके लिये भी काफ़ी नहीं है ।

—अल-मुकन्नआ-उल किन्दी ।

जब कि हमने यह जान लिया कि हम सदैव जीवित नहीं रहेंगे, तो हमें पता लग गया कि हमें वियोगका दासत्व शीघ्र ही स्वीकार करना पड़ेगा ।

—मुतनब्बी ।

जब किसी विवेकीने संसारकी परीक्षा की, तो उसे ज्ञात हुआ कि संसारमें मित्रके रूपमें कैसे कैसे शत्रु हैं ।

—अबूनिवास ।

मनुष्यको मृत्युके पश्चात् उसी मकानमें निवास करना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है ।

—हजरत अली ।

संसारमें दो वस्तुएँ बहुत ही कम पाई जाती हैं। एक तो शुद्ध कमाईका धन और दूसरे सत्य-शिक्षक मित्र ।

—अबुल अताहिया ।

कालचक्रकी बदौलत आनन्द तो कभी ही कभी मिला करता है, पर उसकी आपदाएँ प्रायः सदैव बनी रहती हैं ।

—इब्न गर्दन्दी ।

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण-मात्र है, तो मैं क्या उसको ईश्वरकी स्तुति, प्रार्थना और उपासनामें न लगाऊँ ?

—सुलैमान दाजी ।

मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं रही जो एक पैसेमें भी बेची जा सके और मेरी शकल मेरी हालतको दर्शा रही है ।

—इब्न अरूम ।

प्रकीर्ण ।

कभी कभी पुरुषार्थहीन घरमें खाली बैठकर आनन्द उड़ानेवाले पुरुषको भी वृत्ति मिल जाती है, चाहे उसने अपनी ऊँटनी पर कभी पालान और नमदा भी न कसा हो।

कभी वह मनुष्य भी धनसे वञ्चित रहता है जो अपनी ऊँटनी पर पालान कसे हुए सदैव यात्रामें ही रहा करता है।

पीठ-लगा गदहा जबतक पीटा नहीं जाता, अच्छी तरह काम नहीं देता। इसी प्रकार प्रभुता न चाहनेवाला अधम उस समय तक कुछ नहीं देता, जबतक कि डराया नहीं जाता।

—हुक्म-बिन-अब्दुल अमरी।

अरबी काव्य-दर्शन।

५—प्रकीर्ण।

मेरी आदत।

मेरी जातिके लोग मेरे ऋण लेने पर रुष्ट होते हैं, यद्यपि मेरा ऋण निस्सन्देह ऐसे कार्य्योंके लिये होता है जिनसे यश फैलता है।

मैं उधारके जरियेसे अपने उन स्वत्वोंकी सीमाओंको बाँधता हूं जिनको उन्होंने बिगाड़कर नष्ट कर दिया है और अब बनानेकी शक्ति नहीं रखते।

मेरा उधार अच्छे घोड़के निमित्त है जिसको मैंने घरका परदा बना रखा है और जिसके लिये नौकर भी रख छोड़ा है।

मेरे और मेरे सगे तथा चचेरे भाइयोंके बीचमें जो अन्तर है, वह निस्सन्देह बहुत बड़ा है।

मेरे भाई यदि मुझे हानि पहुँचाते हैं तो मैं उनको लाभ पहुँचाता हूँ। और चाहे वे मेरी प्रतिष्ठाको भङ्ग करें, तथापि मैं उनका मान करता हूँ।

वे पीठ-पीछे मेरी बुराई करें, परन्तु मैं उनकी बुराई नहीं करता। और यद्यपि वे मेरी दुर्गतिके अभिलाषी हों, तथापि मैं उनकी सुगतिकी ही लालसा रखता हूँ।

मैं पूर्व वैमनस्यको मनमें नहीं लाता; क्योंकि जातिका नेता वह मनुष्य नहीं हुआ करता जो मनमें कपट रखनेवाला हो।

जब कि मुझ पर लक्ष्मीकी कृपा रहती है, तब मेरी सारी सम्पत्ति उनके लिये होती है। और जब मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ, तो उनकी करुणाका पात्र नहीं बना करता।

अतिथि जबतक मेरे गृहमें निवास करता है, तबतक मैं निस्सन्देह उसका दास हूँ। इसके अतिरिक्त किसी अन्य अवसर पर मेरी टेक दासत्वकी नहीं है।

—अल–मुकन्नआ–उल-किन्दी

सद्व्यवहारकी स्थितिका ही नाम जाति है। अर्थात् जब तक कि किसी जातिमें सद्व्यवहार पाया जाता है, वह जाति क़ायम रहती है। और जब उससे सद्व्यवहार चला जाता है, तो वह जाति भी नष्ट हो जाया करती है।

—एक कवि।

बिच्छूका स्वभाव ।

मैंने एक बिच्छूको देखा कि वह एक सख्त पत्थर पर अपनी प्रकृतिके अनुसार डंक मार रहा था ।

मैंने उससे कहा:—"यह तो सख्त पत्थर है; और तेरा स्वाभाव तो इसके मुक़ाबिलेमें बहुत ज्यादा नर्म है ।"

मेरी बात सुनकर, बिच्छूने कहा:—"तुमने सच कहा । किन्तु मैं तो इस सख्त पत्थरको जता रहा हूँ कि मैं कौन हूँ ।" *

—एक कवि

देश-सेवा ।

"जो मनुष्य पवित्र जीवन व्यतीत करेगा, वास्तवमें वही देशकी सेवा करेगा । और नाना प्रकारकी आपदाओंको झेलते हुए भी देशका भार बँटावेगा ।"

यदि वह मनुष्य बालक हो, तो भी अपनी ओरसे सर-तोड़ कोशिश करेगा, यहाँ तक कि बड़े बड़े लोगोंकी दृष्टिमें भी बहुत सम्मानित होगा ।

---

* फारसीके भी एक विद्वान्का कथन ऐसा ही है:—"बिच्छू किसीको वैर-भावसे डंक नहीं मारता; बल्कि उसका स्वभाव ही ऐसा करनेका होता है ।"

अनुवादक ।

वह अपने बाद सुगन्धित लकड़ीकी शुद्ध सुगन्धके समान अपनी शुद्ध कीर्ति छोड़ जायगा। उसके बाद उसकी पवित्र कीर्तिसे बंसीकी ध्वनिके समान यह बात गूँजा करेगी:—

"जो मनुष्य पवित्र जीवन व्यतीत करेगा, वास्तवमें वही देशकी सेवा करेगा। और नानाप्रकारकी आपदाओंको झेलते हुए भी देशका भार बँटावेगा।"

यदि वह मनुष्य युवक हो और बेंतकी डालीके तुल्य हो, तो भी उच्च पदकी प्राप्तिके निमित्त पवित्र उद्योगसे काम लेगा।

वह उच्च पदकी प्राप्तिके मार्गमें प्रत्येक बुराईसे हाथ रोके रखेगा, और ऐसे स्थानपर पहुँचेगा जहाँ यह गाया जा रहा होगा:—

"जो मनुष्य पवित्र जीवन व्यतीत करेगा, वास्तवमें वही देशकी सेवा करेगा। और नाना प्रकारकी आपदाओंको झेलते हुए भी देशका भार बँटावेगा।"

—जमील ज़ाहिर।

जब कि कड़ी भूख और अनुराग दोनों इकट्ठे हो जाते हैं और किसी दरिद्र पर टूट पड़ते हैं, तो वह मृतप्राय हो जाता है।

—एक कवि।

मेरा हाल ।

जब मैं धनवान् हो जाता हूँ तब निस्सन्देह फूल नहीं जाया करता। उस समय जो कोई मुझसे उधार माँगता है, मैं उसको अपनी शक्तिके अनुसार उधार देता हूँ।

कभी कभी मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ। यहाँ तक कि मेरी हीनता बहुत बढ़ जाती है। परन्तु अपनी मर्य्यादाको स्थिर रखते ही मैं फिर अमीर हो जाता हूँ।

मेरी हीनता इतनी जल्दी आती और चली भी जाती है, कि उस समय मेरा कोई अभिन्नहृदय मित्र उधार अथवा उचित स्वत्व सहित सहायतार्थ नहीं पहुँचा सकता।

एक मात्र मेरा धनी हो जाना निदान ईश्वरकी कृपा है और ऊँटोंके सीनोंको तङ्गोंसे कसकर यात्रा करनेके कारण है।

प्रत्येक पुण्यात्माके हृदय (कालके दिनोंमें) जब संकुचित हो जाते हैं, उस समय भी मैं शुद्ध भाव रखकर ही दान दिया करता हूँ।

मैं अपने चचेरे भाईको उस समय महान् संकटसे मुक्त कर देता हूँ जब कि वह ऐसा गिर पड़ता है, जैसे ऊँट फिस-लावसे गिर पड़ता है।

मै उसको धन देता हूँ, उससे प्रेम रखता हूँ और उसको सहायता देता हूँ, चाहे वह अपने मनमें मेरे लिये छलही क्यों न रखता हो।

मैं चाहता तो उसको ऐसे कठोर वचन कह सकता था जो उसकी हड्डी तकको काट सकते थे। परन्तु उसको मेरी शान्ति ढँक लेती है।

जब कोई मामला आ पड़ता है तो मैं अपने मनको आदेश देता हूँ। परन्तु संसारमें ऐसे भी मनुष्य हैं जिनपर उनके मनका आदेश हुआ करता है; और वे अपने मनपर आदेश नहीं किया करते।

जिसको मैं भली भाँति परख लेता हूँ, उससे मुँहदेखी बात नहीं करता और न किसी हालतमें ही कंजूसी करता हूँ।

मैं उदारचित्त और शीलवान हूँ; और कालकी रातोंका चक्र अपने हर फेरसे मेरी प्रकृतिको नहीं बदलता।

मैं संकटमय आपदाओंको अपने संबंधियोंसे रोकता हूँ और उनके कष्टोंका निवारक हूँ। परन्तु जो कोई मुझसे मुँह फेर लेता है, मैं भी उससे मुँह मोड़ लेता हूँ।

मैं अपने समस्त विचारोंको, दृढ़ताके साथ, उन लोगोंके निमित्त पूरा करता हूँ, जो उन विचारोंके सुपात्र होते हैं। पर अन्य लोगोंका हाल यह है कि उनके थोड़े विचार भी पूर्ण नहीं होते।

—इब्न-अब्दुल-इले-असदी।

काल-चक्रने मेरे हृदय और तनमें कुछ भी नहीं छोड़ा जिसको कि किसी सुन्दरीकी आँख अपना दास बना ले।

—मुतनब्बी।

कुछ खरी खरी बातें।

जिस मनुष्यको ईश्वर लक्ष्मी दे, पर वह सांसारिक यशकी प्राप्ति तथा परलोकके निमित्त कुछ भी खर्च न करे, तो निस्सन्देह वह बड़ा अधम है।

भाग्यसे ही प्रत्येक दूरकी वस्तु निकट हो जाती है और बन्द कपाट खुल जाता है।

ईश्वरकी सृष्टिमें सबसे अधिक दुःखी पुरुष वह है जिसका साहस तो बढ़ा-चढ़ा हो, पर पल्ले फूटी कौड़ी भी न हो।*

ईश्वरकी सत्ता और उसके अटल सिद्धान्तोंके हेतु जो युक्तियाँ हैं, उनमेंसे एक युक्ति यह भी है कि विद्वान् तो दुःखी अवस्थामें है और एक मूढ़ खूब मजे उड़ा रहा है।

जब तुम सुनो कि किसी श्रीपतिके हाथमें टहनी फूटी और उसमें पत्ते निकले, तो तुम उसका अनुमोदन कर दो।

जब यह सुनो कि कोई दुखिया पानी पीनेके लिये किसी घाट पर आया तो पानी ही सूख गया, तो ऐसी बातको भी सच ही कहो।

—अबू–मुहम्मद–इब्न–रशीक़ः।

---

* दरिद्रो महामनाः......विबुधैर्मूढ़ उच्यते॥ (विदुर)
अर्थ—बड़े दिलवाला किन्तु दरिद्र मूढ़ कहलाता है।

एक अनोखा ख़याल ।

[बग़दादके मुसलमानी राज्यकालमें यहिया नामका एक प्रतापी प्रधान सचिव हुआ था। उसीके मुहम्मद नामक पुत्र-के मरने पर एक कविने शोकपूर्ण पदोंमे एक ऐसा अनोखा ख़याल बाँधा है, जिसको सराहे बिना कोई सहृदय मनुष्य नहीं रह सकता।

—अनुवादक।]

मैंने दान और पुण्यसे पूछा कि तुम्हें क्या हो गया जो तुमने चिरस्थायी यशके बदलेमें आमिट तिरस्कार ग्रहण कर लिया है ? और मान-मर्य्यादाका स्तम्भ क्यों ढह गया है ?

उन्होंने उत्तर दिया कि हम पर यहियाके पुत्र मुहम्मदका दुःख पड़ा है।

इस पर मैंने कहा कि तुम लोग प्रत्येक स्थानमें उसके दास थे। तुम्हारे लिये तो उचित यह था कि तुम उसके मरने-से पहले ही मर जाते।

उन्होंने कहा कि उसका शोक मनानेके निमित्त केवल आज ही एक दिन हम ठहर गये हैं। कल हम भी चले (मर) जायँगे।

एक कवि।

मैंने अपनी मर्यादाको बिकनेसे बचा रखा है; और उसका खरीदनेवाला तो कोई है ही नहीं।

—आमूब-इब्न अयूम।

आदर्श भाव।

जो मनुष्य अपने कामोंमें ईश्वरके अतिरिक्त किसी और-को अपना परम सहायक समझता है, उसे नाना प्रकारके उद्योग करने पर भी दुःख ही दुःख भोगना पड़ता है।

किसी कार्यमें यदि तू उसके किसी अन्य मार्गसे प्रविष्ट होगा तो तू भूल भटक जायगा; और यदि दरवाजेकी ही राहसे आवेगा तो सीधे मार्ग पर रहेगा। *

शत्रुकी हालत और उसके छलको तुच्छ न जान; क्योंकि अनेक बार लोमड़ीने सिंहोंको पछाड़ दिया है। †

जिस मनुष्यने उच्च पद प्राप्त किया है, उसके हृदय पर द्रोहका बोझ नहीं हुआ करता। और जिसके स्वभावमें क्रोध हो, वह उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकता।

निषिद्ध वस्तुको ग्रहण मत कर; क्योंकि उसकी मिठास जाती रहेगी और उसकी कडुवाहट बाकी रह जायगी।

गदहा रेशमी वस्त्र भी पहन ले तो भी लोग उसे गदहा ही कहेंगे।

आकाशमें अनगिनत तारे हैं; किन्तु ग्रहण केवल सूर्य्य

---

* मार्गारब्धाः सर्वकार्याः फलन्ति। माम।

अर्थ—मार्गसे आरंभ किये कार्य फल लाते हैं।

† शत्रुं स्वल्पं विपन्नं वानह्युपेक्षेत कर्हिचित्।

अर्थ—छोटे अथवा विपन्न शत्रुकी भी कभी उपेक्षा न करे।

और चन्द्रको ही लगा करता है। (अर्थात् विपत्तियाँ केवल बड़े बड़े मनुष्यों पर ही आया करती हैं।)*

जब कि आयुकी सीमा अन्तमें मृत्यु है तब आयुका अधिक तथा न्यून होना बराबरसा ही है।

जब कि ईश्वर किसी मनुष्यकी सहायता करनेके लिये ठान लेता है, तो उसके शत्रु भी उसके सहायक बन जाते हैं।

लोग दिखलानेके लिये मेरी आव-भगत करते हैं; किन्तु यदि वे मुझपर एकान्तमें अधिकार जमा सकें तो मुझे उसी समय मार डालें।

वास्तवमें साधुता उस युवकमें जो है अपनी इच्छाओंसे उस कालमें दूर रहे जब कि वह उन पर अपना अधिकार रखता हो। †

यदि तूने किसीके साथ भलाई की है तो उससे भलाईकी आशा रख; और यदि तूने कोई बुराई नहीं की तो किसीकी बुराईसे न डर।

—दीवानुलअरबसे अनुवादित।

---

* संपदो महतामेव महतामेव चापदः।
वर्धते क्षीयतेचन्द्रो नतु तारागणः क्वचित्॥
अर्थ—बड़ोंको ही संपत्ति और बड़ोंकोही विपत्ति आती है। चन्द्र ही घटता बढ़ता है, न कि तारा समूह।

† (क) गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अर्थ—घरमें रहकर इन्द्रियदमन करना तप है।
(ख) निवृत्त रागस्य गृहं तपोवनम्।
अर्थ—जिसका राग दूर हो गया है उसके लिये घर भी तपोवन है।

व्यायाम पर वार्तालाप ।*

खलीलका कथन अनीससे ।

अनीस ! तुम हमसे क्यों कतराते हो और खेलाड़ियोंके साथ खेलमें क्यों नहीं सम्मिलित होते ?

क्या तुम नहीं देखते कि मित्र एक दूसरेको खेलनेके लिये पुकार रहे हैं, और कैसे प्रसन्न चित्त हैं ? वे इस प्रकार हाथ फैलाते और सिकोड़ते हैं कि दर्शक लोग उनको देखकर मुग्ध हो जाते हैं ।

हिरनीके समान उनमें मुड़नेकी शक्ति है, पर जब वे बाड़ों को फाँदते हैं तो सिंह होते हैं ।

जब वे सीधे खड़े हो जाते हैं तब स्तम्भके समान प्रतीत होते हैं। पर लचकनेके अवसर पर कोमल डालियोंकी नाईंही हैं।

अनीसका उत्तर ।

हे खलील ! चलो, दूर हटो ! मेरे पाससे जाओ । निस्सन्देह तुम लोग बड़े शठ हो ।

घोड़ा कुदाने और कूद-फाँद करनेसे क्या लाभ ? और भला लकड़ीके खेल और गेंद खेलनेसे लाभ ही क्या ?

---

* इस व्यायामके विषयका कथन परस्पर वार्तालापकी शैली पर है। खलील और अनीस इस वार्तालापके नायकोंके कल्पित नाम हैं ।

—अनुवादक ।

ओ शरीर दास ! कहीं विद्वान् मनुष्य अपने अमूल्य समयको खेल-कूदमें लगाता है ? खेल-कूद तो बच्चोंके लिये छोड़ दो। बस उठो और किसी काम-काजमें लग जाओ ।

खलील ।

अरे अनीस ! तुम्हारी बात तो निस्सन्देह ऐसी है कि उससे सुननेवाले धोखेमें पड़ सकते हैं। परन्तु हमपर हमारे शरीरका प्रभुत्व है ।

सो यदि हम उसको पुष्ट करेंगे तो वस्तुतः वह हमारा सहायक बनेगा ।

क्या उस निर्बलसे कुछ भलाईकी आशा की जा सकती है, जिसका हृदय सदैव खिन्न और अप्रसन्न रहता है ?

वास्तवमें लोगोंका यह कहना सच है कि शरीरकी स्वस्थताके बिना मनुष्यकी बुद्धि भी ठीक नहीं रहती ।

तुम अब अपने और मेरे शरीरकी ओर देखो, तो तुम्हें ठीक ठीक पता चल जायगा और सच या झूठका निर्णय हो जायगा ।

तुम विद्या और विवेकमें भी मुझसे आगे न बढ़ सकोगे: और अच्छी तरहसे जान लोगे कि तुम नहीं, बल्कि मैं ही श्रेष्ठ हूँ ।

अनीस ।

तुम्हारी कृपाके लिये मैं धन्यवाद देता हूँ। और ऐ खलील, ईश्वर करे कि तुम सदैव सुरक्षित और प्रसन्नताके साथ जीवित रहो ।

तुमने तो मुझे सन्तुष्ट कर दिया और अब मेरी छाती गज भरकी हो गई। सो अब तुम कल ही मुझको खेलाड़ियोंके साथ पाओगे।

—अहमद मुहम्मद उजूषी।

कुशल सहनशील।

हे मेरे मित्रो, याद रक्खो कि कोई आपत्ति चाहे कितनी ही भीषण क्यों न हो, पर ईश्वरकी सौगन्द कि सदैव किसी जीव पर नहीं रहेगी। *

सो यदि किसी दिन तुम पर कोई आपत्ति आ जाय तो उससे व्याकुल न हो जाओ; और यदि तुम्हारी कुछ हानि हो जाय तो सबसे शिकायत न करते फिरो।

निस्संदेह बहुतसे ऐसे कुलीन हैं कि उनपर आपदाएँ आई तो वे धैर्य्य धारण किये रहे; यहाँ तक कि वे सब आपदाएँ मुँह सिकोड़े हुए स्वयं चली गई।

कुछ ऐसी भी घोर विपत्तियाँ पड़ीं जो अथाह जलके समान लहरें मारनेवाली थीं। पर धैर्य्यके साथ ही मैंने उनका भी स्वागत किया। यहाँ तक कि वे लुप्त हो गई।

कालके चक्रोंके निमित्त मेरी आत्मा तो सदैवसे बड़ी हेकड़ है; परन्तु जब उसने देखा कि मैं आपत्तिके अवसर पर धैर्य्य धारण कर लेता हूँ, तब उसने भी धैर्य्य धारण कर लिया।

---

* नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। मेघदूत।
अर्थ-चक्रके धुरेकी भाँति दशा ऊपर नीचे होती रहती है।

यह देखकर मैंने अपनी आत्मासे कहा कि तू एक प्रतिष्ठित पुरुषके समान जान दे दे। और सच तो यह है कि दुनियाँ कभी हमारी थी, पर उसने अब हमसे मुँह मोड़ लिया है।

—एक कवि।

प्रभुताका मार्तण्ड।

मेरे गुणोंसे तो तू अनभिज्ञ नहीं है, और वास्तवमें उन्हींके कारण लोग मुझसे जलते हैं। परन्तु लोगोंके जलने-भुननेपर भी मैं सदैव उन्नतिके शिखर पर चढ़ता रहता हूँ।

मुझ पर जो विपत्तियाँ आती हैं, वे मेरे गौरवको यथेष्ट रूपसे बढ़ा ही दिया करती हैं।

हे मेरे मित्र! जब कि तू मुझसे पृथक् हो जायगा, तो वास्तवमें तू ऐसे शक्तिशाली पुरुषसे नाता तोड़ बैठेगा, जिसकी फुरतियाँ उसके सहयोगियोंके हृदयोंको कँपा देती हैं।

जब कि अन्य लोग छिप जाते हैं, उस समयमें भी तू मुझे सूर्यके समान पावेगा, जो कभी किसी स्थानमें छिपा नहीं करता।

—अबस-बिन-मुहम्मद अनसारी।

मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं रही जो कि एक पैसेमें भी बेची जा सके। और मेरी शकल मेरी हालतको दर्शा रही है।

—इब्न मयूस।

ऊँटनी।

मेरी ऊँटनी जङ्गली गदहेके समान बड़ी मजबूत और चतुर है। मैंने उस पर ऐसी कड़ी दुपहरमें सफर किया है, जिसकी लपट नीलगायोंको भी भून देती हैं।

उसकी दोनों कोखें एक दूसरीसे दूर और चौड़ी हैं। वह हजरमूत देशके ऊँटोंके वंशसे है। उसके जोड़ गठीले हैं और वह यमन-देशीय महरी गोत्रकी है।

मैंने उसको हाँका तो ऐसी चली मानो उड़ती थी। वह मोटी ताजी है और यदि समस्त ऊँटोंके घरानोंका पता लगाया जाय तो उसका घराना सर्वश्रेष्ठ निकलेगा।

मैंने इसको उच्च कुलके ऊँट और ऊँटनीसे पाया। फिर जब इसके खरीदनेका विचार किया, तो इसके मालिकको दामका अधिकार दे दिया। यहाँ तक कि उसीके माँगनेके अनुसार दाम देकर इसका मालिक हो गया।

—वईस–उल–इनफी।

घोड़ा।

मैं प्रातःकाल उस समय यात्रा करता हूँ, जब कि आकाश-मण्डलमें लाली छाई होती है और रात्रिके अन्त तथा भोरके प्रारंभका समय होता है।

मेरे जानेके समय तारे अङ्गारोंके समान होते हैं और मैं ऐसे घोड़े पर जाता हूँ, जो स्वयमेव बहुत तेज जाता है। यहाँ तक कि उसकी गर्दन तथा माथेके बाल कभी इधर और कभी उधर हो जाया करते हैं।

यह घोड़ा उस घोड़-दौड़में प्रथम रहा था, जिसमें समस्त दर्शक एकत्र थे; और यह फिर उस समय एक बाजके समान वर्षाकी बून्दोंको झाड़ता था।

यह उस अच्छे शिकारी बाजके समान है जो दूरसे ही शिकार पर चोट करता है और जिसके छोटे परोंसे समीपके पक्षी भयभीत रहते हैं।

जिसके भयसे पक्षी वृक्षोंकी डालियोंमें शरण लेते हैं, जो शिकारको दूरसे ही देख लेता है और जब उसके निकट आ जाता है, तो शिकार उसके पंजेसे निकल नहीं सकता।

जो कि ऐसा अच्छा शिकारी बाज है कि शिकारके निकट पहुँचनेसे ही, शिकारको ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह उस पर टूट पड़ा।

उसकी आँखें बड़ी ताड़नेवाली हैं; और ऐसा मालूम होता है कि मानों एक पत्थरके दोनों किनारोंमें रक्खी हुई हैं। यहाँ तक कि सूईसे कभी सी भी नहीं गई। *

—हुमयद-उल-अरक़त।

काल-चक्रकी बदौलत आनन्द तो कभी कभी ही मिला करता है, पर उसकी आपदाएँ प्रायः सदैव बनी रहती हैं।

—इब्न राविन्दी।

* ध्यान रहे कि जब कोई बड़ा बाज पकड़ा जाता है, तो उसकी आँखें पहले सी दी जाती हैं जिसमें वह पालतू हो जाय। परन्तु कविने अपने घोड़ेकी तुलना ऐसे बाजके साथ की है, जो स्वेच्छानुसार विचरकर शिकार करनेवाला है और न कभी पकड़ा गया है और न उसकी आँखें ही सी गई हैं।

अनुवादक।

मेघ ।

मैं रात्रिको जाग रहा था कि वह रात ऐसे विद्युन्मय मेघके कारण लम्बी प्रतीत होने लगी, जो कि बहुत गाढ़ा था और एक भूमिसे दूसरी भूमिकी ओर जा रहा था ।

रात्रिके पहले भागमें मेघ मतवालोंके समान छोटे छोटे भागोंमें विभक्त था । और उसका एक टुकड़ा ही अकालसे पीड़ित भूमिके लिये ऐसा पर्याप्त था, कि वैसा दूसरा कोई पूरा मेघ भी काफी नहीं था ।

झुण्डके झुण्ड बादल जङ्गलोंमें ऐसे गरज रहे हैं, मानों बड़ी बड़ी ऊँटनियाँ एक दूसरेको देखकर बड़बड़ा रही हैं ।

इस गाढ़े और श्वेत मेघके ऊँचे ऊँचे किनारे क्या हैं, मानों लबनान पहाड़की ऊँची ऊँची लम्बी-चौड़ी चोटियाँ हैं ।

वह जलमय मेघ अपने चलते-फिरते टुकड़ोंकी सहायतासे उन अति प्रचण्ड वायुओंका सामना करता है जो हजरमूतकी ओरसे आती हैं ।

यह मेघ अपने पीछे शुद्ध और स्वच्छ जल छोड़ जाता है। और यदि संसारमें पवित्र जल होता है तो इसीका होता है ।

यह मेघ ऊँचे स्थानके अरफ़ज वृक्ष, तथा खारी और तीखी घासोंकी जड़ोंके उन सुतरोंमें जीवन डाल देता है, जो कि पुराने हो जानेके कारण सूखकर मर गये थे ।

यह गाढ़ा श्वेत मेघ बहुत जलसे भरा होनेके कारण शनैः शनैः उस ऊँटके समान चलता रहा जो कि बूढ़ा और दुर्बल

हो। साथही साथ जिसकी नकेलकी डोर भी तङ्ग हो और वह ऐसी भूमिपर आगे बढ़ता हो जिसमें पैर धँसते हों ।

—मिलइत-उल-जिरमी ।

एक अभ्यागत-सेवी कुटुम्ब । *

जाड़के दिनोंमें मैं मुहल्लबके परिवारका अतिथि था। वे दिन अकालके थे और मैं विदेशमें एक यात्री था ।

इन्होंने निरन्तर मेरा सत्कार किया था, बराबर मेरा हाल पूछा था और सदैव मुझ पर करुणा रखी थी । यहाँ तक कि उनको मैंने अपना परिवार ही समझ लिया था ।

—एक कवि ।

भाईका दुखड़ा ।

ऐ मेरी आँख ! प्रत्येक दिन जब कि भोर हो, उस समय भाई जरीह पर चार आँसू बहाया कर ।

निस्सन्देह मेरा भाई मेरे लिये एक पहाड़के समान था जिसकी छायामें मैं शरण लेती थी । परन्तु मर जानेके बाद तू (मेरा भाई) मुझे ऐसे चटियल मैदानमें छोड़ गया है, जिसमें कहीं छया नहीं; और मैं अब धूपमें पड़ी हूँ ।

* प्राचीन अरबमें अतिथि-सेवाकी बड़ी प्रथा थी । विशेषतः अकालके समय जो कोई आगंतुकोंको खान-पानादिसे सुख पहुँचाता था, वह असीम आदरणीय, तथा महत्वपूर्ण प्रशंसाका भागी होता था । और जो कोई अभ्यागतोंकी सेवामें किसी प्रकारकी कसर रखता था वह अति निन्दनीय माना जाता था ।

—अनुवादक ।

जब तू जीवित था तब मैं साहसवाली थी, निडर होकर मैदानमें फिरा करती थी और तू मेरा बाहुबल था।

आज मैं एक तुच्छके सन्मुख भी हीन हूँ और उससे डरती हूँ; और यदि कोई मुझ पर अत्याचार करता है, तो मैं (निःशस्त्र होनेके कारण) उसको अब अपने हाथोंसे रोकती हूँ।

मुझको अब मजबूर होकर अपनी आँख बन्द कर लेनी पड़ती है; क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरे सवारों और नेज़ोंकी तेजी तेरी मृत्युके कारण जाती रही है।

जब कि कुमरी (चिड़िया) दिनमें, वृक्षकी किसी डाली पर बैठकर 'वाशजनाहो' कहती है, मैं उस समयमें 'वासबाहो':—ऐ मेरी सुबह मुझ पर दया कर—कहती हूँ *

—फातिमा–बिन्त–अल–अजहम (स्त्री)।

पुत्र और बधूसे दुःखी स्त्री।

मैंने अपने पुत्रका पालन पोषण उस समय किया जब कि वह पक्षीके एक ऐसे नन्हे बच्चेके समान था, जिसके शरीर पर छोटे ही छोटे बाल होते हैं और जिसके शरीरका सबसे बड़ा अङ्ग पेट ही होता है।

अब वह खजूरके एक ऐसे मजबूत वृक्षके सदृश हो गया है जिसकी टहनियोंको छाँट दिया गया हो और जिस-

* प्राचीन अरबमें प्रातः और सायंकालके समय नये मृतकों पर शोक मनानेका दस्तूर था। और प्रातः काल ही प्रायः लूट मार होती थी। इसलिये सुबहका कुशल पूर्वक बीतना बहुत अच्छा समझा जाता था। अनुवादक।

के तनेसे मोटी मोटी डालियोंको काट दिया गया हो। परन्तु इतना बड़ा होकर अब उसने मुझे मारना शुरू किया और मुझे शिक्षा देना आरंभ किया। परन्तु बुढ़ापेके बाद मैं सभ्यता सीखूँ, यह आशा उसको न रखनी चाहिए।

अब जब मैं उसके बनाव-शृङ्गारको देखती हूँ तो बड़ा आश्चर्य होता है। यहाँ तक कि उसकी डाढ़ीके बालोंसे भी बड़ी विचित्रता टपकती है।

एक दिन उसकी बहूने मुझको सुनाते हुए उससे कहा कि दुष्कर्मोंको छोड़ दे; क्योंकि माताके साथ समझ बूझकर व्यवहार करना चाहिए।

उसकी बहूने तो मुझे सुनाकर ऐसा कहा; किन्तु उसका वास्तविक हाल यह है कि यदि वह मुझे जलती हुई अग्निमें पड़ी देखे, तो निकालनेके बदले उलटे आगमें कुछ लकड़ियाँ और डाल दे।

—अज्ञात वंशकी एक स्त्री।

विदेशमें पुत्रका मारा जाना।

लूट-मार करके धनोपार्जनकी इच्छासे तू रात्रिके समय गया। परन्तु उलटा तू ही मृत्युके घाट उतार गया।

मैं नहीं जानती कि किसने तुझे मार डाला। ईश्वर करे कि मुझे तेरे घातकका पता लग जाय।

यदि तू मारा नहीं गया, तो फिर क्या तू बीमार है जो घर लौटकर नहीं आया? अथवा तू शत्रुओंके चंगुलमें फँसा हुआ है?

क्या ऐसा तो नहीं हुआ कि तुझे उन विपत्तियोंने मृत्युका मुँह दिखाया हो, जिन्होंने कि चकोरके बच्चोंका क्षय कर दिया है ?

मनुष्य चाहे जहाँ जाय, मृत्यु उसकी घातमें वहीं लगी रहती है।

कौन सा अच्छा गुण है जो तुझमें न था और अन्य किसीमें था (अर्थात् तू सकल गुण-संपन्न था) ?

हे लोगो ! जब कि मृत्युका समय आ जायगा, उस समय प्रत्येक वस्तु तुम्हारी घातक बन जायगी।

बिना किसी कष्टके अनेक बार तू अपने उद्योगमें सफलीभूत रहा।

निस्सन्देह किसी आपदाने ही तुझको इस बातसे रोका है, कि तू मुझे उत्तर दे। अब मैं धैर्य्य धारण करूँगी, क्योंकि तू अपने पूछनेवालेको उत्तर ही नहीं देता।

ईश्वर करे कि मेरा हृदय तेरी ओरसे एक क्षणके लिये धैर्य्य धरे।

क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरे बदलेमें मृत्यु की भेंट होती।

—एक स्त्री।

एक बादशाहकी माताका परलोकगमन। *

हम शत्रुओंको मारनेके लिये उत्तम उत्तम तलवारें और बड़े बड़े भाले तैय्यार करते हैं। परन्तु मृत्यु बिना लड़े ही हमारा सफ़ाया कर देती है।

---

* सैफ़-उद्-दौलः नामी, शाम (Syria)के बादशाहकी माताकी मृत्यु पर ये शोकपूर्ण पद्य कहे गये थे। —अनुवादक।

हम अच्छे अच्छे तेज घोड़ोंके स्वामी होते हैं। फिर भी वे हमको कालचक्रके धावोंसे मुक्त नहीं करते ।

कौन है जो संसार पर सदैवसे मोहित नहीं ? परंतु संसारमें सर्वदा रहनेके लिये कोई मार्ग ही नहीं ।

मित्रसे मिलना-जुलना तेरे भागमें ऐसा ही है जैसे कि सुषुप्तिकी अवस्थामें तेरे विचारकी दशा होती है ।

कालने मुझ पर आपदाओंके इतने बाण फेंके कि मेरा हृदय तीरोंके परदेमें हो गया ।

सो जब मुझ पर बहुतसे तीरोंकी बौछार हुई तो मैं ऐसा बिंध गया कि बाणोंके फलों पर फल टूटे ।

मुझ पर दुःख सुगम हो गये । अब मैं उनकी कुछ तितिक्षा नहीं करता; क्योंकि जिस पर सर्वदा आपत्तियाँ आती रहती हैं, उसके लिये कोई क्लेश दुस्तर नहीं हो सकता ।

जिसने बादशाहकी माताके परलोकगमनका समाचार दिया, उसने निस्सन्देह आज प्रथम बार (संसारमें) इतनी बड़ी कुलवतीकी मृत्युका समाचार दिया है ।

अब इस समाचारसे लोगोंकी हालत ऐसी हो गई है, मानो इससे पहले किसीको मृत्युने दुःख ही नहीं दिया था और न किसीके मनमें ऐसी आपत्तिकी स्फुरणा ही हुई थी ।

सुगन्धिके बदले, उस स्वर्गवासिनीके मुख पर ईश्वरकी कृपा सुशोभित है और सौन्दर्य्य उसपर लपटे हुए कफ़नके समान है ।

यह स्वर्गवासिनी क़बरमें ढँकनेसे पूर्व चतुराईसे ढँकी हुई थी और उच्च भावोंसे पूर्ण थी ।

पृथ्वीके नीचे एक ऐसी स्थिति है जो कि उसके नीचे पुरानी हो जायगी। परन्तु हमारी स्मृति उसके विषयमें सदैव नवीन ही रहेगी।

कोई मनुष्य संसारमें नित्य नहीं रहेगा, बल्कि सभी लोग क्षयको प्राप्त होंगे।

मेरी आत्मा इस बातसे सन्तुष्ट है कि तू ऐसी मौत मरी है जिसकी अभिलाषा समस्त जीवित स्त्रियाँ और पुरुष रखते हैं।

तू शुभ दिवस प्राप्त करके मरी है। और उनमेंसे कोई दिन भी ऐसा संकटमय नहीं हुआ कि जिसमें तूने जीवनके स्थानमें मृत्युको श्रेष्ठ न समझा हो।

मानका परदा तुझपर तना हुआ है, क्योंकि राज्य तेरे पुत्र अली (सैफ़-उद्-दौलः) के हाथमें उच्च अवस्थामें है।

तेरी क़बर पर (ईश्वर करे) प्रातःकालके समय बरसनेवाला मेघ ऐसा बरसे जैसा कि तेरा हाथ दानकी वर्षा किया करता था।

वह चारों ओर फैला हुआ मेघ मूसलाधार बरसे और भूमिको ऐसा उखाड़ डाले जैसे जैसे तोबड़ों (दानेवाले पात्रों) को देखकर घोड़े भूमिको उखाड़ देते हैं।

मैं तेरा हाल प्रत्येक प्रभुतासे पूछता हूँ, क्योंकि तेरे विषयमें मुझे यह पता है कि कोई प्रभुता तुझसे वञ्चित नहीं थी।

कोई भिखारी जब तेरी क़बरके समीपसे जाता है तो वह रो पड़ता है। यहाँ तक कि रोते रोते भिक्षा माँगना भूल जाता है।

तू अनेक प्रकारसे दान किया करती थी। क्या ही अच्छा होता कि इस समयमें भी तुझे दान करनेकी शक्ति होती।

मैं तुझे तेरे जीवनकी सौगंद देकर पूछता हूँ, कि क्या तू जीवन और उसकी बात भूल गई? और मैं यद्यपि तेरे निवास-स्थानसे दूर हूँ, तथापि तुझको नहीं भूलता।

तूने हमारी इच्छाके प्रतिकूल अब ऐसे स्थानमें जाकर निवास किया है जहाँ कि उत्तरी तथा दक्षिणी वायु पहुँचती ही नहीं।

अब खुज़ामा झाड़ियोंकी सुगंधि तेरे निकट नहीं पहुँचती और मेघकी फुहार (छोटी छोटी हलकी बूँदें) भी तेरे समीप जानेसे रुक गई है।

तू अब ऐसे स्थानमें है जिसका निवासी अपने गृहसे दूर होता है और सम्बन्धियोंसे नाता तोड़े हुए पृथक रहता है।

तू अदासी, मेघके जलके समान पवित्र थी; और अपने भेदोंको गुप्त रखनेवाली तथा बातकी सची थी।

तेरी बीमारीके दिनोंमें तेरी दवा एक बड़ा निपुण चिकित्सक करता था। परन्तु तेरा अद्वितीय पुत्र प्रभुताका बड़ा भारी चिकित्सक है।

जब कि किसी सीमाका रोग, तेरे पुत्रके संमुख लोग प्रकट करते हैं तो उसके लम्बे भालोंके फल उस सीमाको नीरोग करते हैं।

तू अन्य स्त्रियोंके समान नहीं थी। और न तू उन स्त्रियोंके समान थी जिनकी क़बरें उनके लिये परदेके समान समझी जायँ।

तेरी लाशके साथ व्यापारी लोग नहीं गये थे जो कि लौटनेके पश्चात् अपना अपना जूता साफ करते।

तेरी लाशके चारों ओर बड़े बड़े लोग नङ्गे पैर और पैदल थे। और छोटे छोटे कंकर-पत्थर उनके पैरोंके नीचे शुतुर-मुर्ग-(ऊँट-पक्षी) के बच्चोंके परोंके समान थे।

तेरी मृत्युके शोकसे परदेमें रहनेवाली स्त्रियोंको परदेने प्रकट कर दिया। और उन्होंने केवल काले वस्त्रको धारण नहीं किया बल्कि सुगंधित उबटनके स्थानमें मुखपर स्याही मल ली।

इन स्त्रियोंको जब आपत्ति-जनक समाचार मिला तो हँसी-खुशीके कारण, उनकी आँखोंमें जो नीर था वह आपत्तिके नीरमें परिवर्तित हो गया।

जैसी तू योग्य थी, यदि उसी प्रकार अन्य स्त्रियाँ भी होतीं तो निस्सन्देह स्त्रियोंको पुरुषोंसे श्रेष्ठ गिना जाता।

सूर्य्य (ज्योति-केंद्र) का वाचकशब्द (शम्स) स्त्री-लिङ्ग नाम है तो कुछ हर्ज नहीं। और चन्द्रमाके लिये पुलिङ्ग शब्द है, तो इससे चन्द्रमाके लिये कोई गौरव नहीं। *

जो लोग मर गये हैं उनमेंसे उसका मरना सबसे अधिक दुःखदायी है जो मरनेसे पूर्व अद्वितीय हो।

हममें से कुछ लोग, कुछ लोगोंका अन्त्येष्टि संस्कार करते हैं और पिछले लोग अगलोंको सिरों पर चलते हैं।

बहुत सी आँखें ऐसी हैं कि उनके किनारोंको चूमा जाता

---

* अरबी भाषामें सूर्य्य-वाचक शब्द स्त्री-लिङ्ग है और चन्द्रमावाचक पुलिङ्ग है। अनुवादक।

था। परन्तु उन आँखोंमें अब पत्थरों और रेतका सुरमा डाला गया है।

बहुतसे लोग ऐसे हैं, भारी आपत्तिके समय भी जिनकी आँख नहीं झपकती थी। परन्तु अब वे आँख मूँदे हुए हैं। और बहुतसे लोग ऐसे हैं कि वे दुबले होने पर चिन्तामें पड़ जाते थे, परन्तु अब विवश हैं।

ऐ सैफ़-उद्दौल: ! तू धैर्य्यसे सहायता ले; और यही तेरे लिये उचित है। क्योंकि पहाड़ भी तेरे समान धैर्य्य धरने-वाले नहीं हैं।

और तूही तो ऐसा है जो कि सब लोगोंको धैर्य्यकी शिक्षा देता है और घोर संग्राममें प्रविष्ट हो जाना सिखाता है।

कालकी दशाएँ सर्वदा बदलती रहती हैं। परन्तु तू सदैव एक ही दशामें रहता है।

हे बड़ी बड़ी लहरोंवाले दानके समुद्र ! ईश्वर करे, कि तेरे दानकी नदियोंमें दो दो बार पीनेसे भी कभी पानी कम न हो।

जिन बादशाहोंको मैं देखता हूँ, उनमें और तुझमें ऐसा अन्तर है, जैसा कि टेढ़ी और सीधी वस्तुमें हुआ करता है।

तू भी एक मनुष्य ही है, परन्तु अन्य लोगोंसे श्रेष्ठ हो गया है। जैसे कि कस्तूरी हिरनका ही लहू होती है, परन्तु अन्य लहूसे श्रेष्ठ होती है।

—मुतनब्बी।

सुभाषित संग्रह।

जिस समय कड़ी भूख और अनुराग दोनों इकट्ठे हो जाते हैं, उस समय मनुष्य नवयौवना सुन्दरीके मिलापको भूल जाता है (अर्थात् भूख ही प्रबल होती है)।

—एक कवि।

यदि विद्वान मनुष्यने लोगोंको साधारण रीतिसे परखा है, तो मैंने गूढ़ रूपसे परखा है। सो मैंने लोगोंके प्रेमको धोखा और उनके धर्म्मको फूट पाया है।

—एक कवि।

जब मेरे बुरे दिन आये, तो मैं धैर्य्य धारे रहा; यहाँ तक कि वे बुरे दिन बीत गये, और मैंने अपनी आत्माको धैर्य्य पर ही डटाये रखा, सो वह धैर्य्य पर ही सदैव डटा रहा।

—अबुल-हसन-मावर्दी।

मैंने बहुत सी ऐसी रातें काटी हैं, मानों सूर्य्य उनमें अपना मार्ग ही भूल गया था, और पूर्व उसके निकलनेका ठिकाना ही न था।

—ममकद।

मैं देखता हूँ कि लोग अपनी स्त्रियोंको मारते हैं, पर मेरा हाथ उसी समय टूट जाय जिस समय कि मैं अपनी स्त्रीको मारूँ।

—क़ाज़ी शुरैह।

जब कि तू किसी ऐसे स्थानमें पहुँचे, जहाँ कि सब काने ही काने हों, तो तू भी अपनी एक आँख मूँद ले।

—एक कवि।

संसारमें हमसे पहले जो लोग पैदा किये गये थे, यदि वे जीवित रहते तो हम पृथ्वी पर आने-जानेसे रोक दिये जाते ।

—मुतनब्बी ।

ऐ सुननेवाले ! क्या तुझे ज्ञात नहीं कि पृथ्वी चौड़ी-चकली है । फिर क्या कोई भाग मुझे रहने न देगा ?

—अयास-बिन-क़बीस ।

"जब किसी विवेकीने संसारकी परीक्षा की, तो उसे ज्ञात हुआ कि संसारमें मित्रके वस्त्रोंमें कैसे कैसे शत्रु हैं ।

—अबूनिवास ।

मनुष्यको मृत्युके पश्चात् उसी मकानमें निवास करना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है ।

—हजरत अली ।

"संसारमें दो वस्तुएँ बहुत ही कम पाई जाती हैं—एक तो शुद्ध कमाईका धन, दूसरे सत्य-शिक्षक मित्र ।

—अबुल उवायज ।

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण मात्र है, तो मैं क्यों उसको ईश्वरकी स्तुति, प्रार्थना और उपासनामें न लगाऊँ ?

—सुलैमान बाजी ।